श्रीः

त्रैमासिक

श्रीस्वाध्याय

[वसन्ताङ्क]

वर्ष
२
सं० २००१

संख्या
३
चैत्र

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
३)

इस अङ्क
का मूल्य
।।।=)

संस्थापक-
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक-
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का मुख्य उद्देश्य है।

सञ्चालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएंगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन ५) से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएंगे।

श्रीस्वाध्यायके नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य ३)रु० और एक प्रतिका ॥ऽ) है। स्थाई ग्राहक आश्विनसे ही बनाये जाते हैं। श्रीस्वाध्यायके स्थायी ग्राहकोंको हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें विना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रतिवर्ष अपने ग्राहकोंको बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' मासिक कर दिया जायगा।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय सदनकी ओरसे प्रार्थना पूर्वक मँगवाये जाएंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन [पंजाब] के पतेसे भेजने चाहियें।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्रीका व्यय लेखक को भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाईके नियम—

१ पृष्ठ या दो कालमकी छपाई	२०)	प्रति अङ्क
आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई	११)	"
चौथाई पृष्ठ या आधा " "	६)	"

पूरे वर्ष या चार अङ्कोंमें एक पृष्ठकी छपाई ६५) होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठका आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठसे अधिक विज्ञापन देने वालोंको 'श्रीस्वाध्याय' विना मूल्य भेजा जावेगा। छपाईकी रकम पेशगी प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्रमें छापा जावेगा।

विशेष जाननेके लिए—

व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन [शिमला] से पत्र व्यवहार करें।

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

{ त्रैमासिक-पत्र }

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E. सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

सहायक—

श्री १०५ मती माँजी महाराणी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।

श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावन वालीजी [भरतपुर]

श्रीमान् सरदार कुंवर रणदीपसिंहजी नाहन [सिरमौर]

श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी B.A., L-L. B. सेशन जज सोलन।

श्रीमान् कुंवर ईश्वरीसिंहजी उपप्रधान धर्मसभा उदयपुर [मेवाड़]

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों B. A., L-L· B. नाभा।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो०मा० ज्यो०र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

उप सम्पादक—

श्री पं० बलजिन्नाथ शास्त्री B.A.

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

विषय-सूची

लेखकोंसे—

इस अङ्ककी छपाईका कार्य जब हम माघ शुक्लमें शतमुख कोटिहोम महायज्ञ और धर्मसंघके महाधिवेशन पर दिल्ली गये थे तभीसे आरम्भ करवा दिया था और गताङ्ककी सूचनानुसार ठीक १० दिन पूर्व यह अङ्क हम प्रेमी पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कारण विलम्बसे आए हुए कई विद्वान् महानुभावोंके लेख इस अङ्कमें प्रकाशित न हो सके, इसका हमें खेद है। विद्वान् लेखक महानुभाव अपनी मौलिक रचना समय रहते शीघ्र भेज दिया करें तो उसका उपयोग हो सकता है। आगामी ग्रीष्माङ्कके लिए सब लेख ज्येष्ठ शु० १ ता० २३ मई तक कार्यालयमें पहुँच जाना चाहिये। लेख परिमार्जित भाषामें सारगर्भित मौलिक और संक्षिप्त रूपमें कागजके एक ओर ही संशोधनके लिए दोनों किनारों पर कुछ तट (हाशिया) छोड़ कर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। इस नियम के विरुद्ध जो लेख आवेंगे वे प्रकाशित न हो सकेंगे।

आगामी चतुर्थ वर्षके नववर्षाङ्क (विशेषाङ्क) की सूचना पृष्ठ ५३ पर देखिये।

सम्पादक "श्रीस्वाध्याय", सोलन (शिमला)।

आवश्यक सूचना

गताङ्कमें हमने सूचना दी थी कि भाद्रपद शु० १५ ता० १४ सितम्बरके अनन्तर भी जिन ग्राहकोंने अपना वार्षिक मूल्य २।-) ही भेजा है उन्हें चाहिए कि शेष ।।≡) वे शीघ्र भेज दें। तदनुसार कुछ ग्राहकोंने तो शेष मूल्य भेज दिया है परन्तु ऐसे सब ग्राहकोंका मूल्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, अतः उन्हें हम पुनः सूचित किये देते हैं कि आगामी 'ग्रीष्माङ्क' छपनेसे पूर्व यदि उनके शेष ।।≡) कार्यालयमें नहीं पहुँचेंगे तो उन्हें 'ग्रीष्माङ्क' नहीं भेजा जायेगा। यदि वे अपने इस शेष मूल्यके साथ ही आगामी चतुर्थवर्षका मूल्य ३) रु० मिला कर कुल ३।।≡) का मनीआर्डर करदें तो उनके मनीआर्डरखर्चमें =) की बचत हो सकती है और एक लाभ उन्हें यह भी हो सकता है कि आगामी चतुर्थवर्षका 'विशेषाङ्क' और वर्षभरके सब अङ्क उन्हें इसी मूल्य ३) रु० में मिल सकेंगे। अन्यथा सम्भव है कि समयकी परिस्थितिके कारण चतुर्थवर्षके आरम्भसे 'श्रीस्वाध्याय' के वार्षिक मूल्यमें भी कुछ वृद्धि हो जावे। परन्तु जो ग्राहक आगामी वर्षारम्भ (विजयादशमी) से पहले ही अपना वार्षिक मूल्य भेज देंगे उन्हें ३) रु० में ही चतुर्थवर्षके सब अङ्क मिलेंगे।

तृतीय वर्षके नववर्षाङ्क (विशेषाङ्क) की प्रतियाँ शीघ्र समाप्त हो जानेके कारण कार्तिकके अनन्तर कई पुराने और नये ग्राहकोंके पत्र आने पर उन्हें गताङ्क (हेमन्ताङ्क) २।) रु० की V.P.P. द्वारा भेजा गया था। यह मूल्य तीन अङ्कोंका ही लगाया गया था, अतः 'ग्रीष्माङ्क' के बाद उन्हें भी अपना चतुर्थवर्षका मूल्य भेजना होगा, यह स्मरण रक्खें।

अब इस अङ्कसे जो ग्राहक बनना चाहें वे सज्जन इस 'वसन्ताङ्क' और आषाढ़के ग्रीष्माङ्क (दोनों अङ्कों) का अर्धवार्षिक मूल्य १।।=) और आगामी चतुर्थ वर्षका मूल्य ३) रु० कुल ४।।=) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज कर इस अङ्कसे भी ग्राहक बन सकते हैं।

मनीआर्डर भेजते समय प्रत्येक पुराने ग्राहकको अपनी ग्राहक संख्या (जो श्रीस्वाध्यायके रेपर—पतेके कागज—पर लिखी रहती है) और नये ग्राहकोंको 'नया' शब्द कूपन पर अवश्य लिख देना चाहिये। साथ ही अपना पूरा पता भी स्पष्ट लिखना आवश्यक है। ऐसा न करनेसे मूल्य जमा करने और अङ्क भेजने में विलम्ब हो सकता है। बहुतसे ग्राहक कूपन पर अपना नाम पता कुछ नहीं लिखते और कई उर्दू के अत्यन्त अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखते हैं; ऐसे ग्राहकोंको जब तक उनका स्पष्ट पतेका दूसरा पत्र नहीं आवेगा तबतक कोई अङ्क न भेजा जा सकेगा। लिफाफेमें मूल्यके टिकट भेजना अनुचित है, ऐसे लिफाफे कभी कभी खोये भी जाते हैं जिससे ग्राहकोंकी हानि होती है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको भी नहीं भेजा जाता है; अतः कोई सज्जन नमूनेके लिए बाध्य न करें। यदि एक प्रति (नमूनार्थ) मंगवानी हो तो उसके लिए १) रु० भेजना आवश्यक है। जिन सज्जनोंके जवाबीपत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको संस्थाकी ओरसे उत्तर दिया जायगा। पुराने ग्राहकोंको रुपया भेजते समय कूपन पर अपना ग्राहक नम्बर लिखना आवश्यक है। 'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो पहले अपने स्थानीय पोस्ट आफिस (डाकघर) में पूछताछ करके पोस्टमास्टरके उत्तरके साथ १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए।

पत्रव्यवहारका पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है—

'श्रीस्वाध्याय' पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित धुरन्धर विद्वानों एवं राष्ट्रिय प्रसिद्ध पत्रोंकी सम्मतियाँ वा समालोचनाएं प्रथम द्वितीय और तृतीयवर्षके गताङ्कोंमें क्रमशः दो-दो पृष्ठोंमें प्रकाशित की गई थीं। अब भी 'श्रीस्वाध्याय' की सफलताके लिए बधाईके पत्र एवं सुन्दर सम्मतियाँ निरन्तर आ रही हैं, उन सब सहृदय विद्वानोंके हम हृदयसे आभारी हैं। स्थानाभावके कारण अब सम्मतियोंके लिए केवल एक पृष्ठ ही रक्खा है; अतः जिन सम्मान्य विद्वानोंकी सम्मतियाँ प्रकाशित न हो सके वा विलम्बसे निकले तो आशा है वे क्षमा करेंगे। अभी प्राप्त हुई अनेक सम्मतियोंमेंसे कुछ एकका संक्षिप्त भाग निम्न है—

साहित्य-संसारके सुप्रसिद्ध विद्वान् 'सरस्वती' केसुयोग्य सम्पादक विद्याविभूषण श्री पं० देवीदत्तजी शुक्ल प्रयागसे लिखते हैं—

"………………'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है। इसका परिचय 'सरस्वती' में भी छाप चुका हूँ।………………आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्त्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।"

आर्यजगत्के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान्, वैदिक-साहित्यके मर्मज्ञ पण्डित, कई ग्रन्थोंके सिद्धहस्त लेखक और "वैदिकधर्म" के सुयोग्य सफल सम्पादक श्री पं० श्रीपाद दामोदर सात्वलेकर जी स्वाध्याय मण्डल औंधसे लिखते हैं—

'………………… 'श्रीस्वाध्याय' पर सम्मति क्या है, वह तो एक उत्तम पत्र है, यह बात सुप्रसिद्ध है। इसका विशेष परिचय (समालोचना) मैं 'वैदिकधर्म' में लिखूंगा।……………"

नि० भा० विद्वत्परिषद्-विद्यापीठके प्रधान मंत्री 'आयुर्वेद-भास्कर' के सुयोग्य सम्पादक श्री पं० ज्योतिप्रसादजी शास्त्री आगरासे लिखते हैं—

"…………………मासिक पत्रोंमें 'श्रीस्वाध्याय' ने थोड़े ही समयमें मुख्य स्थान प्राप्त कर लिया है। पत्रको हाथमें लेकर छोड़नेको जी नहीं चाहता।……… ……यह सब आपके अदम्य-उत्साह सच्ची लगन एवं उच्चकोटिके त्यागका ही फल है। वर्तमानकालमें पत्र-पत्रिकाओंका प्रकाशित करना बड़ा ही दुस्तर कार्य है, जबकि देशमें सैकड़ों ही पत्र अपना प्रकाशन बन्द कर चुके हैं। …… ………… आपने इसके कलेवरकी पूर्त्ति इस प्रकारसे की है जिस प्रकार कि चतुर जौहरी मणियोंका चुनाव यथास्थान करता है। इस पत्रके पढ़नेसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चतुर्वर्गकी प्राप्तिका मार्ग सुखसाध्य हो जाता है, जिससे कि मनुष्य जीवन सफल बनता है। मैं देशके प्रत्येक धनी मानी एवं पठितवर्गसे अपील करता हूँ कि वे इस पत्रके संरक्षक सहायक एवं स्थाई ग्राहक बनकर राष्ट्रकल्याणके साथ अपने मनुष्य जीवनको भी सफल बनावें।……………"

श्रीस्वाध्यायके प्रथमवर्षका प्रथमाङ्क—

[शरदङ्क]

प्रत्येक पत्र पत्रिकाके प्रथमाङ्कसे ही उस पत्रकी नीति और उद्देश्यका ज्ञान भलीभांति हो सकता है। इसी कारण उस प्रथमाङ्कको पाठकगण बड़ी सावधानीसे सुरक्षित रखते हैं। कई पत्र पत्रिकाओं के आरम्भका पहला अङ्क कुछ वर्षोंके पश्चात् पाठकोंको ढूंढने पर भी नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रथमवर्षके प्रथमाङ्ककी प्रतियाँ पर्याप्तमात्रामें अधिक छपवाने पर भी अब बहुत थोड़ी प्रतियाँ शेष रही हैं। जिन नये ग्राहकोंके पास यह प्रथमाङ्क न हो वे मंगानेकी शीघ्रता करें, अन्यथा फिर किसी मूल्यमें भी उन्हें यह अद्भुत अङ्क प्राप्त न हो सकेगा।

इस अङ्कमें पत्रके संस्थापक सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज ने पत्रके मुख्य पाँचों स्तम्भोंमें अपने आरम्भिक मार्मिक लेख लिख कर मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम और इतिहासके रहस्यको भलीभांति समझाया है। जब तक इस अङ्कमें आचार्यचरणोंके ये पाँचों लेख नहीं पढ़ लिए जाते तब तक धर्मार्थ काम मोक्ष एवं इतिहासका तत्त्व समझमें नहीं आ सकता। इस लिए 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पाठकको पहले यह अङ्क अवश्य पढ़ लेना चाहिए। "ग्रहोंका चमत्कार और भारतवर्ष" शीर्षक सम्पादकका आठ पृष्ठोंका लेख भी महत्त्वपूर्ण है, ज्योतिषियोंके लिए तो यह लेख अत्यन्त उपयोगी एवं मननीय है। इसी प्रकार 'चन्द्रसूर्य ग्रहणोंका प्रभाव' 'दीपावली' 'पारिवारिक आयव्यय और मेरा अनुभव' 'ग्रहयोग प्रतियोग-चमत्कार' 'प्राकृतिक चिकित्सा' 'श्रुतिसम्मत राज्यपद्धति' 'संस्कृतसाहित्य और काश्मीरी पण्डित' इत्यादि सभी लेख अधिकारी विद्वानोंसे लिखे हुए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ज्ञानवर्द्धक हैं। साथ ही इस अङ्कमें सं० १९९९ वि० के हर्शल नेपच्यून (इन्द्र वरुण) सहित वर्ष भरके ग्यारह स्पष्टग्रह और इनके शर क्रान्ति भी दिये गये हैं, जो ज्योतिर्विज्ञानसे प्रेम रखने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। दूसरे और तीसरे वर्षके प्रथमाङ्क समाप्तप्राय हैं, अतः इनका मूल्य क्रमशः ३) और ४।।) रु० कर दिया गया है। परन्तु नये ग्राहक धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और इतिहासका रहस्य समझनेके लिए प्रथमाङ्कसे वञ्चित न रह जावें इस सदुद्देश्यसे अभी हमने इस प्रथमवर्षके प्रथमाङ्कका मूल्य केवल १।) रु० मात्र ही रक्खा है। थोड़े समयके पश्चात् फिर यह अङ्क १०) रु० में भी प्राप्त नहीं हो सकेगा, अतः नये ग्राहकोंको यह अङ्क शीघ्र मंगा लेना चाहिए।

तृतीय वर्षके ग्राहकोंको विशेष सुविधा

अब इस तृतीय वर्षमें जो नये ग्राहक होंगे उन्हें केवल तीन अङ्क २।) रु० में मिल सकेंगे। 'नववर्षाङ्क' उन्हें प्राप्त नहीं हो सकेगा। हाँ, यदि वे चाहेंगे तो 'नववर्षाङ्क' के स्थानमें प्रथमवर्षका प्रथमाङ्क उन्हें इसी वार्षिक मूल्य ३) में ही भेजा जा सकेगा। इस प्रकार उन्हें केवल ।।।) में ही यह अङ्क प्राप्त हो जावेगा। नये ग्राहकोंको ३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर इस अवसरसे अवश्य लाभ उठाना चाहिए। जिन ग्राहकोंके मूल्यके साथ ≡) अधिक आवेंगे उन्हींको तीनों उपहार पुस्तकें भेजी जा सकेंगी। 'श्रीराष्ट्रालोक' के प्रथम संस्करणकी सब प्रतियाँ समाप्त हैं। द्वितीय संस्करण छपने पर सूचना दी जावेगी।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन [शिमला]

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली-भाँति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पाँच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन-किन विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक् प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म-रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प-सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जाएं। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियाँ। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमाएं नदियाँ पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियाँ आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (ग्रीष्माङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

उत्सर्जन उपाकर्म निर्णय, योद्धाकृष्ण, ब्रह्मण्यकृष्ण, विलासीकृष्ण, भगवानकृष्ण, अवतारीकृष्ण, वीरकृष्ण, चतुरकृष्ण, जगद्गुरुकृष्ण, द्रौपदी, महालयश्राद्ध, देवी नवरात्र आदि आदि।

सब लेख ज्येष्ठ शु० १ ता० २३ मई १९४४ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[वसन्तांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष ३	सोलन, चैत्र शु० १० सोमवार सं० २००१ वि०	संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

उद्बोधन

[श्री पं० चम्पालालजी विशारद कविशेखर 'मञ्जुल']

इसी भांति रहोगे सदैव दुखी अपनेपनको अपनाये बिना ।
विजयोत्सव शान्तिसे कैसे मिलै प्रलयोपम क्रान्ति कराये बिना ॥
कवि 'मञ्जुल' भीखमें सार ही क्या निज पौरुषको दिखलाये बिना ।
मिलते नहि राज किसीको कभी रणभूमिमें रक्त बहाये बिना ॥१॥
अभियानकी मञ्जुल-मोहिनीसे रण-मोहनका उपचार करैं ।
समरोद्यत क्रुद्ध कृतान्तका भी मनमें नहिं नेक विचार करैं ॥
क्षत-विक्षत हो कर भी क्षणमें दृढ़ द्रोहियोंका दल छार करैं ।
भट साँचे वही बिन शीशके जो रिपु सैन्य पै चौगुने वार करैं ॥२॥

उन्नतिका मूलमन्त्र



संसारमें जितने भी प्राणी हैं सभी सुख चाहते हैं। सुखका मूल स्वातन्त्र्य है। इस स्वातन्त्र्यके ही अभावके कारण आज हम अनन्त दुःख भोग रहे हैं। हमारे समस्त प्रकारके दुःखोंका मूल पारतन्त्र्य है। इस पारतन्त्र्यकी शृङ्खलाओंको तोड़ने तथा स्वातन्त्र्यको प्राप्त करनेके लिए हम चिरकालसे प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु अनेक प्रयत्न करने पर भी अभी तक हमारा राष्ट्र स्वातन्त्र्यको न पा सका। इसका क्या कारण है ? क्यों हमारे सभी प्रयत्न निष्फल हो रहे हैं ? हमारे प्रयत्नमें कौनसी त्रुटि है ? स्वातन्त्र्यके साधनोंमें कौनसे साधन हमारे पास नहीं हैं ? स्वातन्त्र्यकी प्रबल इच्छा हममें है। बुद्धि हममें है। त्याग भी हममें है। लाखों भारत-वासी स्वातन्त्र्यके लिए मरनेको भी प्रस्तुत हैं। जन-धनकी हममें न्यूनता नहीं। बल और उत्साह भी हममें पर्याप्त है। मार्ग-प्रदर्शक बुद्धिमान्, त्यागी, और निःस्वार्थ नेता भी परमात्माने हमें अनेक दिये हैं। परन्तु इतनी सारी सामग्री होने पर भी हममें अनेक बातोंकी न्यूनता है। यदि उन सब बातोंका पृथक्-पृथक् विचार लेखबद्ध रूपमें किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। किसी त्रैमासिक-पत्रके सम्पादकीय अग्रलेखके एक-दो पृष्ठोंमें उन सब त्रुटियोंका सम्यक्तया समावेश करना नितान्त असम्भव है; तथापि इस लेखमें हम संक्षेपसे किसी एक विषय पर विचार करेंगे, जिससे समस्त त्रुटियोंका समावेश उसी एक विषयमें आजाए।

हमारे साधनोंमें जिस प्रधान साधनकी त्रुटि है, उसको नीति कहते हैं। इस नीतिकी ही हममें न्यूनता है। नीतिके ही अभावके कारण हमें निराश होना पड़ता है। इसको नीति कहिए या राजनीति अथवा विदेशीय भाषामें (Politics या Political Science) कहिए, यही एक मुख्य सामग्री है जिससे राष्ट्र उन्नति कर सकते हैं। इस एक सामग्रीसे ही शेष सभी साधन सफल हो सकते हैं। नीतिके बिना कभी भी कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। स्वतन्त्रताका योग और क्षेम नीति पर ही निर्भर है। हममें भी अनेक ऐसी-ऐसी सामग्रियाँ हैं जिनको हम नीति कहते हैं। परन्तु वस्तुतः वह नीति नहीं। हमारी वर्तमान नीति तो केवल नीतिका आभास है। हमारे बड़े-बड़े नेता भी वस्तुतः नीतिके सच्चे उपासक नहीं। नीतिके ही अभावके कारण हम लोग अभी तक अपने आपको भी नहीं समझ सके, शत्रुके भावको समझना तो दूर ही रहा। हम अपने आप अर्थात् अपने राष्ट्रको किसी विशेष प्रकारके मार्ग पर चलनेके लिए उद्यत तथा समर्थ समझते हैं, पर काम करते समय हमें यह प्रतीत होता है कि हम उस मार्ग पर एक दिन भी नहीं चल सकते।

इतिहासके अध्ययनसे हमें नीतिकी उत्तम शिक्षा मिल सकती है। इतिहासमें प्रायः तीन प्रकारके व्यक्ति बहुत प्रसिद्ध होते हैं। एक तो वे जो अपने किसी सिद्धान्तके अनुयायी होते हैं। वे लोग तो अपने प्राणोंकी आहुति दे देते हैं, परन्तु अपने सिद्धान्तको कभी छोड़ते नहीं। ऐसे व्यक्ति अपने यशके प्रकाशसे सारे इतिहासको उज्ज्वल बनाते हैं। परन्तु राष्ट्रको ये लोग उन्नत नहीं कर सकते। करते तो सब कुछ ये राष्ट्रके लिए हैं, परन्तु इनका सिद्धान्त इनको राष्ट्रहितसे भी अधिक प्रिय होता है, इसी कारण राष्ट्र-कल्याणमें सफल नहीं होते। ये लोग भी अपने सिद्धान्तोंको अपनी पवित्र नीतिका नाम देते हैं, किन्तु वस्तुतः यह नीतिका आभास ही होता है। क्योंकि नीति हम उसीको कह सकते हैं जिससे राष्ट्रका कल्याण हो और जो परिणाममें

सुखप्रद हो। ऐसे महापुरुषोंके दृष्टान्त हमारे राजपुत्र हैं। शक्ति, बल, उत्साह, पराक्रम, धैर्य, धन आदिके होते हुए भी ये लोग अपने देशका कल्याण करनेमें सफल न हुए; अपने स्वातन्त्र्यको बचा न सके, परन्तु अपने यशको इस संसारमें सुप्रतिष्ठित अवश्य कर गये। संसारमें सदा वीर-पूजनके समय हमारे राजपूत सर्वप्रथम पूजित होंगे। ठीक इसी प्रकारके सिद्धान्ती (Idealist) इस समय हम भारतवासी भी हैं। हमारे बड़े-बड़े नेता भी राजनैतिक क्षेत्रमें उतरकर अपने सिद्धान्तोंके कट्टर उपासक हैं। हम यह नहीं समझ सकते कि सिद्धान्त और नियम किसी प्रयोजन विशेषके अङ्ग होते हैं, इस कारण उनका पालन तभी तक हितकर होता है जब तक वे उस प्रयोजनके अनुकूल रहें। ज्यों ही मुख्य प्रयोजनको इन नियमोंसे हानिकी सम्भावना प्रतीत हो त्योंही नियममें परिवर्तन करना उचित है। इसी कारण हमारे धर्मशास्त्रोंमें प्रत्येक सामान्य नियमके साथ उसके अपवाद नियमोंका भी उपदेश है। तभी उन नियमोंसे लाभ हो सकता है।

जो लोग सिद्धान्तका पालन करते हुए भी सिद्धान्तके वश नहीं होते; सिद्धान्तके रहस्यको समझते हैं, सिद्धान्तों और उनके प्रयोजनोंको यथावत् समझकर समय-समय पर उनका पालन तथा उलङ्घन करना भी जानते हैं वे ही सच्चे नीतिज्ञ कहलाते हैं। उनकी ही नीति वास्तविक नीति होती है। उसी नीतिसे राष्ट्र उन्नति कर सकता है। ये लोग यश भी प्राप्त करते हैं और राष्ट्रकी सच्ची सेवा भी कर सकते हैं। परन्तु यश इनका उतना नहीं होता है जितना कि सिद्धान्तियोंका। राजनीतिका मुख्य प्रयोजन राष्ट्र-उन्नति ही होता है, अतः राजनैतिक दृष्टिसे ये ही लोग अधिक प्रशस्त माने जाते हैं। हमारे इतिहासमें शिवाजी जैसे महाराष्ट्रके वीर इस प्रकारके महापुरुषोंके उत्तम दृष्टान्त हैं। इन वीरोंके पास राजपुत्रों जैसी शक्ति, धन, प्रभुत्व, और पराक्रम न थे। फिर भी ये लोग वह काम कर सके जिसमें महाराणा प्रताप जैसे राजपुत्र वीर भी असफल रहे। इसका यही कारण था कि ये समय पर मरना, समय पर मारना तथा जीना और भागना और भाग कर पुनः लड़ना जानते थे। ये केवल मरना या मारना ही अपना धर्म नहीं समझते थे। यही नीतिका वास्तविक स्वरूप होता है। मायावी कूटनीतिज्ञ निर्मम दुर्दान्त शत्रुके सम्मुख निरे निष्कपट धर्मात्मा बननेसे काम नहीं चलता। हाँ, यदि हमारे घर या राष्ट्रके किसी व्यक्ति-विशेषसे हमारा कोई मतभेद वा विरोध हो तो वह हमारी निष्कपटनीति, कष्टसाध्य तपस्या और अनुनय विनयसे निवृत्त हो सकता है। क्योंकि हमारे अपने राष्ट्रके शत्रुको (चाहे वह कितना ही कठोर क्यों न हो) राष्ट्रसे कुछ ममत्व होनेके कारण उसका हृदय परिवर्तन हो सकता है; किन्तु अराष्ट्रिय-शत्रु सर्वथा निर्मम होता है, अतः अपने निजी स्वार्थ वा हितके लिए वह दूसरे राष्ट्रके हितकी सर्वथा उपेक्षा करके अपनी स्वच्छन्द-शोषणनीतिको सुदृढ़ बनाये रखता है। ऐसे निर्मम दुर्दान्त शत्रुके सम्मुख हमारी धार्मिकता, सरल-नीति, त्याग, तपस्या, अनुनय-विनय आदि कुछ भी सफल नहीं हो सकते। भारत पर इस समय ऐसे ही शत्रुओंकी शनिदृष्टि लगी हुई है। उन सबका प्रतिरोध वा दमन करनेके लिए महाभारतकालमें (किरातार्जुनीयमें) महाराणी द्रौपदीके—

"व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधा–
नसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥"

इन शब्दोंके अनुसार हमें स्वयं शत्रुसे अधिक मायावी एवं कूटनीतिज्ञ बनाना होगा, तभी स्वातन्त्र्य-लक्ष्मी भारतमें पुनः प्रतिष्ठित हो सकती है। इसी सिद्धान्तको दृष्टिकोणमें रख कर महामुनि गौतमने भी तर्कशास्त्रके प्रयोजनको भली-भांति समझ कर छल और वितण्डाको भी प्रमाणोंमें गिना है। नीतिके इस रहस्यको समझने वाले लोग ही प्रत्यु-

त्पन्नमति और काम करनेवाले (Practical) मनुष्य होते हैं।

तीसरे प्रकार के लोग वे होते हैं जो केवल अपने राष्ट्रकी कार्य सिद्धिको ही धर्म समझते हैं, सिद्धान्तों और नियमोंको कोई स्थान ही नहीं देते, और स्वार्थ वश औचित्य अनौचित्यका विचार भी नहीं करते। ये लोग अपने राष्ट्रका कल्याण कर तो सकते हैं, परन्तु इनके कर्मसे संसारके इतिहासमें इनका राष्ट्र और ये स्वयं सदाके लिए घृणा और निन्दाके पात्र बने रहते हैं। इनकी कूटनीतिसे उन्नत बने हुए राष्ट्रकी उन्नति भी चिरस्थायिनी नहीं होती।

इन सब बातोंका विचार करने पर यह ज्ञात होगा कि हम भारत-वासियों तथा हमारे नेताओंको सच्चे नीतिज्ञ बन कर काम करना चाहिए। तभी हमारे देशका कल्याण होगा। हमें अपने प्राचीन 'अर्थशास्त्र' जैसे और नवीन 'राष्ट्रालोक' जैसे नीति-शास्त्रोंको पढ़कर उनके रहस्यको समझना चाहिए। वास्तविक नीतिके अनुसार राष्ट्रकी सेवा करनेसे राष्ट्र शीघ्र ही उन्नत हो सकता है। यदि हम नीतिके रहस्यको अब भी न समझेंगे तो अनेकों शताब्दियों तक इसी प्रकारके दुःखोंको भोगते रहेंगे। लाखों व्यक्ति भूखसे मरते रहेंगे। सारे संसारका कल्याण कर सकनेवाली सहस्रों शक्तियाँ कारागारोंमें नष्ट होती रहेंगी। अतः इन दुःखोंसे छूटनेका केवल एक उपाय है, वह उपाय है नीतिपूर्वक राष्ट्रकी सेवा। दूसरा कोई मानव-शक्ति पर प्रतिष्ठित उपाय दिखाई नहीं पड़ता। दूसरा उपाय एक है तो सही पर वह मानव-शक्ति से बाहिर है। वह है ईश्वरानुग्रह। वह तो ईश्वरेच्छा पर ही निर्भर है। उसमें हमारा प्रयत्न क्या कर सकता है ? हाँ, इतना हम कर सकते हैं कि ईश्वरकी उपासना करके उसके अनुग्रहको प्राप्त करें। वह उपाय सर्वोत्तम है परन्तु साथ ही कठिन भी, ईश्वर जब अनुग्रह करता है तो वह स्वयं आ कर हमारा काम नहीं करता है अपितु उसके अनुग्रहसे राष्ट्रमें राष्ट्रनितीके विद्वान् त्यागी वीर उत्पन्न होते हैं और उनके प्रयत्नसे राष्ट्र उन्नत हो जाता है। अतः ईश्वर भी नीति द्वारा ही राष्ट्रोंका कल्याण करता है। इस लिए इस विचारसे भी हमने नीतिके रहस्यको सीख कर उसके अनुसार काम करना चाहिए। हमारे भीतर जो समस्त शक्तियाँ सोई हुई पड़ी हैं उन सब शक्तियोंको अभिव्यक्त करके वास्तविक नीतिके अनुसार उनका प्रयोग करना चाहिए, तभी हमारा भारतवर्ष उन्नत होगा।

वसन्त !

['श्री विमल']



मेरे उरके वसन्त ! तुम प्रतिक्षण हंसतेसे रहना।
ये भावों की मालाएं, रे ! प्रतिपल पहिना करना ॥
तू होगा तुष्ट नहीं क्या, पा कर आँसूकी माला।
शान्त न होगी क्या तेरे, अन्तरकी जलती ज्वाला ॥
पूछ न लो व्यथित हृदयसे, क्या क्या साज सजायेगा।
अपने इन लघु भावोंमें, क्या तूफान उठायेगा ॥

प्रतिपल रोती आँखोंको, क्या धीरज तनिक मिलेगा।
इस मरु-उरके अन्तर पर, आशाका पुष्प खिलेगा ॥
वसन्त ! इस व्यथित हृदयकी, क्या आशा होगी पूरी !
अथवा यह तुच्छ-कामना, मेरी रह जाय अधूरी !!
क्या शत-शत दुखकी ज्वाला, कभी शान्त हो पायेगी !
क्या मेरे मानसमें भी, आशा-लता इठलायेगी !!

ईश्वर-उपासनामें मूर्तिपूजाकी अनिवार्यता

[लेखक—महामहोपदेशक शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्यजी शास्त्री]



जिस प्रकार निराकार ताल और स्वरको उत्पन्न करनेके लिये साकार तबले सारंगीकी आवश्यकता है, निराकार मीठे, खट्टे, चरपरे आदि रसोंका आस्वादन करनेके लिये साकार मिश्री, अमचूर, मिरच आदि पदार्थोंको खानेकी आवश्यकता है, इसी प्रकार निराकार परमात्माको पानेके लिये साकार मूर्ति की आवश्यकता है।

अपठित गंवारकी दृष्टिमें भूगोलका चित्र टेढ़ी-मेढ़ी लकीरोंसे मंडा हुआ कागजमात्र है, परन्तु भूगोलवेत्ता मनुष्य उन्हीं रेखाओंको नदी, नद, समुद्र, पर्वत, समतल, देश, ग्राम एवं नगरके रूपमें देखता है, वह घर बैठा हुआ उस छोटेसे चित्रकी सहायता से समस्त भूमण्डलका परिज्ञान प्राप्त कर लेता है, इसी प्रकार सनातनधर्मियोंकी मूर्ति अज्ञानी मूर्खोंको पत्थर दिखाई देती है, परन्तु सनातनधर्मी उसमें "भूपादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे" के अनुसार समस्त ब्रह्माण्डके दर्शन करते हैं और ब्रह्माण्ड व्यापक चेतन प्रभुकी बांकी झांकी निहारते हैं।

एक पैसेमें बहुतसे कोरे कागज आ जाते हैं और सैकड़ों रद्दी कागज यूंही बाजारों में रुलते रहते हैं, परन्तु जिस कागज पर सम्राट् (बादशाह) की मुहर लग जावे, हस्ताक्षर हो जावे, मूर्ति छप जावे, फिर वह हजारों रुपयेका मूल्यवान नोट बन जाता है, लोग उसे लोहेकी पेटियोंमें संभाल कर रखते हैं, उस समय कोई गँवार कागज समझ कर रद्दी की टोकरीमें नहीं फेंकता। इसी प्रकार पत्थरोंके ढेर के ढेर पर्वतों पर ठोकरोंमें रुलते-फिरते हैं, परन्तु जब किसी पाषाण पर वेदमन्त्रोंकी मुहर लग कर प्राण-प्रतिष्ठा हो जाये और वह प्रभुकी मूर्ति बन जाये, तब वह पत्थर — पत्थर नहीं रहता, किन्तु मुक्तिका द्वार बन जाता है।

इस लिये चंचल मनको एकाग्र करनेके लिये विधिपूर्वक प्रतिमा-पूजन करना चाहिये। वेदादि शास्त्रोंके कतिपय प्रमाण देकर प्रतिमा-पूजनके विधान का नीचे वर्णन किया जाता है:—

मूर्तिपूजा-विधि

स्नात्वा शुचौ देशे गोमयेनोपलिप्य प्रतिकृतिंकृत्वा अक्षतपुष्पैर्यथालाभमर्चयेत्।

(बौधायनकल्प-परिचर्य्या प्रकरण सूत्र २)

अर्थ—स्नान करके पवित्र भूमिको गोबरसे लीप कर मूर्ति बना कर अक्षत फूल आदि यथालब्ध सामग्री से पूजन करे।

यज्ञमें मूर्ति-निर्माण

अथ मृतपिण्डं परिगृह्णाति, तन्मृदश्चापां च पंच महावीराः कृता भवन्ति।

(यजुर्वेद-शतपथ १४।२।६)

अर्थ—इसके बाद मिट्टीका पिण्ड गृहण करे और उस मिट्टी तथा पानी गारेसे महावीरकी पांच मूर्ति बनावे।

मूर्तिके अंगोंकी पूजा

मुखाय ते पशुपते! यानि चक्षूंषि ते भव। त्वचे रूपा सन्दृशे प्रतिचीनाय ते नमः॥ अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वायास्याय ते दद्भ्यो गन्धाय ते नमः।

(अथर्व ११।२।५—६)

अर्थ—(पशुपते!) हे समान द्रष्टा ज्ञानी मनुष्यों के रक्षक! परमात्मन्! (ते) तेरे (मुखाय) चेहरेको और (भव) हे महादेव! (यानि) जो (ते) तेरी (चक्षूंषि) सूर्य्य चन्द्र अग्नि रूप तीन आंखें हैं,

उनको तथा (त्वचे) प्रतिमाके ऊपरी भाग त्वचाको (रूपाय) रूपको (सन्दृशे) दृष्टिको और (ते) तेरे (प्रतिचीनाय) अति प्राचीन विग्रहको (नमः) नमस्कार हो। (ते) तेरे (अंगेभ्यः) सब अंगोंको (उदराय) पेटको (जिह्वाय) जीभको (आस्याय) मुँहको (ते) तेरे (दद्भ्यो) दांतोंको (ते) तेरे (गन्धाय) नासिकाको नमस्कार हो।

नित्य कर्म्म

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्य्याद्देवर्षिपितृतर्पणम्।
देवताभ्यर्चनं चैव समिदाधानमेव च ॥

(मनुस्मृति २।१७६)

अर्थ—नित्य स्नान करके देवता ऋषि और पितरों का तर्पण करे तथा मूर्ति द्वारा हरिहरादि इष्टदेवकी पूजा करे और अग्निहोत्र करे।

राजाका कर्तव्य

शृङ्गाटके ग्राममध्ये विष्णोर्वा शंकरस्य च।
गणेशस्य रवेर्देव्याः प्रासादान्क्रमतोन्यसेत् ॥

(शुक्रनीति ४।३६६)

अर्थ—राजाका कर्तव्य है कि वह चोराहोंमें, गांवोंके बीचमें विष्णु, शंकर, गणेश, सूर्य और दुर्गाके मन्दिर बनवाये।

जीर्णोद्धार

देवालये मानहीनां, मूर्तिं भग्नां न धारयेत्।
प्रासादांश्च तथा देवाञ्जीर्णानुद्धृत्य यत्नतः ॥

(शुक्रनीनि ४।५२१)

अर्थ—राजाको चाहिये कि मन्दिरोंमें शास्त्रोक्त परिमाणसे छोटी बड़ी अथवा टूटी-फूटी मूर्तियोंको न रखने दे और टूटे-फूटे पुराने मन्दिरों तथा देव-प्रतिमाओंका सावधानी से जीर्णोद्धार किया करे।

इस प्रकार ईश्वर उपासनाके वैज्ञानिक विधानका सांगोपांग निरूपण करनेके अनन्तर हम इस लेखको यहीं समाप्त करते हैं।

—❀—

नव-वर्ष !

[कवयिता—साहित्याचार्य श्री पं० रामदत्तजी शास्त्री त्रिवेदी 'विमल']

हे नये वर्ष ! हर्ष पधारो, स्वागत आज तुम्हारा है।

जल-थल-नभमें करती है नित, बर्बरता निज भीषण नर्तन !
मानवताकी अरे ! नींवपर कैसा दानवताका सर्जन !!
धधक रही है रणकी ज्वाला, दूर हुई जीवनकी आशा !
अरे ! आज मानव, मानवके रुधिरका हो गया है प्यासा !!
उमड़ रही हैं युद्ध-घटाएं, बहती शोणित-धारा है !
हे नये वर्ष ! हर्ष पधारो—स्वागत आज तुम्हारा है !!

ये टैंक तोप बमवर्षक नित, करते बमबाजी जनता पर !
ये सुनगेंसे मानव मरते, अरे ! ये नगर हुए खण्डहर !!
सारी दुनियां लगी खेलने हा ! मानव-शोणितसे होली !
हो उन्मद नर-कङ्कालोंसे भरती अपनी-अपनी झोली !!
ऐसी दारुण-वेलामें तू चमका आशा तारा है !
हे नये वर्ष ! हर्ष पधारो — स्वागत आज तुम्हारा है !!

दर-दरके मुँहताज बने हम, खो चुके अपना वैभव ज्ञान !
झेल चुके विपदा पर विपदा, सहे अपमानों पर अपमान !!
हैं संख्यामें सबसे ज्यादा, पूछ नहीं कुछ भी हैं काले !
दो प्रकाश साहस बल हमको, हम भी अपना गौरव गालें !!
शान्त करें ये रणकी ज्वाला, यह नाश किसे प्यारा है !
हे नये वर्ष ! हर्ष पधारो — स्वागत आज तुम्हारा है !!

वेदस्वरूप निरूपण

[लेखक—विद्याभूषण विद्यावागीश विद्यानिधि श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत]

[गताङ्कसे आगे]



सायणाचार्यको सर्ववेदभाष्यकार सभी मानते हैं। परन्तु उसने शुक्लयजुर्वेदकी वाजसनेयी-संहिता पर जिसे आर्यसमाज वेद मानता है भाष्य नहीं किया, किन्तु शुक्लयजुर्वेदीय शाखा काण्वसंहिता पर एवं कृष्णयजुर्वेदकी शाखा तैत्तिरीयसंहिता पर भाष्य किया है। यदि शाखाओंको एवं कृष्णयजुर्वेदको वेद न माना जाय, तब आर्यसमाजिक विद्वान् उसे सर्ववेदभाष्यकार कैसे कहते हैं ? इससे प्रकृत विषय स्पष्ट हुआ।

और देखिये । महाभाष्यके प्रत्याहाराह्निकमें 'एओङ्' सूत्र पर भाष्य करते हुए श्रीपतञ्जलिने वादी द्वारा एक प्रश्न उपस्थापित किया है—

ननु भोश्छन्दोगानां सात्यमुग्रिराणायनीया अर्धमेकारमर्धमोकारं च अधीयते—'सुजाते ए अश्वसूनृते अध्वर्यो ओ अद्रिभिः सुतम् ।'

अर्थात् सात्यमुग्रिराणायनीयशाखामें अर्ध एकार मिलता है। इसका उत्तर वहाँ पर यह दिया गया है—

पारिषदकृतिरेषा तत्र भवताम् । नैव हि लोके नाऽन्यस्मिन् वेदे अर्धएकारोऽर्ध ओकारो वाऽस्ति॥

अर्थात् इस वेदमें तो अर्धओकार मिलता है, पर अन्य वेदमें नहीं। इसमें सामवेद (छन्दोग) की राणायनीयशाखाको वेद कहा गया है। यहाँ पर 'नैव हि लोके, नैव च वेदे' यह न कह कर 'नाऽन्यस्मिन् वेदे' यह जो शब्द कहा गया है, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि राणायनीय आदि शाखाएं वेद हैं।

आर्यसमाजके मतानुसार अथर्ववेद वह है जिसके आदिमें "ये त्रिषप्ताः परियन्ति" (शौनक संहिता) यह मन्त्र है। परन्तु महाभाष्यकारने अथर्ववेदका आरम्भिक मन्त्र 'शं नो देवी' यह लिखा है। गोपथब्राह्मण जो कि अथर्ववेद पैप्पलादसंहिताका ब्राह्मण है – उसने भी अथर्वका आरम्भिक मन्त्र 'शं नो देवी' माना है। तब फिर पैप्पलादशाखा भी अथर्ववेद हुई, क्योंकि उक्त मन्त्र पैप्पलादशाखाका ही आरंभिक मन्त्र है, जैसे कि छान्दोग्य मन्त्रभाष्यमें गुणविष्णुने भी कहा है— 'शं नो देवी' रिति अथर्ववेदादि मन्त्रोऽयं पिप्पलाददृष्टः'। 'वेदसर्वस्व' में आर्यसामाजिक स्वामी हरिप्रसादजीने भी लिखा है—"शौनकसंहिताका आरम्भ 'ये त्रिषप्ताः परियन्ति' मन्त्रसे होता है, और पैप्पलादसंहिताका 'शं नो देवीरभिष्टय' मन्त्रसे आरम्भ होता है, ... महाभाष्यकार पतञ्जलिमुनि और गोपथब्राह्मणके कर्ताने जिस 'शन्नोदेवी' मन्त्रसे अथर्वसंहिताका आरम्भ लिखा है, वह पिप्पलादसंहितामें ही पाया जाता है, शौनकसंहितामें नहीं" पृष्ठ १०२।

इस प्रकार पैप्पलादशाखाके भी अथर्ववेद होनेसे सभी शाखाएं वेद सिद्ध हुईं। और देखिये—

महाभाष्यके पस्पशाह्निकमें 'अस्त्यप्रयुक्तः' यह एक आक्षेपवार्तिक है। उसमें कई अप्रयुक्तशब्द दिखलाये गये हैं। उसके उत्तरस्वरूप 'सर्वेदेशान्तरे' यह वार्तिक है। उसमें श्रीपतञ्जलिने कहा है— 'ये चाप्येते भवतोऽप्रयुक्ता अभिमताः शब्दाः; तेषामपि प्रयोगो दृश्यते। क्व ?। वेदे' यहां पर उन अप्रयुक्त शब्दोंका वेदमें प्रयोग दिखलाया गया है, यह वेदमन्त्र दिये गये हैं—'सप्तास्ये रेवतीरेवदूष' 'यद्वो रेवती रेवत्यां तमूव'। 'यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र' 'यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्'। यह चार मन्त्र हैं। इनमें 'सप्तास्ये' मन्त्र ऋग्वेदकी शाकल्यसंहितामें ४।५।१४ है। 'यत्रा नश्चक्रा' मन्त्र यजुर्वेदकी वाजसनेयीसंहिता

में २५।२२, तथा ऋग्वेदकी शाकल्यसंहितामें १।८६।६ है। आर्यसमाज इनको वेद मानता है। परन्तु 'यन्मे नरः श्रुत्यं' यह मन्त्र कृष्णयजुर्वेदकी काठकसंहितामें ६।१८ है, भाष्यकारने इसे वेदमन्त्र माना है। 'यद्वो रेवती' यह मन्त्र प्रचलित मुद्रित संहिताओंमें प्राप्त नहीं हुआ; इस लिए यह लुप्तशाखीय हुआ। यह भी महाभाष्यानुसार वेदमन्त्र है। तब सिद्ध हुआ कि—सभी शाखाएं वेद हैं।

यास्कके निरुक्तमें भी वेदमन्त्रोंकी व्याख्या है। स्वा० दयानन्दजीने भी शोलेतूरमें मुद्रापित विज्ञापन पत्रमें लिखा था— 'नैरुक्तम् १२ तत्र वेदमन्त्राणां निरुक्तयः सन्ति'। उसी निरुक्त में ६।१५।१ 'भद्रं वद दक्षिणतः' 'उप प्रवद मण्डूकि' ये मन्त्र व्याख्यात किये गये हैं; वे वर्तमान प्रचलित वेद शाखाओंमें नहीं है, तब यह लुप्तशाखीय हुए। इस प्रकार अन्य भी बहुतसे मन्त्र उपस्थापित किये जा सकते हैं। तब सभी शाखाएं वेद सिद्ध हुईं।

इस प्रकार निघण्टु जिसे वैदिकशब्दोंका संग्रह माना जाता है, उसमें के कई शब्द प्रचलित वेदोंमें नहीं मिलते। इसी प्रकार वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी तथा स्वा० दयानन्दके आख्यातिकमें छान्दससूत्रोंके दिये हुए वेदमन्त्रोंके उदाहरण आर्यसमाज सम्मत वेदों में नहीं मिलते; इससे स्पष्ट है कि वेदोंकी सीमा प्रचलित चार ग्रन्थ नहीं, क्योंकि यह प्रचलित चार ग्रन्थ तो चारों वेदोंकी एक एक शाखा है। चारों वेदों की सभी शाखाएं ११३१ हैं, यह बताया जा चुका है। इन सभी के प्रवक्ता ऋषि हैं, निर्माता नहीं। प्रचलित चार वेदग्रन्थोंके भी प्रवक्ता क्रमसे शाकल्य, वाजसनेय, कुथुम, शौनक हैं।

शाखाएं सभी वेद हैं, यह सिद्ध होगया। इसीको वेदका मन्त्रभाग कहा जाता है। दूसरा वेदका अंश ब्राह्मणभाग कहलाता है, वह भी वेद ही है। तभी तो श्रीगौतमुनिने न्यायदर्शनमें वेदका प्रामाण्य दृढ़ करनेके लिए स्थूणानिखनन न्यायसे 'तदप्रामाण्यमनृतव्याघातपुनरुक्तेभ्यः' २।१।५७ यह पूर्वपक्षसूत्र रक्खा है, उसमें उदाहरण ब्राह्मणभागके रक्खे हैं। तब वह स्पष्ट वेद ही सिद्ध हुआ।

वादिप्रतिवादिमान्य महाभाष्यकार श्रीपतञ्जलिमुनिने 'प्यष्ठ्यर्थे चतुर्थीतिवाच्यम्' २।३।६२ इस वार्तिकके वैदिक उदाहरणमें 'या खर्वेण पिवति तस्यै खर्वः' इस ब्राह्मणभागको ही रक्खा है। इसमें श्रीपाणिनिमुनिकी भी साक्षी है। 'सुपां सुलुक्' ७।१।३६ यह वैदिक प्रक्रियाका सूत्र है। जिस प्रकार इस सूत्रसे 'सविता प्रथमेऽहन्' ३६।६ इस यजुर्वेदीय वाजसनेयीसंहिताके मन्त्रमें ङि· का लुक् हो जाया करता है, इसी प्रकार 'यश्चायं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषः' इस शुक्लयजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण १४।६।८।३ में भी अक्षिशब्दमें ङि का लुक् हुआ है। दोनों ही स्थानों पर वेद होनेसे 'न ङि.सम्बुद्ध्योः। ८।२।८ इस सूत्रसे न के लोपका निषेध हो जाता है, इसमें के 'ङि.' का उदाहरण केवल वेदमें ही मिलता है, लोक में नहीं।

इसी प्रकार 'प्रथमायाश्च द्विवचनं भाषायाम्' ७।२।८८ इस आकारका प्रत्युदाहरण जैसे भाषा (लोक) से भिन्न मन्त्रभागात्मक वेदमें 'युवꣳ सुराममश्विनौ' शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेयीसंहिता २०।७६ में मिलता है, वैसे ही 'युवमिदं निष्कुरुतम्' ऐतरेय २।२८ इस ब्राह्मणभागमें भी मिलता है। इससे स्पष्ट है कि मन्त्रभाग एवं ब्राह्मणभाग दोनों वेद हैं।

इसमें निरुक्तकारकी भी साक्षी लीजिये। जिस प्रकार श्री यास्कने 'ओषधे! त्रायस्वैनम्' ४।१ इस शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेयीसंहिताके मन्त्रको 'आम्नायवचनात्' १।१६।६ कहकर वेद माना है, वैसे ही 'एतद् रोहात् प्रत्यवरोहश्चिकीर्षितः' इस ब्राह्मणभाग को भी 'आम्नायवचनाद् एतद्भवति' ७।२४।४ इस वचनसे वेद माना है। जिस प्रकार श्रीयास्कने 'अमेनाँश्चिज्जनिवतश्चकर्थ' ४।१।२६ इस ऋग्वेदीय शाकल्यसंहिताके मन्त्रको ३।४।४ स्थलके बीसवें खण्ड में निगम (वेद) माना है; वैसे ही 'ग्नास्त्वाकृन्तन्' १।१।८ इस सामवेदीय ताण्ड्यब्राह्मणकी कण्डिकाको भी 'इत्यपि निगमौ भवतः' कहकर वेद-प्रमाण स्वी-

कार किया है । यास्कके इस विषयमें अन्य भी बहुतसे प्रमाण दिये जासकते हैं; परन्तु स्थान सङ्कुचित होनेसे उन्हें छोड़ दिया गया है ।

इस निबन्धके उपक्रममें हम बतला चुके हैं कि 'वेद' समुदायवाचक शब्द है । वह ११३१ शाखात्मक मन्त्रभागको और उतने ही ब्राह्मणभागको अपने में रखता है । पाणिनि जिस विधिको 'छन्दसि' कहकर करता है, वे विधियें मन्त्रभाग एवं ब्राह्मणभाग दोनोंमें हुआ करती हैं; इसका संकेत हम पूर्व कर चुके हैं । परन्तु 'समुदायेषु हि वृत्ताः शब्दा अवयवेष्व पि वर्तन्ते' इस न्यायसे 'वेद' शब्द अथवा 'छन्दः' शब्द कहीं केवल मन्त्रभागको भी बतलाता है, कहीं केवल ब्राह्मणभागको भी; और कहीं दोनों को । इसपर प्रमाण लीजिये—

श्री पाणिनि मुनि जब किसी विधिको वेदके केवल मन्त्रभागमें करना चाहते हैं; तब सूत्रमें 'मन्त्रे' कहते हैं । जब कोई विधि केवल ब्राह्मणभागमें करना चाहते हैं, वहाँ पर वे 'ब्राह्मणे' कहते हैं । जब दोनोंमें करना चाहते हैं; तब 'छन्दसि' अथवा 'निगमे' कहते हैं । कहीं वे 'छन्दः' शब्द से केवल मन्त्रभागको, कहीं केवल ब्राह्मणभागको गृहीत करते हैं, जैसे कि—

'द्वितीया ब्राह्मणे' २।३।६० इससे पाणिनिने दिवु धातुको कर्ममें ब्राह्मणभाग मात्रमें द्वितीया की है, मन्त्रभागमें नहीं । इससे यहाँ पर 'छन्दसि' न कहकर 'ब्राह्मणे' कहा है । इसी प्रकार पाणिनिने 'मन्त्रे श्वेतवह' ३।२।७१ इस सूत्रसे मन्त्रभागमें ण्विन् किया है, ब्राह्मणभागमें नहीं । इसी लिये ही यहाँ पर भी 'छन्दसि' न कह कर 'मन्त्रे' कहा है । निरुक्तमें कौत्सने प्रथमाध्यायमें मन्त्रभागमात्रका खण्डन करना था, तब वहाँ पर 'अनर्थका वेदाः' न कह कर 'अनर्थका मन्त्राः' १।१५।२ कहा है । इससे स्पष्ट है कि, वेद समुदायवाचक शब्द है । मन्त्रभाग एवं ब्राह्मणभाग उसके भिन्न-भिन्न भाग हैं, दोनों भाग मिलकर ही भागी वेद बनता है ।

[क्रमशः]

श्रीनृसिंह-चतुर्दशी

[लेखक—राजकुमारगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्त जी राजज्यौतिषी]

—:※※※:—

पौर्णमासीके दिन पूर्ण होनेके कारण चन्द्रमाका प्रभाव विशेष रूपसे होता है । उस दिन जो नक्षत्र होता है उसका प्रभाव भी चन्द्रमाके प्रभावसे अधिक होता है । यदि वह मास-नक्षत्र भी हो तो उसका प्रभाव और भी अधिक होता है । इसलिए यदि वैशाख पौर्णमासीके दिन विशाखा नक्षत्र होता है तो उस दिन विशाखा नक्षत्रका प्रभाव अत्यन्त अधिक होता है । इन्द्र और अग्नि विशाखा नक्षत्रके स्वामी हैं—

इन्द्राग्न्योर्विशाखे । तै० १।५।१३।

इसलिए विशाखा नक्षत्र-युक्त वैशाख पौर्णमासीके दिन इन्द्र और अग्नि का प्रभाव विशेष रूपसे पृथ्वीमें व्याप्त होता है ।

प्रिय भ्राता देवराज इन्द्रदेव तथा यज्ञ कर्ममें परमोपयोगी अग्निदेवकी प्रिय तिथि वैशाख पौर्णमासीसे प्रथम तिथि वैशाख शुक्ल चतुर्दशीके दिन सायंकालमें अवतीर्ण हो कर महा पापी यज्ञवैरी इन्द्रारिका संहार कर नारायणने इन्द्र, अग्नि आदि देवताओंको सन्तुष्ट किया और अपने प्रिय भक्त प्रह्लादको कालके मुखसे बचाया ।

नर और सिंहके रूपमें प्रकट होनेके कारण ये नारायणके अवतार नृसिंहावतार कहलाते हैं। सूर्य आत्मग्रह और चन्द्रमा मनोग्रह है। इसलिए सूर्य-चन्द्रमाका प्रभाव आध्यात्मिक और मानसिक शक्तियोंमें विशेष रूपसे होता है। तिथि और चान्द्र-मास सूर्य-चन्द्रमाके चारके अनुसार होते हैं। इस लिए नृसिंह जन्म समयकी चतुर्दशीके दिन जो दिव्य शक्तियाँ प्रकट हुई थीं उनका कुछ अंश प्रतिवर्ष नृसिंह चतुर्दशीको प्रकट होता है। अतएव इस पुण्य-समयमें नृसिंहकी उपासनासे अपना उद्धार करना भक्तजनोंको उचित है।

नृसिंहपुराणमें नृसिंहरूप नारायणका उपदेशः—

वैशाखशुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यां निशामुखे।
मज्जन्म संभवं पुण्यं व्रतं पापप्रणाशनम्॥
वर्षे वर्षे च कर्तव्यं मम संतुष्टिकारणम्।
महागुह्यमिदं श्रेष्ठं मानुषैर्भवभीरुभिः॥
तेनैव क्रियमाणेन सहस्र द्वादशी फलम्।
जायते मत्सखो वच्मि मनुष्याणां महात्मनाम्॥
स्वातिनक्षत्र योगे च शनिवारेण संयुते।
सिद्धियोगस्य योगे च वणिजः करणस्य च॥

विशेष रहस्य

यदि नृसिंह-चतुर्दशीके दिन मेषमें सूर्य होता है, तब सायंकालमें तुलाराशिका उदय होता है। इससे आगे दक्षिणकी ओर प्रथम उदित कन्याराशि और इससे आगे सिंहराशि होती है।

कन्याराशिका स्वामी बुध है। बुधके अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता विष्णु हैं। इसलिए यह कन्याराशि वैष्णवी-शक्ति-रूपा है। तुलाराशि मनुष्य-जातीय और सिंहराशि सिंह-जातीय राशि है। नरात्मक तुलाराशि और सिंहात्मक सिंहराशिके मध्यमें वैष्णवी-शक्तिरूपा कन्याराशि होती है। इस प्रकार नृसिंहात्मक रूप उस समय आकाशमें उदय होता है। यदि सूर्य वृषमें होता है तब यह रूप उदय-स्थानके समीप-में होता है। इसलिए उस समय कुछ न्यून प्रभाव संभावित होता है।

वैशाख-मासमें मास-नक्षत्र विशाखाका विशेष प्रभाव होता है। इसके दो स्वामी हैं। इसलिए इस मासमें नारायणका नरसिंहात्मक दो रूपोंसे प्रकट होना युक्ति संगत भी है।

चतुर्दशी भूततिथि होनेके कारण हिंसक जन्तु सिंहकी भी तिथि है। शुक्ल पक्ष प्रकाशात्मक होनेसे विवेक-प्रिया नर जातिसे सम्बन्ध रखनेवाला प्रतीत होता है। इस प्रकार शुक्ल चतुर्दशीमें नृसिंहका आविर्भाव युक्ति संगत भी है।

प्रकाशात्मक होनेके कारण दिनका सम्बन्ध विवेक-प्रिया नर जातिसे है। तमोमयी होनेके कारण रात्रिका सम्बन्ध तामसी सिंह जातिसे है। इस प्रकार दिन-रात्रिकी सन्धिमें नृसिंहका आविर्भाव युक्ति संगत भी है।

"स्वातिनक्षत्र योगेन" इस वाक्यके अनुसार नृसिंहके आविर्भावके समय तुलामें चन्द्रमा विदित होता है।

श्रीमन्नृकेसरि तनो जगदेक बन्धो!
श्रीनीलकण्ठ करुणार्णव सामराज।
वह्नीन्दुतीव्रकरनेत्र पिनाकपाणे!
शीतांशुशेखर रमेश्वर पाहि विष्णो॥
(मन्त्र महोदधि)

इस प्रार्थनाके अनुसार नृसिंहदेवके सिर पर चन्द्रमा प्रतीत होता है। "कादि विलग्न विभक्त भगात्रः" इस सिद्धान्तके अनुसार लग्न शिरोरूप है। इस प्रकार वैशाख शुक्ल चतुर्दशीके दिन तुला लग्नमें त्रिराश्यात्मक नृसिंह देवके सिर पर चन्द्रमा सिद्ध होता है।

इस प्रकार प्रतिवर्ष नृसिंह-चतुर्दशीके दिन नृसिंह-देवकी शक्तियाँ व्याप्त होती हैं। कभी वे विशेष रूपसे व्याप्त होती हैं और कभी साधारण रूपसे।

इस लेखका साररूप स्वनिर्मित श्लोकः—

कन्याराशेरधीशो हिमरुचितनयो विष्णुनाधिष्ठितोऽयं
राशिः कन्याभिधानो नभसि बलवती वैष्णवीशक्तिराद्या।
राधेमासे सितेऽर्द्धेऽधिशशि मित तिथौ खेनृसिंहाख्यरूप-
मुद्यज्जातोदयं वा घटयुवतिमृगेन्द्राख्यमस्तेऽस्तु भद्रम्॥

हिन्दू पर्व (त्यौहार)

[लेखक—श्री पं० हनुमान् शर्मा जी]



(११) श्रीहनुमज्जयन्ती—

गिरिकी गुहामें बैठे हुए सम्पातीके सम्मुख सैकड़ों हजारों वानर और रीछ उद्ग्रीव हो कर यह सुन रहे थे कि शतयोजन विस्तीर्ण समुद्रके परले किनारे 'लंका' के पुष्पोद्यानकी 'अशोक वाटिका' में शोकाकुल सीता उदास बैठी हुई है। तुममेंसे जो जा सके जा कर देख आवे।...... तब सर्व सम्मतिसे हनुमान्जी वहाँ गये और बड़ी कठिनाईसे सीताका पता लगाकर उसको रामचन्द्रजीकी दी हुई सुवर्ण मुद्रिका अर्पण की। और साथ ही क्षुधानिवारणके मिससे अशोक वाटिकाके फल-पुष्प समन्वित प्रायः सभी लता पत्र और वृक्षादिको 'ऊर्ध्वमूल अधःशाखा' बना देनेके अतिरिक्त अक्षकुमारको मार डाला...... और रावणके घरका भेद प्राप्त करने और उसके मन्त्री उपमन्त्री सेना और सेनाध्यक्षादिके वल वैभव आदिको देख आनेकी कामनासे मेघनादकी छोड़ी हुई 'ब्रह्मपाश' में बँधकर रावणके समीप चले गए। रावणने रुद्ररूप महाकाय वानरेन्द्रके मुखसे खोटी-खरी सुननेके बाद उनके पूँछमें तैल-प्लावित सण सूत्र और चीथड़े लिपटाकर प्रज्वलित करनेका दण्ड दिया। उसे यह मालूम नहीं था कि इस दण्डसे हमारे ही घर द्वारादिका दहन होगा। हनुमान्जीने उस यथेच्छ फलदायी दण्डको सहर्ष स्वीकार करके जलते हुए चिथड़ेके प्रलंब-दण्डको हाथमें लेकर उसकी प्रलयकारी ज्वालाओंसे 'लंकापुरी' को पूर्वसे पश्चिम' और दक्षिणसे उत्तर तक जला दी। और रामप्रिया सीताके सुपूजनीय चरणोंमें पुनः प्रणाम करके यथापूर्व वापस आ गए। इधर आशानिबद्ध और उद्ग्रीव वानरोंने हनुमान्जीका बड़े भारी समारोहके साथ सोत्साह स्वागत किया और सुग्रीवके दधिमुख सुरक्षित 'मधुवन' के मधुर-मधुपूर्ण फलोंको भर पेट भक्षण करके वानरोचित गायन-वादन और नाच-कूद आदिके रूपमें 'हनुमज्जयन्ती महोत्सव' मनाया। यह उत्सव सीताका पता लगाकर विजयपूर्वक हनुमान्जीके सकुशल वापस आनेके उपलक्षमें किया गया था, और उस दिन चित्रा और भौमयुक्त चैत्री पूर्णिमा थी। इस लिए हनुमद्भक्त अद्यावधि उस उत्सवको उसी दिन सम्पन्न करते हैं। जो लोग भ्रमवश इसको हनुमान्जीके जन्म-दिनका उत्सव मनाते हैं उनके सन्तोषार्थ यहाँ यह सूचित कर देना आवश्यक है कि हनुमान्जीका जन्म कार्तिक कृष्ण रूप चतुर्दशीके *निशीथकाल (ढलती हुई आधी रात) के समय हुआ था। और दूसरे दिन अमावस्याके सूर्योदयमें क्षुधापीड़ित हो कर हनुमान्जीने सूर्यको ग्रहण करना चाहा था। इस बातको रामायण-प्रेमी भली-भांति जानते हैं। अतः यदि उस दिन चैत्र शुक्ल पूर्णिमा होती तो सूर्य-ग्रहण कदापि नहीं होता और न यह कथा जगत्में चरितार्थ की जाती। अस्तु; इसका शेषांश कार्तिकके दीपावली महोत्सवमें पूर्ण किया जायगा। और वहीं हनुमान्जीकी यथोचित पूजा-विधि दी जायेगी। 'जयन्ती' शब्द वास्तवमें जयका बोधक है। इस शब्दकी व्युत्पत्ति 'जयतीति-जि-झच्' भी इसी अर्थको सूचित करता है। और "जया—जयन्ती—तर्कारि—नादेयी—वैजयन्तिका" आदि पर्याय भी इसको विजयवाची ही बतलाते हैं। अस्तु।

*'उर्जस्य चासिते पक्षे स्वात्यां भौमे कपीश्वरः।
मेष लग्नेऽञ्जनीगर्भाच्छिवः प्रादुरभूत्स्वयम्।' (उत्सव सिन्धुः)
'कार्तिकस्यासितेपक्षे भूतायां च महानिशि।
भौमवारेऽञ्जना देवी हनुमन्तमजीजनत्।' (व्रतरत्नाकर)

(१२) अक्षयतृतीया—

यह वैशाख शुक्लमें मानी जाती है। इस दिन त्रेतायुगका आरम्भ; नर-नारायण हयग्रीव और परशुरामका जन्म हुआ था। अतः यह तिथि महापवित्र-परमशुभ और किये हुए स्नान दानादिके पुण्यफलको अक्षय* करने वाली है। इसी लिए इसका नाम अक्षय हुआ है। यह आदिके ३ के निमित्त मध्याह्न-व्यापिनी; परशुरामजीके निमित्त प्रदोष-व्यापिनी ली जाती है, क्योंकि उनका जन्म प्रदोष समय (सायंकाल) में हुआ था। यदि इस दिन मध्याह्नसे पहले तृतीया आ जाये तो इसी १ दिनमें उक्त चारों पर्व (३ मध्याह्नमें और १ सायाह्नमें) सम्पन्न हो सकते हैं। अक्षयतृतीया—एक महापुनीत धार्मिक पर्व है। साथ ही शुभ और व्यवहार्य भी है। इस दिन इहलौकिक और पारलौकिक अनेक कार्योंका आरम्भ और उत्सर्ग भी किया जाता है। क्यों न हो जिस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्रजीके जन्मकालीन 'त्रेतायुग' का आरम्भ हुआ और नरनारायण हयग्रीव और परशुरामजीके रूपमें भगवान् अवतरित हुए। उस दिन जैसा शुभ और पवित्र दिन और कब आ सकता है ? इस दिन यदि तृतीया-सोमवार और रोहिणी हो तो सोनेमें सुगन्ध हो जाती है। लोक-व्यवहारवाले इस दिन नूतन निर्माण करानेके स्थान, यान, आसन, संस्था, वस्त्र, शस्त्र और आभूषणादिका आरम्भ और पहलेके निर्माण हुएका उपयोग करते हैं। ग्रामीण कृषक इस दिनके विवाहादि संस्कारोंको सौभाग्यदायक समझते हैं। और पंडित लोग सम्वत्सरका शुभाशुभ जाननेके लिए शुद्ध स्थानमें सुपूजित घट स्थापन करके उसके समीप क्रय-विक्रयकी विभिन्न वस्तुओंको पृथक्-पृथक् तौलकर रख देते हैं और दूसरे दिन अलग-अलग तौल कर उनके घटने-बढ़नेसे महर्घ-समर्घ जान लेते हैं। और पारलौकिक साधनवाले नदी-तट, देव-मन्दिर, तुलसी-समीप या किसी शुद्ध स्थानमें उपस्थित हो कर स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ, जप-होम और दान पुण्य आदि करते कराते हैं। यदि गंगा वा सिन्धु स्नानका सुयोग मिले तो और भी अच्छा है। शास्त्रकारों ने इस दिन जौ, गेहूँ, चावल, चने, सत्तू, दही, इक्षुरस, सुवर्ण, अन्न, जल और 'धर्म-घट' के दानका महत्फल बतलाया है। यद्यपि इसमें अन्य कई एक त्यौहारोंकी भांति हर्षोन्मत्त हो कर अनाप-सनाप खाने-पीने पहनने गाने-बजाने और नाचने आदिके आचरण नहीं किये गये हैं। तथापि उपर्युक्त अवतारत्रयके निमित्त छोटे-बड़े प्रायः सभी देव-मंदिरोंमें धर्मानुमोदनके स्नान, दान, पूजापाठ, व्रत, उपवास, गायन-वादन, आरती और जागरण आदि यथायोग्य-यथोचित योजना अवश्य की जाती है।

(१) अक्षय तृतीयाके दिन हिमालयके अति उच्च और अत्युत्तम धवल अंग पर प्रतिष्ठित नरनारायणस्वरूप बदरीनारायणजीके मन्दिरका षाण्मासिक कपाटोद्घाटन उत्सव सम्पन्न होता है। एतन्निमित्त भारतीय शिशुसुकुमार नवयुवक वृद्ध और जरठ प्राय पर्यन्त भी सभी प्रकारके नरनारी, बड़ी भक्ति, श्रद्धा और उत्कंठाके साथ भूखे-प्यासे या थके हुए हो कर भी पैदल चलकर या नरवाहनादिमें बैठकर उस दिन वहां पहुँचकर भगवान्के दर्शन करनेका अपूर्व पुण्य-फल प्राप्त करते हैं। उस दिनकी पूजाके प्रसादमें वहाँ भी और अन्यत्र भी मीठा मिले हुए जौ गेहूँ या चावलके सेके हुए सत्तूका महाप्रसाद मुख्य होता है। (२) इसी प्रकार जिस-जिस स्थान-ग्राम या नगरादिमें हयग्रीव भगवान्के मन्दिर हैं वहाँ उस दिन विशेष प्रकारसे पूजा महोत्सव सम्पन्न किया जाता है। और नैवेद्यमें मरीचि और सैंधव-मिश्रित भींगी हुई चनेकी दाल अर्पण की जाती है। पापी या दुराचारी दुष्टोंके द्वारा दुःख पाई हुई पृथ्वीका उद्धार करने या भार उतारनेके निमित्तसे भगवान्ने 'हयग्रीव' अवतार धारण किया था। (३) और इसी प्रकार आसाम देशके अन्तर्गत पार्वत्य प्रदेशके जटिल-बीहड़ दुर्गम

* 'यत्किञ्चिद्दीयते दानं स्वल्पं वा यदि वा बहु।
तत्सर्वमक्षयं यस्मात्तेनेयं अक्षया स्मृता।' (भविष्ये)

और महाकाय-सम्मिलित दो पर्वतोंके बीच शान्ति-श्रद्धा और उत्साह बढ़ाने वाली तपोभूमिके परम रमणीय स्थान में परशुरामजी महाराजके दर्शनार्थी यात्रियोंकी आजके दिन बड़ी भीड़ होती है और वे तन्मयता तथा तत्परताके साथ परशुरामजीके देशानुकूल पूजोपचारादिको देखकर सुप्रसन्न मनसे स्वदेश आते हैं। परशुरामजीके प्रसादमें उस दिन कर्कटी जैसे ऋतुफलादिका भोग लगाना मुख्य माना है। भारतवर्षकी जिन राजधानियोंके राजा लोग 'धर्मप्राण' हुए हैं (या होते भी हैं) उनके यहाँके देव-मन्दिरोंमें अक्षय-तृतीयाके 'पर्व चतुष्टय' को सम्मिलित रूपमें सम्पन्न करते हैं। और गायन, वादन, पूजापाठ, व्रत उत्सव और जागरणादिके अतिरिक्त पञ्चामृत (चरणामृत) दाल, सत्तू और कर्कटी (ककड़ी) आदिका प्रसाद वितरण करते हैं। बोलो भगवान् नरनारायणस्वरूप बदरीविशालकी जय! भगवान् हयग्रीवकी जय!! और भगवान् परशुरामजी महाराजकी जय!!! जयपुरमें इस दिन बदरीनारायणजीकी डूंगरी (जो आमेरके रास्तेमें नगरसे दो मील पर है) उसपर विराजमान भगवान् के मन्दिरमें नगरके हजारों नरनारी दर्शनार्थ जाते हैं और दाल, ककड़ी, कुंभ, सर्करा, बीजणे और फल-फूल आदि अर्पण करते हैं। भेंट की हुई वस्तुओं का उस दिन वहाँ ढेर लग जाता है और मन्दिरका आंगण उनसे भर जाता है। अस्तु। प्रसङ्गवश यहाँ श्रीपरशुरामजीके विषयमें कुछ विशेष परिचय देना उचित और आवश्यक प्रतीत होता है।

(१३) श्रीपरशुराम—

इनका यह नाम परशु धारण करनेसे प्रसिद्ध हुआ है। वैसे ये पर्शुराम, परशुरामक, भार्गव, जामदग्न्य और भृगूत्तपति भी कहलाये हैं। महाभारत (शान्तिपर्व) में इनकी जन्म-कथा इस प्रकार लिखी है कि— महाराज जह्नुके पुत्र अज, अजके बलाकाश्व, और बलाकाश्वके कुशिक थे। कुशिकने कठोर तप करके इन्द्रको पुत्ररूपमें प्राप्त किया। तब यह गाधि नामसे विख्यात हुआ। गाधीके 'सत्यवती' नामकी सुन्दर कन्या थी, जिसको ऋचीक ऋषिके अर्पण की। महात्मा ऋचीकने सत्यवतीके सद्गुणोंसे सन्तुष्ट होकर उसको तपोबल द्वारा सम्पादनकी हुई चरु (होमावशिष्ट खीर) देकर कहा कि— इस चरुका पहला अंश तुम्हारी माता (गाधिराजकी राणी) को देना और दूसरा भाग तुम खा लेना। इससे तुम्हारी माँके क्षात्रोचितगुण-सम्पन्न वीर पुत्र होगा और तुम शान्त-स्वभावके धैर्यशाली तपनिरत पुत्रका प्रसव करोगी। उसी अवसरमें उसके माता-पिता (गाधिराज और उनकी राणी) ऋचीकके आश्रम में आ गए। सत्यवतीने पतिकी दी हुई चरुके दोने माताको दे दिये, माताने पुत्रीकी चरु स्वयं खा ली और अपनी चरु पुत्रीको खिला दी। फल यह हुआ कि सत्यवतीके भीषण गर्भकी परिस्थिति प्रकट हो जानेसे महर्षि ऋचीकने कहा कि तुम्हारी चरुको तुम्हारी माता खा गई और अपनी तुमको खिला दी, अतः अब तुम्हारे क्षत्रिय अंश समन्वित पुत्र होगा। यह सुनकर सत्यवतीने भयचकित होकर बड़ी विनय के साथ कहा कि "महाराज! आप दया करके मेरी अपेक्षा मेरी पुत्रवधूको वैसा पुत्र देना" इसपर ऋचीक ने अपने तपोबलके प्रभावसे गर्भस्थ बालकमें परिवर्तन कर दिया। तब सत्यवतीके उदरसे शान्तस्वभाव वाले जमदग्नि उत्पन्न हुये और वय प्राप्त होने पर उनकी स्त्री रेणुकाके गर्भसे श्री परशुरामजीका जन्म हुआ। ये क्षात्रोचित तेज और गुणोंसे सम्पन्न थे। विष्णु, मत्स्य, भागवत और कालिका आदि पुराणों में लिखा है कि जमदग्निकी स्त्री अर्थात् परशुराम की माता 'रेणुका' इक्ष्वाकु वंशके रेणुराजाकी पुत्री थी। यही कारण है कि उनके गर्भसे क्षत्रियहन्ता श्रीपरशुराम उत्पन्न हुए। 'सह्याद्रिखण्ड' के लेखानुसार परशुरामजीका जन्म वैशाख शुक्ल तृतीयाको प्रदोषके समय पुनर्वसुमें हुआ था। और महाभारत के अनुसार गन्धमादन पर्वत पर तप करके शिवजी से परशुनामास्त्र प्राप्त कर विघ्नराज गणेशजीसे परशु अस्त्रकी विद्याका अध्ययन किया था। 'महाभारत'

में लिखा है कि इनकी माता रेणुकासे अपराध हो गया तब उसका प्रायश्चित्त करानेके विचारसे तपोधन जमदग्निने अपने बड़े पुत्र रूमण्वान् और उससे छोटे सुषेण व सुविश्वावसु और परशुरामको यथाक्रम कहा कि तुम अपनी माताको मस्तकहीन बना दो। इसपर ऊपरके चार पुत्र तो नट गए किन्तु परशुरामने तत्काल शिरच्छेदन कर दिया। इस प्रकारकी आज्ञापालनसे प्रसन्न होकर परशुराम की याचनानुसार उनके अचेतन चारों भाइयोंको चैतन्य कर दिया और रेणुकाको जिला दी। एक वार कार्त्तवीर्य (सहस्रार्जुन) जमदग्निके शून्य आश्रम में आकर होमधेनुका बछड़ा लेगया इससे क्रुद्ध होकर परशुरामने उसकी एक हजार भुजाओंको काट डाली और इसपर सहस्रार्जुनके कुटुम्बी बदला लेने आये तो उनका सपरिवार नाश कर दिया। इस प्रकारके क्रूर-कर्मसे ब्राह्मण-समाजमें उनकी निन्दा भी हुई और एतन्निमित्त उन्होंने देशका त्याग भी कर दिया। परन्तु कुछ दिन बाद विश्वामित्र के पुत्र परावसुने परशुरामजीसे कहा कि तुम पराक्रमी क्षत्रियोंसे डरकर यहाँ रहते हो। यह सुनते ही परशुरामजीकी क्रोधाग्नि भड़क उठी और पहले जो बच गए थे उन क्षत्रियोंको खोज-खोजकर मार डाला। इस प्रकार इक्कीस वार क्षत्रियोंको मार कर भूमण्डलको निःक्षत्रिय बना दिया और अन्त में अश्वमेधयज्ञ करके निष्पाप हुए। उसी यज्ञकी दक्षिणामें परशुरामजीने कश्यपजीको पृथ्वीका दान दिया था। और कश्यपके आश्रयी ब्राह्मणोंने दानमें मिली हुई भूमिको खण्डशः विभाजित करके आपस में बांटकर उसके स्वामी हो गए। इस कारण वे सब वर्तमानमें 'खण्डवाय' (या खण्डेलवाल) नामसे विख्यात हैं। इसके अनन्तर परशुरामजी महेन्द्र पर्वत पर चले गए और वहाँ बहुत वर्षों तक तप किया। वाल्मीकिरामायण के बालकाण्डमें लिखा है कि—जिस समय जनकपुरमें जनकादिके सम्मुख भगवान् रामचन्द्रने शिवके धनुषको तोड़कर सीतासहित स्वदेश आरहे थे उस समय परशुरामने उनका रास्ता रोक कर कहा कि तुमने जो धनुष तोड़ा है वह तो शैव था, अब मैं विष्णुसे प्राप्त हुए ऋचीक का 'वैष्णव' धनुष लाया हूँ इसको तोड़ो तब तुम्हारे पुरुषार्थका पता लगेगा। भगवान् रामचन्द्र धनुष पर बाण चढ़ाकर बोले कि "कहो इस बाणसे आपकी गति रोक दूं या आपके तपसे उत्पन्न हुए लोकोंका हरण करूं।" यह सुनकर परशुरामजी चकित हो गए और तपःसंभूत लोकोंका हरण करवाके रामसे संपूजित होकर महेन्द्र पर्वत पर चले गए। महाभारत और वाल्मीकीयमें इनको भगवान्‌के अवतार सिद्ध नहीं किए हैं। भागवतमें सोलहवें और मत्स्यादिमें छटे अवतार बतलाये हैं। सह्याद्रिखण्ड से ज्ञात होता है कि परशुरामजी ने कौंकण देशको समुद्रसे निकालकर 'कोंकण' ब्राह्मणोंकी प्रतिष्ठा की थी और इस कारण वे परशुरामजीकी सृष्टिके ही माने जाते हैं। वैसे तो अनेक स्थानोंमें नदी पर्वत या ग्रामादिके नामोंका जमदग्नि या जामदग्नेय (परशुराम) से सम्बन्ध होनेके कारण बहुतसे मनुष्य उनको जमदग्निका आश्रम और जामदग्नेयकी जन्मभूमि बतलाते हैं। यथा—जयपुर राज्यान्तर्वर्ती सामोदके समीप 'जमदेवोंके वास' को जमदग्निकी वासभूमि या जामदग्नेयकी जन्मभूमि मानते हैं। परन्तु वास्तवमें वह असली जगह कहाँ है सो नहीं कहा जा सकता। बनारस जिलेमें 'तुर्तीपार' के समीप वाले खैरागढ़का प्राचीन नाम भार्गवपुर है। कहा जाता है कि इसी ग्राममें परशुरामजी प्रकट हुए थे। खैरागढ़से ३ कोस पर पश्चिममें 'रक्तोई' नामका एक ह्रद है, वहाँ वाले कहते हैं कि परशुरामजीने सहस्रार्जुनका वध इसी झीलमें किया था और उसीके रुधिरसे यह ह्रद पूर्ण हुआ था। आश्चर्य नहीं यह अनुमान सत्य हो। कुरुक्षेत्रमें भी तो उन्होंने क्षत्रियों के रुधिरसे ५ ह्रद पूर्ण किए थे। और उस भूमिको उत्तम बनाया था। अस्तु।

(१४) देवपूजा—

अक्षयतृतीयाके दिन प्रातःकालीन शौचस्नानादि नित्यकर्मादिसे निवृत्त होनेके अनन्तर शान्तिदायक शुद्धस्थानके भीतर तीन वेदी बनावे या तीन चौकी स्थापित कर उनको श्वेत, पीत और रक्तवर्णके वस्त्रों से आच्छादित करके सुश्वेत अक्षतोंके तीन अष्टदल बनावे और उनपर स्वर्ण-निर्मित या चित्रमय मूर्ति स्थापन करे। कदाचित् तीन वेदी न बन सकें तो एक ही पर पृथक्-पृथक् तीन अष्टदल बनाकर तीनों पर देवत्रयका स्थापन करे। यदि उक्त देवोंके मन्दिर हों तो वहाँ उनके समक्षमें पूजन करे। साथ ही अन्न जल या सुवर्णादि जो कुछ प्राप्तव्य हों उनको भी यथोचित रख दे। तत्पश्चात् पूर्वाभिमुख बैठकर नीचे लिखे अनुसार संक्षिप्त विधिसे (या सुविधा हो तो शास्त्रोक्त विशेष विधिसे) सबका पूजन करे।

(१५) पूजन विधि—

दीपं प्रज्वाल्य पूजासामग्रीं यथास्थाने संस्थाप्य, 'ॐ अपवित्रे' ति मन्त्रेण आत्मानं जलेनाभिषिञ्च्य हरिंस्मृत्वा 'सुमुखश्चेति' पठित्वा। दक्षिणहस्ते गंधाक्षतफलपुष्पजलान्यादाय, देशकालौ संकीर्त्य मम कायिकवाचिक मानसिक सांसर्गिक पातकोपपातकप्रशमनपूर्वक सकलशुभफलप्राप्तिकामनया श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अक्षयतृतीयांगीभूतं नरनारायणपूजनं, हयग्रीवपूजनं, परशुरामपूजनं च यथालब्धोपचारेणाहं करिष्ये। तदङ्गतया निर्विघ्नतार्थं गणपतिपूजनं च करिष्ये इति गणपतिं पूजयेत्। ततः शान्ताकारेत्यादिना देवान् ध्यायेत्। ॐ नारायणाय नमः। (इति नाममंत्रेण पृथक् पृथक् वा सकृदेव) आवाहनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतानि समर्पयामि पादयोः पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं समर्पयामि। स्नानं गन्धं अक्षतं (वस्त्रं यज्ञोपवीतं) समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं फलं ताम्बूलं दक्षिणां प्रदक्षिणां च समर्पयामि। ततः सकर्पूरघृतवर्तिकात्रयं प्रज्वाल्य गंधादिभिः समभ्यर्च्य आरार्त्तिक्यं कुर्यात्। ततः यज्ञेनयज्ञमयजन्तेति मंत्रपुष्पांजलिं दत्वा, शान्ताकारेत्यादिना स्तुतिं पठेत्। पुनरेकस्मिन्पात्रे जलफलपुष्पाक्षत गंधानि गृहीत्वा। पात्रं करांजलिपुटोपरिधृत्वा। ॐ रैणुकेय महावीर्य! क्षत्रियान्वयमर्दन!। आयुःप्रयच्छ मे राम जामदग्न्य नमोस्तुते।" इति मन्त्रेण परशुरामसमीपे विशेषार्घ्यं दद्यात्। पुनः प्रणम्य, पुष्पाक्षतं गृहीत्वा 'यान्तुदेवे' तिदेवान् विसर्जयेत्। ततः 'मम धर्मशास्त्रोक्तफलप्राप्तये अन्नजलफलसुवर्णादीनि सत्पात्रेभ्यः दद्यात्।'। इति।

(१६) श्री नृसिंहचतुर्दशी—

यह बात आबालवृद्ध नरनारी पर्यन्त विख्यात है कि हिरण्यकशिपुका पुत्र प्रह्लाद भगवान्का भक्त था और हिरण्यकशिपुको यह आचरण असह्य हो रहा था। उसने इस आचरणसे प्रह्लादको च्युत करने के लिये उसे अनेक प्रकार से डराया धमकाया और समझाया भी परन्तु प्रह्लादका रंग पक्का था—सामान्य प्रकार से वह नहीं उतरा। तब प्रजा-पीड़क, दुराग्रही हिरण्यकशिपुने नागबहुल श्रावणमें प्रह्लादको सर्पों के द्वारा सर्पोंसे कटवाया। मेघबहुल भाद्रपदकी मूसलाधार वर्षामें नंगे शरीर भिगोवाया। आश्विनके यमदंष्ट्र पक्षमें विषपूर्ण भोजन करवाया। कार्तिककी काली रात्रिके अंधकारपूर्ण जनशून्य जंगलमें छुड़वाया। मार्गशीर्षके नागरिक मार्गोंमें आघातित करवाया। पौषके शीतकम्पित वायुमें वस्त्रविहीन रख कर संतापित किया। माघीय उत्ताल तरंगों वाले समुद्रमें फिंकवाया और फाल्गुणमें अपनी बहिनके बाहुपाश में बंधवा कर प्रज्वलित प्रचण्ड अग्निमें दग्ध भी करवाया। परन्तु इतने कष्ट देने पर भी प्रह्लादकी अविचल धारणा तिल भर विचलित नहीं हुई। वास्तव में ये सब कष्ट प्रह्लादको नहीं हो रहे थे उसके परमपिता परमेश्वरको हो रहे थे; और वही प्रह्लादकी रक्षा कर रहे थे। अन्तमें एक दिन वैशाखकी घोर गर्मी के समय हिरण्यकशिपुने हर्म्यके लोहस्तम्भको अंगारों से लाल करवा कर प्रह्लादसे कहा कि अगर तेरा

ईश्वर ही रक्षक है तो इस अग्निसम लोहस्तम्भके चिपक जा। फिर क्या देर थी, प्रह्लादने उसको भी ईश्वर मान कर उसके तत्काल चिपक गया और बहुत देर तक उसका आलिंगन करता रहा। (जन श्रुतिमें यह भी विख्यात है कि चिपकनेकी आज्ञा होने पर प्रह्लादको उसी संतप्त स्तम्भमें एक पिपीलिका–चींटी–दिखाई दी और उसीको ईश्वरका संकेत मान कर वह चिपक गया।) अस्तु, बारम्बारके असहनीय कष्टोंको सहते सहते भगवान् अकथा गये, अब उनसे नहीं रहा गया। जिस समय हिरण्यकशिपुने प्रह्लादसे यह कहा कि— "यदि तेरा ईश्वर पृथ्वीके प्रत्येक पदार्थ में ही प्रविष्ट है तो इस खंभेमें बतला कहां है ?" उसी समय प्रकाशमान तेजःपुञ्ज समन्वित नरसिंह भगवान् खंभेमेंसे सहसा प्रकट हुए और अपने सुतीक्ष्ण नखोंसे हिरण्यकशिपुका वक्षस्थल विदीर्ण कर दिया। उस समय उनके दावानल तुल्य तेजके सम्मुख न तो कोई खड़ा रह सका और न समीप जा सका। अंतमें लक्ष्मीजीके अनुरोधसे प्रह्लादने उनको शांत किया। वास्तवमें प्रजा-पीड़क, अत्याचारी, और दुराग्रही व्यक्तियों का इसी प्रकार नाश होता है और किएका प्रतिफल दिया जाता है।

(१७) लीला-महोत्सव—

हिरण्यकशिपु जैसे महापराक्रमी असुरका संहार और तेजःपुञ्ज समन्वित नरसिंह जैसा अभूतपूर्व अवतार और साथ ही शैशव अवस्थामें भगवद्भक्तिकी दृढ़ धारणाको सत्यध्रुव रखने वाले प्रह्लाद जैसा भक्त और कौन होंगे ? ऐसे महत् पुरुषोंके चरित्रका प्रतिवर्ष प्रदर्शन होते रहना अवश्य ही आवश्यक है। और इसी विचारसे नृसिंह-जयन्तीकी लीला भारतके अनेक स्थानोंमें की जाती है। विशेषता यह है कि जिस प्रकार रामजयन्तीके अवसरमें अनेक जगह बड़े आयोजनकी 'रामलीला' होती है और उनमें यदाकदा हनुमान्जीका स्वरूप धारण करने वाला आवेशमें आजाता है उसी प्रकार 'नृसिंहलीला' में भी नरसिंहके भव्य स्वरूपको धारण करने वाला आवेश में आजाता है और क्रोधाभिभूत होकर अपने या अन्य किसी दुराग्रहीके शरीरको अपने सामान्य नखों से ही फाड़ डालता है। राजपूतानाके जयपुर जैसे कई नगरोंमें यह लीला बड़े समारोहसे की जाती है। इसके उपयोगी वहाँ वेशभूषा आदिका संग्रह भी स्थायी होता है। जयपुरमें इस लीलाके उपयोगी अति विशाल आकारके दानव और सूक्ष्म आकारके मानव रखे हुए हैं और उनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकारके चेहरे सुरक्षित हैं। वहाँ यह लीला त्रिपोलियाके सामने चौड़ारास्ताकी सड़क पर होती है। और हजारों नर नारी इसको देखनेके लिये एकत्र होते हैं। लीलामें उपरोक्त बातोंको प्रत्यक्ष कर दिखलाते हैं। इसमें राज्यसे भी सहायता और सहयोग प्राप्त होता है। जयपुरके अतिरिक्त तत्समीपी चौमूं,सामोद आदिमें भी यह लीला की जाती है और साधारण समारोहकी होने पर भी देखने योग्य होती है। चौमूँके समीप 'टाँकरडा' की लीला भी दर्शनीय होती है। वहाँ दानव और मानवादिके चेहरे अधिक भी हैं और सुरक्षित भी रहते हैं। कहा जाता है कि एक बार वहाँ नृसिंह स्वरूपधारी पात्र आवेश में आगया था और उसने एक दुराचारी बलवान् व्यक्तिका पेट फाड़ कर उसे फेंक दिया था। अस्तु।

(१८) व्रत-विधि—

धर्मशास्त्रोंमें लिखा है कि १ 'राम' २ 'कृष्ण' ३ 'वामन' और ४ 'नृसिंह' जयन्तीका व्रत अवश्य करना चाहिये और यथासाध्य उत्सव मनाना चाहिये। नृसिंहावतार वैशाख शुक्ल चतुर्दशी सोमवार कृत्तिका नक्षत्र और सायंकाल के समय हुआ था। अतः यह चतुर्दशी प्रदोष व्यापिनी लेना चाहिये। यदि वह दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो या दोनों दिनमें ही न हो, अर्थात् पहले दिन सूर्यास्तसे पहले आजाय और दूसरे दिन प्रदोषकाल (दो घड़ी रात्रि व्यतीत होने तक) रह जाय—अथवा पहले दिन दो घड़ी रात गए पीछे आवे और दूसरे दिन सूर्यास्तसे पहले उतर जाय तो ऐसे अवसरमें दूसरे दिन व्रत और उत्सव

करना चाहिये। क्योंकि इस व्रतमें अनन्त (त्रयोदशी) वेधा वर्जित है। यदि प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशीको स्वाति नक्षत्र, शनिवार, सिद्धियोग और वणिजिकरण हो तो ऐसा योग किसी पूर्वपुण्यके प्रभाव या सौभाग्य के प्रतापसे ही प्राप्त होता है। ऐसे योगमें एतन्निमित्त व्रतोपवासादि करनेसे हत्या जैसे पाप भी कट जाते हैं और अनंतगुणा फल मिलता है। कूर्म, नृसिंह, बौद्ध और कल्की जयन्तीमें सायाह्न व्यापिनी तिथि ही ली जाती है। व्रतीको चाहिये कि उस दिन प्रातः स्नानादि नित्य कर्मसे निवृत्त हो कर ताम्रादि के पात्रमें जल लेकर "श्रीनृसिंह महोग्रस्त्वं दयां कृत्वा ममोपरि। अद्याहं च विधास्यामि व्रतं निर्विघ्नतां नये।" इस मन्त्रको उच्चारण करके प्रतिज्ञा संकल्प करे। उस दिन क्रोध, लोभ, दुराचरण और मिथ्या भाषण आदिका त्याग रक्खे। और फिर मध्याह्नके समय समीपके जलाशय पर जाकर आंवला, गोबर, और तिल मिलाये हुए जलसे स्नान करनेके अतिरिक्त शुद्धोदकसे फिर स्नान करे। स्मरण रहे कि इस दिन के नित्य कृत्यमें दन्त-धावनके बदले बारह कुल्ले कर लेवे। फिर घर आकर नित्य नियमादिकी पुनरावृत्ति करनेके अनन्तर सायंकालके समय शुद्ध भूमि में गोबरसे चौका लगावे (या चौकी पाटा आदि पर) अक्षतोंका अष्टदल लिखे और उसमें सुवर्ण निर्मित सिंह और नृसिंहकी तथा उनके वाम भागमें लक्ष्मीकी अग्न्युत्तारण की हुई मूर्तियां स्थापित करे। और उनका वेद मंत्रोंसे अथवा पौराणिक मंत्रोंसे या दोनों से सम्मिलित रूपमें षोडशोपचार पूजन करे। ऐसा न बन सके तो 'श्रीनृसिंहाय नमः' इस नाम मंत्रसे आवाहनादि पूजन करके आरती करे।

(१६) पूजाविधि—

तत्रादौ पूजोपयोगित्वेन नृसिंहमन्त्रन्यासादिकं विधाय (तद्यथा) "उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।" अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीनृसिंहो-देवता 'हं' बीजं 'ई' शक्तिः न्यासेविनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्री नृसिंहदेवतायै नमः हृदि। हं बीजाय नमः गुह्ये। ई शक्तये नमः पादयोः। उग्रं वीरं अंगुष्ठाभ्यां नमः। महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः। ज्वलन्तं सर्वतोमुखं मध्यमाभ्यां नमः। नृसिंहं भीषणं भद्रं अनामिकाभ्यां नमः। मृत्युमृत्युं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। नमाम्यहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (एवं हृदयादि०) ततो ध्यानम्—

नृसिंहं भजे जानुविन्यस्त बाहुं
त्रिनेत्रं भुजप्रोल्लसच्छङ्खचक्रम्।
कृपानूपमज्योतिषा त्रस्तदैत्यं
शिरः शोभिदंष्ट्रासुदीप्तोग्रजिह्वम् ॥१॥
माणिक्याद्रिसमप्रभं निजरुचा संत्रस्तरक्षोगणम्।
जानुन्यस्तकराम्बुजं त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम्।
बाहुभ्यां धृतशङ्खचक्रममलं दंष्ट्रोग्रचक्रोल्लस-
ज्ज्वालाजिह्वमुदग्रकेशनिचयं वन्दे नृसिंहं विभुम् ॥२॥

इति ध्यात्वा। मानसोपचारैः सम्पूज्य। शङ्खस्थापनं विधाय पूजां कुर्यात्।

"आगच्छ देवदेवेश! प्रह्लाद वरदायक! यावत् पूजां करोम्यत्र तावत्त्वं सुस्थिरो भव।" 'सहस्रशीर्षा०' (आवाहनं) नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितं नृसिंहदेव देवेश आसनं प्रतिगृह्यताम्। 'पुरुषऽएवे०' (आसनं) गङ्गादि सर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनया हृतं। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्। 'एतावानस्य०' (पाद्यं) नृसिंहाच्युत देवेश! लक्ष्मीकान्त! जगत्पते! अर्घ्यंगृहाण देवेश लोकानां वरदायक। 'त्रिपादूर्ध्व०' (अर्घ्यं) कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतं। आचम्यतां त्वया देव! मया दत्तं हि भक्तितः। 'तस्माद्विराड०' (आचमनं) पञ्चामृतेन स्नपनं करिष्ये सर्वसिद्धिदम्। पयोदधिघृतंगव्यं माक्षिकं शर्करायुतम्। (पञ्चामृतस्नानं) तापी पयोष्णी कृष्णा च ताभ्यः स्नानार्थमाहृतं। तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। 'यत्पुरुषेण०' (स्नानं) पीताम्बर युगं देव! सर्वकार्यार्थ सिद्धये। मया निवेदितं भक्त्या नृसिंह वरदायक। 'तंयज्ञं०' (वस्त्रं) लक्ष्मीकान्त नमस्तेस्तु त्राहिमां भक्तवत्सल! ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाणासुर

नाशक ! 'तस्माद्यज्ञा०' (यज्ञोपवीतं) चन्दनं शीतलं दिव्यं चन्द्रकुंकुममिश्रितं। ददामि तव तुष्ट्यर्थं नृसिंह परमेश्वर ! 'तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः०' (गन्धं) अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः। नृसिंह देवदेवेश प्रीत्या त्वं स्वीकुरु प्रभो ! (अक्षतं) कालोद्भवानि पुष्पाणि तुलस्यादीनि वै प्रभो। पूजयामि नृसिंह त्वां लक्ष्म्या सह नमोस्तुते। 'तस्मादश्वा' (पुष्पाणि) कालागरुमयं दिव्यं सर्वदेव सुवल्लभम्। धूपं गृहाण देवेश सर्वकाम समृद्धये। 'यत्पुरुषं' (धूपं) दीपः पापहर प्रोक्तस्तमोराशि विनाशनः। दीपेन लभ्यते तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते 'ब्राह्मणोऽस्य' (दीपं) नैवेद्यं सुखदं चारु भक्ष्यभोज्य समन्वितम्। ददामि ते रमाकान्त ! सर्वपापक्षयं कुरु। 'नाभ्याऽआसी०' (नैवेद्यं)—आचमनीयं— इदं फलं मया देव०' (पूगीफलं) 'हिरण्यगर्भ गर्भस्थं०' (दक्षिणां) 'पञ्चवर्त्ति समायुक्तं सर्वमङ्गल दीपकम्। नीराजनं निरीक्षस्व रमाकान्त नमोस्तुते।' (नीराजनम्) मालती मल्लिकापुष्पैर्नागचम्पक संयुतैः। पुष्पाञ्जलिं गृहाणेमां पादाम्बुजयुगार्पितम्। 'यज्ञेनयज्ञ०' (मन्त्र पुष्पाञ्जलिं) 'प्रार्थना' नृसिंहदेव देवेश ! सर्वकाम फलप्रद। लक्ष्मीकान्त नमस्तुभ्यं पुत्रपौत्रादि वृद्धये ॥ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते सुरनायक। नमस्ते कमलाकान्त ! नमस्ते भक्तवत्सल। नमस्ते सर्वभूतेश वासुदेव नमोस्तुते ॥ (प्रार्थना) यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे। 'सप्तास्यासन्०' (प्रदक्षिणा)— 'नृसिंहाच्युत देवेश लक्ष्मीकान्त जगत्पते। अनेनार्घ्यं प्रदानेन सफलाःस्युर्मनोरथाः। (विशेषार्घ्यं दद्यात्) रात्रौ गीतवाद्यपुराणादिभिर्जागरणं कृत्वा। प्रभाते पुनः पूजयित्वा। सुवर्णमयं सिंहं गोभूहिरण्यतिलशय्यादिकं च (सत्पात्रेभ्यो दत्वा) पुनः प्रार्थ्य—मद्वंशे ये नरा जाता जनिष्यन्ते च ये पराः। तान्समुद्धर देवेश ! दुस्तराद्भवसागरात् ॥ पातकार्णव मग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुराशिभिः। जीवैस्तु परिभूतस्य महादुःखगतस्य मे ॥ करावलम्बनं देहि शेष शायिन् जगत्पते। श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन ॥ क्षीराम्बुधिनिवासेश चक्रपाणे जनार्दन। व्रतेनानेन देवेश ! भुक्तिमुक्ति प्रदो भव। (इति पूजाविधिः)।

(२०) प्रमाणवाक्य—

'वैशाखस्य चतुर्दश्यां सोमवारेऽनिलर्क्षभे। अवतारो नृसिंहस्य प्रदोषसमये द्विजा।' (नृसिंहपुराण) स्वातिनक्षत्रयोगे च शनिवारो महद्व्रते। सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा। — 'पुंसां सौभाग्ययोगेन लभ्यते दैवयोगतः। सर्वैरेतैस्तु संयुक्त हत्याकोटिविनाशनम्।' (नृसिंहपुराण) — कूर्म सिंह बौद्ध कल्की अवतारे च सायाह्नव्यापिनी ग्राह्या। यदा पूर्वापरदिने सायाह्ने भूततिथिः वा उभय दिनेऽपि न चेत् तदा परैव ग्राह्या। अनंगेन समायुक्ता नचोपोष्या चतुर्दशी। धनापत्यैर्विनश्यन्ति तस्मात्तां परिवर्जयेत्।' (इति हेमाद्रि, माधव, मदनरत्नादयो लिखिताः)।

वर्धापन

[ले०— श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वतः विद्याभूषण विद्यावागीश विद्यानिधि]

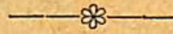
'श्रीस्वाध्याय' पत्रके सुयोग्य सम्पादक श्री पं० हरदेव शर्मा जी त्रिवेदी — जो कि पहलेसे ही विविध-विरुदावली-विभूषित हैं — गत मासमें काशीकी सनातनधर्म विराट् संस्था श्रीभारतधर्ममहामण्डलके द्वारा "पण्डितभूषण" की पदवी देकर सत्कृत किये गये हैं। यह सूचना महामण्डलके मुखपत्र 'सूर्योदय' के १६।३ अङ्कके २६४ पृष्ठमें दी गई है। इसके लिए उक्त महामण्डलने अपनी वास्तविक गुणज्ञताका परिचय दिया है; इस पर हम महामण्डलको धन्यवाद देते हैं और श्री त्रिवेदीजीको भी इस सम्मान पर वर्धापन (वधाई) देते हैं।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

सम्वत् २००१ वि० का भीषण भविष्य

संसारकी सामरिक आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति पर शास्त्रीय विचार

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']



चान्द्रमानसे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शनिवार ता० २५ मार्च और सौरमानसे वैशाख कृष्ण ५ गुरुवार ता० १३ अप्रैल को हमारा नव-वर्ष और महाराजा विक्रमादित्यकी तृतीय सहस्राब्दी वा २१ वीं शताब्दी का ऐतिहासिक प्रथमवर्ष सं० २००१ प्रारम्भ हो रहा है। वर्षलग्न कुण्डली जगल्लग्न कुण्डलियोंकी ग्रह-स्थिति तथा राजा मन्त्री आदि दशाधिकारियों एवं वर्तमान महायुद्धारम्भ कुण्डलीकी ग्रहस्थिति पर सम्यक्तया विचार करनेसे प्रतीत होता है कि सहस्राब्दी परिवर्तनका यह ऐतिहासिक वर्ष न केवल भारतवर्ष ही अपितु समस्त संसारके लिए महान् परिवर्तन एवं अत्यन्त अनिष्टकारी सिद्ध होगा।

कालात्मा दिनकृन्मनस्तु हिनगुःसत्त्वं कुजो ज्ञोवचो—
जीवोज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः ॥

इस वचनानुसार दुःखस्वरूप वा यमस्वरूप (मृत्युनायक) शनिमहाराज स्वयं इस वर्षके सम्राट् पद पर आसीन हुए हैं, अतः अपने सहज स्वभावानुसार अखिल विश्वको ये भांति-भांतिके अभूतपूर्व उत्पातों द्वारा दुःखसागरमें डुबानेका प्रयत्न करेंगे। ज्ञान एवं सुखस्वरूप देवगुरु बृहस्पति महामन्त्री पद पर आसीन हैं; ये संसारके संरक्षण एवं सुखप्रदान करनेमें तत्पर रहेंगे, परन्तु ये स्वयं राहुसे आक्रान्त हो कर वर्षलग्नसे व्ययमें और जगल्लग्नसे सुखस्थान में विराजमान हैं, अतः इनके सुख शान्तिके प्रयत्नों में भीषण बाधाएँ उपस्थित होंगी और ये अपने सत्प्रयत्नमें पूर्ण सफल न हो सकेंगे। वर्षराट् शनि का फल शास्त्रकारोंने यों लिखा है—

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनाः।
युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैर्भ्रमन्तिलोकाः क्षुधिताश्च देशान्

भावार्थ यह है कि शनिके शासनकालमें खण्ड-वृष्टि, भांति-भांतिके रोग, चोर डाकुओंके सन्ताप और दुर्भिक्षसे जनता क्षुधातुर होकर इधर-उधर भटकती फिरे तथा राजाओंमें युद्ध हो।

वर्षके महामन्त्री गुरुका फल—

विविधधान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुरतोयघना मुदितो भवेत्
नृपतयो जनपालनतत्पराः सुरगुरौ ननु मंत्रि समागते।

भावार्थ—सुवृष्टिसे पृथ्वी पर विविध धान्योंकी उत्पत्ति अच्छी होवे और नृपतिवर्ग प्रजापालनमें तत्पर रहें।

इसी वर्ष आषाढ़ माससे वर्षके महामन्त्री गुरुदेव अतिचारी हो रहे हैं और आगे कार्तिकमें वर्षराट् शनिदेव वक्री होंगे, उस समय पृथ्वी पर भयङ्कर उत्पात होंगे। महायुद्ध, महामारी, दुर्भिक्ष, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि भांति-भांतिके उपद्रवोंसे समस्त संसार संत्रस्त हो उठेगा। लिखा भी है—

अतिचारगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे।
हा-हाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ॥

गुरु अपनी अतिचारगतिसे इस वर्षमें तीन राशियों (कर्क सिंह कन्या) का भी स्पर्श करेंगे, ये असंख्य सैनिकोंके शवोंसे पृथ्वीको परिपूर्ण करने वाले हैं। लिखा भी है—

अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद्राशित्रयं स्पृशेत्।

तदा सुभटकोटिभिः प्रेतपूर्णा वसुन्धरा ॥
पीड़ा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राजविग्रहम् ॥

इस वर्ष शनि मिथुनराशिमें रहेंगे अतः राजाओं या राष्ट्रसञ्चालकों पर महान् आपत्तियाँ आवें और पृथ्वी रक्तसे पूर्ण हो, भयङ्कर दुर्भिक्ष पड़े तथा पश्चिममें संहारकारक भयानक युद्ध होवे। यथा—

मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारुणंयुद्धं नृपाणां च महद्भयम् ॥
मिथुने वा धनुर्मीने राशौ मन्दः समाश्रितः।
तदा भूपा विनश्यन्ति पृथ्वीशोणितपूरिता ॥

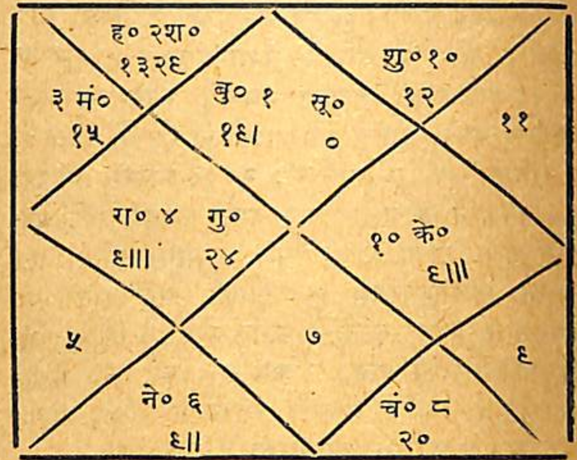
सिंहराशिस्थ गुरु संसारमें सुवृष्टि सर्वधान्योत्पत्तिसे सुभिक्षकारक हैं तथा म्लेच्छदेश पश्चिममें महायुद्ध और छत्रभङ्गके द्योतक भी हैं।

यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी ॥
म्लेच्छदेशे महायुद्धं छत्रभङ्गश्चविड्वरम्।
उद्वसः क्रियते लोकाः पश्चिमोत्तरवायुषु ॥

इस वर्षका नाम (बार्हस्पत्यमानसे) हेमलम्ब है, इसका फल यों लिखा है—"हेमलम्बः स्वामीराहुः, अतिरौरवम्, सरोगा लोकाः, भूकम्पादयः, उत्पाताः, वणिक्पीड़ा, चैत्रवैशाखमासयोः पीड़ा, धान्यादि मञ्जिष्ठादीनां मन्दभावः, परचक्रागमः, ज्येष्ठादि मासत्रयेषु धान्यं महर्घम्, चतुर्गुणोलाभः, भाद्रपदे महामेघः, अन्नसमता, मञ्जिष्ठामरिचलवङ्गदन्तमहावस्तुषु महर्घता, कार्तिके छत्रभङ्गः, लोकपीड़ा, सर्वधातुषु समर्घता, चतुष्पदानां पीड़ा, मार्गशीर्षादि मास चतुष्टयेषु राज्ञां स्वस्थता, लोकाः सुखिनः।

भावार्थ यह है कि 'हेमलम्ब' नामक संव्वत्सर अत्यन्त भयङ्कर होता है, इसका स्वामी राहु है, इस वर्षमें भूकम्पादि भांति-भांतिके उपद्रव होते हैं। जनता रोगसे पीड़ित रहे, व्यापारीवर्गको कष्ट, चैत्र वैशाखमें विशेष कष्ट तथा धान्यादि और मजीठ आदिके भाव सस्ते। राष्ट्र पर शत्रु आक्रमणका भय, ज्येष्ठसे ३ मास पर्यन्त अन्नकी मंहगाई। भाद्रोंमें बादल अधिक अन्नका भाव सम और लवङ्गादि किराना वस्तुओं की मंहगाई। कार्तिकमें राजयुद्ध, छत्रभङ्ग, लोकपीड़ा, सर्व धातुओंमें समता, पशुपीड़ा। मार्गशीर्षसे चार मास पर्यन्त राजाओंमें स्वस्थता और प्रजा सुखी।

यह ऐतिहासिक सौर वर्ष वैशाख कृष्ण ५ गुरुवार ता० १३ अप्रैलको प्रातः मेष लग्नमें प्रारम्भ हो रहा है इसकी ग्रहस्थिति निम्न हैं—



वर्ष लग्नसे लग्नेश सूर्य, धनेश-लाभेश बुध और व्ययेश क्षीण चन्द्रके साथ अष्टम गया है तथा अष्टमेश गुरु राहुके साथ व्ययमें पड़ा है। इसी प्रकार जगल्लग्नका सुखेश चन्द्रमा नीचका हो कर अष्टम गया तथा लग्नेश मङ्गल, शनि राहुकी कर्तरीमें आ गया है, इन भयङ्कर कुयोगोंके परिणाम स्वरूप संसार में जन धनका भीषण विनाश होगा। सूर्य चन्द्र मङ्गल शनि राहुकी विषमस्थिति समस्त संसारको महान् आपत्तिमें धकेल देगी। रणचण्डीका भीषण अट्टहास होगा। दुर्भिक्ष, महामारी, गृहयुद्धादि उपद्रवों से प्राणिमात्रके प्राण सङ्कटमें पड़ जावेंगे। आततायी, चोर डाकू, लुटेरोंके आतङ्कसे प्रजा त्रस्त हो उठेगी। आर्थिक सङ्कट, खाद्यसामग्री अन्नादिके अभाव और यातायातकी असुविधाओंके कारण प्रजाको महान् कष्ट होगा। दैवी आपत्तियाँ भी अपना भीषणरूप

प्रदर्शित करेंगी। जल वायु एवं अग्नि सम्बन्धी उत्पात अधिक होंगे। कहीं अवर्षणसे हाहाकार मचेगा तो कहीं अतिवर्षणसे प्रलयका रूप उपस्थित होगा। आंधी तूफानसे भी कई प्रान्तोंमें अत्यधिक हानि होगी। इस वर्षके आरम्भिक आठ मास संसारके लिए महान् अनिष्टकर सिद्ध होंगे। वैशाख ज्येष्ठसे ही युद्धका आतङ्क और भांति-भांतिके उपद्रव भीषण रूपसे बढ़ने लगेंगे। भारतकी सीमाओंके प्राणियों को महान् आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। कई अचिन्त्य अनपेक्षित असम्भवित भीषण घटनाएं घटित हो जावेंगी। व्यापारमें भारी उथल-पुथल मचेगी। कुछ-एक राष्ट्रोंके मन्त्रिमण्डलोंमें अचानक परिवर्तन होंगे। कई छोटे-छोटे राष्ट्रोंमें राज्यक्रान्ति होगी। भारतमें वायसरायकी कार्यकारिणीके सदस्यों तथा व्यवस्थापक सभामें भी नवीन परिवर्तन होंगे। जन्मकुण्डलीमें श्री रूजवेल्टका शनि नीचका है, और अब आषाढ़से मिथुन का शनि चन्द्रके साथ योग करेगा ग्रह उनके प्रभावको क्षीण करके उत्कर्ष में बाधक तथा अनेक प्रकारकी मानसिक चिन्ताओं का कारण बन रहा है; अतः सम्भव है कि अमेरिका के भावी चुनावमें श्री रूजवेल्ट महोदय राष्ट्रपति पद पर आसीन न रह सकेंगे। मित्रराष्ट्र शत्रुके विरुद्ध पश्चिममें जिस नये युद्ध मोर्चेकी कल्पनामें व्यस्त हैं वह मोर्चा परिस्थितिवशात् शीघ्र स्थापित न हो सकेगा।

वर्ष लग्नेश सूर्य अष्टममें और जगल्लग्नेश मंगल तृतीयस्थ क्रूरकर्तरीमें तथा रोगेश बुध लग्नमें है, अतः असंख्य प्राणि युद्ध, रोग, दुर्भिक्ष, भूकम्पादि उत्पातों से कालके कराल गालमें विलीन हो जावेंगे और शेष प्रजाका स्वास्थ्य पूर्णरूपेण उत्तम न रहेगा। रक्त प्रकोप (चेचक फोड़ा फुन्सी) वात पित्त प्रकोप, उदर रोग, हृद्रोग, अतिसार, मन्दाग्नि, अरुचि, श्वासरोग, वीर्य-विकार एवं संक्रामक रोगोंकी वृद्धि होगी। चन्द्र शनि के कारण जलवायु दूषित रहेगा। कोठियावाड़,गुजरात और मध्यभारतमें अतिवृष्टिसे बहुत हानि होगी। अमेरिका और इंग्लैण्डमें भयङ्कर रोगवृद्धि होगी।

धनभावमें शनि और धनेश व्ययमें है अतः इस वर्ष विश्वकी आर्थिक स्थिति बड़ी भयङ्कर रहेगी। संसारकी महान् सम्पत्ति शत्रु द्वारा नष्टभ्रष्ट होगी। सर्वत्र पैसेकी बहुत तंगी रहेगी। पूंजीपति एवं व्यापारीवर्ग सावधान रहें। शक्तिसम्पन्न मदोन्मत्त लोग अशक्तोंको बुरी तरह सतावेंगे। तृतीयेश लग्नमें और लग्नेश मंगल तृतीयस्थ क्रूरकर्तरीमें होनेके कारण किसी भी राष्ट्रकी सद्भावना दूसरे राष्ट्र पर न रहेगी। अनीतिके व्यवहार अधिक होंगे। राष्ट्ररक्षा, शान्ति-व्यवस्था एवं प्रजातन्त्र स्थापनाके नाम पर प्रजा-पीड़न अधिक होगा। चतुर्थेश नीचका अष्टम है और चतुर्थमें गुरु राहुका योग है अतः खेती, खनिज-पदार्थ, जलोत्पन्न पदार्थ, फल मूलादि, सार्वजनिकगृह (भवनादि) और यही गुरु प्रवासस्थानाधिपति होनेके कारण रेलवे मोटर लारियाँ जलयान व्योम-यान आदि यातायातके साधनों पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। यात्रियोंको भीषण कठिनाइयोंका साम्मुख्य होगा और यानोंकी दुर्घटनाएं भी अधिक होंगी। युद्धशिविर, उपहारगृह(सिनेमा नाटक होटलादि) तैल संग्रहालय एवं शस्त्रागारों पर भयङ्कर स्फोट एवं अग्निप्रलयकी सम्भावना है। पञ्चमेश अष्टमेशके विचारसे जन्मकी अपेक्षा मृत्युसंख्या अधिक होगी। षष्ठेश बुध लग्नस्थ हो कर क्रूराक्रान्त होने जा रहा है, अतः श्रमजीवि (मजदूरवर्ग) मध्यम स्थितिके लोग और नौकरीपेशा लोगोंमें शान्ति नहीं रहेगी। कई बड़े विभागोंमें असहयोग एवं हड़ताल जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। सर्वत्र रोगभय दिखाई देगा। देशका वाणिज्य-व्यवसाय एवं बड़े बड़े कारखाने भली प्रकार न चल सकेंगे। लोकोपयोगी संस्थाएं आर्थिक सङ्कटमें पड़ेंगी। सेनाकी स्थिति चिन्ताजनक रहेगी। सप्तमेश शुक्र व्यय में और सप्तमभाव सूर्यबुधसे दृष्ट है अतः परराष्ट्रिय सम्बन्ध एवं व्यापारादिके लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। अन्तःकलह आपसी दंगे फिसाद और गुप्त षड्यंत्र अधिक होंगे। सप्तमेश शुक्र उच्चका है अतः प्रत्येक आन्दोलनमें स्त्रियोंका सहयोग होगा और स्त्रीस्वातन्त्र्यान्दोलन प्रबल रहेगा। अष्टममें नीच

का चन्द्र और अष्टमेश मंगल क्रूरकर्तरीमें होनेसे इस वर्ष असंख्य प्राणी कालके गालमें समा जावेंगे। विशेषकर कन्या वृश्चिक धनुः मकर मीन वृषभ और मिथुन राशि वाले (यूरोपियन टर्की, मेसोपेटोमिया; बल्हेरिया,नार्वे, अरब, आस्ट्रेलिया, हगरी, स्पेन, इटली अफगानिस्थान, ग्रीस, पुर्तगीज, गलेशिया, ईरान, आयरलैण्ड,रशिया, एशियामायनर, अमेरिका,इंगलेण्ड, जर्मनी; जापान, इजिप्ट, बेल्जियम अफ्रिका आदि) प्रदेशोंमें भयानक संहार होगा। भाग्येश गुरु राहुके साथ है और भाग्यस्थान अष्टमेश भौमसे दृष्ट होनेके कारण संसारका भाग्यचक्र पतनोन्मुख होता जावेगा। दशमभाव गुरु राहु भौमसे दृष्ट और दशमेश शनिके कारण संसारकी राज्यव्यवस्था बहुत बिगड़ेगी, शासकों के सामने नित्य नई आपत्तियाँ आनेसे वे किंकर्तव्यविमूढ़से हो जावेंगे। प्रजामें असन्तोष एवं अराजकता बढ़ेगी। लाभेश भी शनि ही है अतः संसारकी उत्पादनशक्ति बहुत क्षीण होनेसे मनुष्योंकी आय में बहुत न्यूनता हो जावेगी। प्रचलित कागजी-मुद्राकी पर्याप्तता होने पर भी जीवनोपयोगी अन्यान्य आवश्यक वस्तुएं दुष्प्राप्य हो जावेंगी। व्ययेश गुरु राहुके साथ राज्येश शनिसे दृष्ट है अतः संसारमें प्रत्येक प्रकारके व्ययकी वृद्धि होगी। नये नये करोंके बोझका व्यय प्रजाको असह्य होगा।

भारतवर्ष

यह ऐतिहासिक वर्ष भारतके लिए भी भांति-भांतिकी विघ्नबाधाओं एवं आपत्तियोंका केन्द्र होगा। भारतकी राजनैतिक और आर्थिक परिस्थिति भयङ्कर होगी। पूज्य महामना मालवीयजीका प्रस्तावित सर्व-दल सम्मेलन पूर्णरूपेण सफल न हो सकेगा। 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक भलीभांति जानते हैं कि गत वर्ष अन्य सब भविष्यदर्शी सहयोगियोंके मतसे अपना मत सर्वथा भिन्न रखते हुए हमने स्पष्ट लिखा था कि— "भारतका राजनैतिक गत्यवरोध अभी दूर न होगा और नेता लोग भी बन्धनमुक्त नहीं होंगे" तदनुसार अभी तककी परिस्थिति पाठकोंके सम्मुख ही है। अब इस नये वर्ष सं० २००१ का अधिपति वा सर्वोच्चाधिकारी अनार्यप्रकृति संहारप्रिय व्यक्तिवादी शनिदेव है। यह इस वर्षके जगल्लग्नका तथा वर्तमान महायुद्धारम्भ (ता० १ सितम्बर १९३९ ई०) कुण्डलीका राज्येश भी है, अतः संसारकी राज्य-व्यवस्थामें यह किसी प्रकार भी सुखकारक शान्तिप्रद सुधार न होने देगा। पाश्चात्त्यमतानुसार भारतकी राशिका स्वामी भी यही है और राशिसे राज्येश जगल्लग्नके व्ययमें गया है अतः इस वर्ष भी भारतका राजनैतिक गत्यवरोध दूर होने और नेताओंकी उन्मुक्तिका योग हमें प्रतीत नहीं होता। वैशाखमें शनिमिथुन राशिमें प्रवेश करेंगे और आगे आषाढ़में गुरु अतिचारी तथा कार्तिकमें शनि वक्री होगा, उस समय संसारकी राजनैतिक एवं सामरिक परिस्थिति में अभूतपूर्व उलटफेर होनेकी सम्भावना है। भारत में भी पूर्व दक्षिण पश्चिमकी ओरसे शत्रु आक्रमण एवं संघर्षका भय उपस्थित होगा। उस समय अमेरिका और इङ्गलेण्डकी ओरसे सहयोग और शान्तिस्थापना के नाम पर प्रबल प्रयत्न किये जावेंगे। और यदि परिस्थिति अनुकूल रही (जिसकी आशा थोड़ी है) तो ज्येष्ठके अनन्तर विदेशके बड़े बड़े राजनीतिज्ञ भारतीय नेताओंसे सहयोगके लिए परामर्श करेंगे।

वैशाख शुक्लसे भारतमें आधिदैविक आधि-भौतिक उपद्रवोंका उपक्रम आरम्भ होगा। रक्तपित्त विकार, विषूचिका (हैजा), अतिसार (पेचिस) तथा चेचक आदि भांति भांतिके रोगोंकी वृद्धि होगी। युद्धकी भयङ्करता भी बढ़ेगी। राजस्थान मरुस्थल प्रभृति प्रदेशोंमें भीषण अग्निकाण्ड होंगे और आंधी तूफानोंका भी प्राबल्य रहेगा, चोर डाकू लुटेरोंका भय बढ़ेगा, हत्याकाण्ड अधिक होंगे। अन्न घृतादि प्रत्येक पदार्थके भाव यहाँसे पुनः तेज होने लगेंगे और कई वस्तुएं दुष्प्राप्य हो जावेंगी। कण्ट्रोल और राशनिंग-पद्धति पूर्णरूपेण सफल न हो सकेगी। यात्रियोंको भयङ्कर कष्ट होगा। गाड़ियोंमें कई दुर्घटनाएं होंगी। उड़ीसा बङ्गाल बम्बई सूरत महाराष्ट्र काठियावाड़ मद्रास मैसूर राजस्थान आदि प्रान्तोंमें

प्रजाको अनेक आपत्तियाँ सहन करनी होंगी और दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बनी रहेगी। श्रावणमें सूर्यग्रहण के फलस्वरूप समस्त संसारमें युद्धादिजन्य महाविनाश का अन्तिम अकाण्ड ताण्डव होगा। भारत पर भी इस ग्रहणका भयानक प्रभाव पड़ेगा, अतः कई आश्चर्योत्पादक विचित्र घटनाएं घटित होंगी। इसका विशेष विवरण हम आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होने वाले 'ग्रीष्माङ्क' में लिखेंगे। पाठक वह अङ्क अवश्य देखें।

इस वर्षका उत्तरार्ध महामना मालवीयजी, श्रीमहात्मा गान्धीजी और श्री वीर विनायक दामोदर सावरकरजीके स्वास्थ्यके लिए चिन्ताकारक रहेगा, आध्यात्मिक उन्नति सम्मान और प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे उत्तम है। वर्षका पूर्वार्ध श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू के उत्कर्ष एवं स्वास्थ्यके लिए अच्छा नहीं है।

वर्षके पूर्वार्धमें शनिराहुकी स्थिति सम्राट् षष्ठजार्ज महोदयके लिए चिन्ता एवं महत्वपूर्ण कार्योंमें वाधा कारक रहेगी। इनके जन्मलग्नमें राजयोगकारक शनि उच्चका है अतः अन्तिम परिणाम अच्छा रहेगा। भाद्रपद शुक्लमें जब शनि मिथुनके १५ अंशका हो जायेगा उसके अनन्तर जर्मनीके भाग्यविधाता हर हिटलरका भाग्यसूर्य अस्ताचलकी ओर जाने लगेगा। वर्षके उत्तरार्धमें किसी विश्वविख्यात नेता वा संसारप्रसिद्ध शासककी मृत्यु होगी।

व्यापार

इस वर्ष व्यापारकी स्थिति बड़ी अनवस्थित रहेगी, जिससे संसारके बहुतसे धनी निर्धन एवं निर्धनी धनाढ्य बन बैठेंगे। अतः व्यापारी वर्गको चाहिए कि अपनी अभीष्ट वस्तुका प्रत्येक मासका सूक्ष्म विचार और अपने जन्मपत्र वर्षफलके अनुसार व्यापारकी सम्मति किसी अच्छे अनुभवी विद्वान् ज्योतिषीसे पत्र द्वारा वा प्रत्यक्ष मिलकर ले लिया करें। इस वर्ष रुईमें १००) १५०) के लगभग, सुवर्ण चांदीमें १०) १५) और गेहूँ अलसी आदिमें ५) ६) के लगभग अचानक तेजी मन्दी आवेगी। गेहूँ, घृत, रुई, कपास, लोहा, ताम्बा, पित्तल, सुवर्ण, चांदी, सोडा, तैल, रंग, बारदाना, लकड़ी, कोयला, पेट्रोल, मट्टीका तैल, मादकद्रव्य, औषधी एवं रासायनिक पदार्थोंका भाव प्रायः तेज रहेगा।

चैत्र शुक्लमें—रुई, गेहूँ, अलसी, गुड़, शक्कर, बाजरा, मोठ, बिनौला, बारदाना, घृत, आलू, मजीठ, लाख, लालरंग, अलसी, तोरिया, और सरसोंका भाव तेज रहेगा। ति० ६ के उपरान्त रुई में १०) और चांदीमें ३) के लगभग तेजी होगी।

वैशाखमें—रुई, घृत, गुड़, तैल, अन्न, सुवर्ण, चांदी और अलसीका भाव प्रायः तेज रहेगा। वैशाख शुक्लमें रुई २५) के लगभग तेज होगी। गेहूँकी नई फसल तेज निकलेगी।

ज्येष्ठमें—संसारमें उत्पात अधिक होंगे। युद्ध उग्ररूप धारण करेगा। रक्तपित्त विकार, महामारी आदि रोग अधिक होंगे। गरमी भयङ्कर पड़ेगी, अग्निकाण्ड होंगे। अलसी, मूँगफली, रुई, घृत, गुड़, सुवर्ण, चांदी, चावल और अन्नका भाव प्रायः तेज रहेगा। इस मासमें प्रत्येक वस्तुओंके भावमें बहुत घटावढ़ी चलेगी। अन्तमें रुख तेजीकी ओर रहेगा। राजनैतिक अशान्त वातावरणके कारण व्यापारीवर्गमें बड़ी हलचल मचेगी।

आषाढ़में—इस मासमें गेहूँ, सुवर्ण, चांदी, रुई, आदि प्रत्येक वस्तुमें कुछ मन्दी आवेगी। आषाढ़वदी में रुईमें १०) १२) टके, गेहूँ जौ चणामें ।) के लगभग मन्दीके योग हैं। चांदी सोना सूत घृत तैलमें घटबढ़ चलेगी। वायुका प्रकोप रहेगा। शुक्लपक्षमें प्रत्येक वस्तुओंके भावमें बहुत उलटफेर होगा, अतः व्यापार सावधानीसे करना चाहिए।

शुद्ध वर्षमान क्या है ?

[लेखक—दैवज्ञभूषण श्री पं० रामकृष्ण जी बक्षी ज्योतिषरत्न]



ताजिक नीलकण्ठीमें वर्ष-प्रवेशकाल बनानेकी रीति इस प्रकार दी है:—

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्न समागणात् ।
खवेदाप्त घटीयुक्ता जन्मवारादि संयुताः ॥
अब्दप्रवेशे वारादि सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥

सावनमानसे ३६५ दिन १५ घटी ३१ पल ३० विपलमें सूर्य उसी स्पष्ट पर आजाता है, यह मानकर यह रीति बनाई गई है, ऐसा पाया जाता है।

जन्म समयमें सूर्य स्पष्ट जितना राश्यादि है उतना ही पूरा-पूरा जिस समय पर हो वह काल पुनर्वर्ष प्रवेशका होना चाहिये। परन्तु अनुभवसे इसमें अन्तर आता है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि आजसे लगभग ४५० वर्ष पहिले गणितकी सुलभताके लिए जो रीति बनाई गई उसमें कालान्तर संस्कार नहीं दिया गया है।

इस समय प्रचलित वर्षध्रुवा नीचे लिखे अनुसार है:—

(१) ग्रहलाघव १।१५।३१।३०
(२) केतकी १।१५।२२।५७

श्री पं० नीलकण्ठ दैवज्ञने सूर्यसिद्धान्तीय शके ४२७ का वर्षमान १।१५।३१।३१।२४ को गणित की सुगमताके लिए १।१५।३१।३० ग्रहण करके सम्वत् १६४४ में ऊपरकी रीति बनाई है।

प्राचीन ऐतिहासिक माहिती देखनेसे समय समय पर विद्वानोंने वेधसिद्ध वर्षमान जो माना है वह इस प्रकार है:—

शके		नाम सिद्धान्त वा विद्वान्	दि० घ० प० वि० प्र०वि०
ई० सन् पूर्व	१३३८	वेदाङ्गज्योतिष	३६६। ०। ०। ०। ०
,,	५४१	पितामह सिद्धान्त	३६५। २१। १५। ०। ०
शके	४२७	सूर्यसिद्धान्त	३६५। १५। ३१। ३१।२४
,,	५५०	आर्यसिद्धान्त	३६५। १५। ३१। १५। ०
ई० सन्	८३६	थेपित्	३६५। १५। २२। ५७।३०
शके	१०७२	ब्रह्मगुप्त	३६५। १५। ३०। २२।३०
ई० सन् बारहवीं शती		शियोनियद	३६५। १४। ३३। ३२।४५
शके	१४४२	ग्रहलाघव	३६५। १५। ३१। ३०। ०
,,	१८००	ज्योतिर्गणित (केतकर)	३६५। १५। २२। ५७। ०
,,	१८१५	आधुनिक यूरोपियन	३६५। १५। २२। ५६.८७
,,	१८२६	प्रिन्सिपल आपटे (उज्जैन)	३६५। १५। २२। ५८। ०
,,	१८३१	विष्णुगोपाल नवाथे	३६५। १४। ३१। ५३।२५

इसके अवलोकनसे ज्ञात होगा कि वेदाङ्ग ज्योतिष समयसे वर्षमानमें बहुत अन्तर हो गया है और इस प्रकार वर्षमान दिन प्रतिदिन ऋण होता जा रहा है। इसकी पुष्टि उज्जैन वेधशालासे जो Astronomical Ephemeris निकलती है उसके सन् १६४३-४४ के Sidereal time व सायन मेषार्क समयके अन्तर

से भी होती है—

Sidereal time

ता०	१।१।४३	—	१८।४०।२३
ता०	१।१।४४	—	१८।३६।१६
	अन्तर		०।१।४ ऋण

सायन मेषार्क

ता०	२२।३।४३	—	०।०।४६
ता०	२१।३।४४	—	०।०।३१।३१
	अन्तर		०।०।१४।२६ ऋण

इससे यह तो सिद्ध होता है कि वर्षमान प्रतिवर्ष ऋण होरहा है। किन्तु इस समय क्या है ? यह प्रश्न उपस्थित होता है।

स्व० श्री० पं० वें० बा० केतकरने अत्यन्त परिश्रम करके शके १८०० में गणितको शुद्ध किया। उस गणितसे निर्माण किये हुए पञ्चाङ्गके दैनिक तिथ्यन्त काल, ग्रहोंके लोप-दर्शनकाल, स्पष्ट ग्रह, युतिकाल इत्यादि वेधसे मिलानेसे ठीक मिलते हैं। ऐसा सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब वेधशाला उज्जैन अपने पत्र नं० १६४ ता० १२-४-४१ में स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त केतकी ध्रुवाका आधुनिक यूरोपियन व प्रिन्सिपल आपटेके वेधसिद्ध ध्रुवासे भी मिलान होने से पुष्टि होती है।

इस ध्रुवासे वर्ष प्रवेशकाल बनानेसे प्रायः ठीक आता है और जन्मके सूर्य राशि अंश तो मिलते ही हैं; केवल कलाओं में साधारण अन्तर आता है जिससे लग्न नहीं बदलता। सन्धिलग्न होनेकी दशामें ही लग्न बदलनेकी शङ्का रहती है। ऐसी अवस्थामें हमको निष्पक्ष होकर इसीका आश्रय लेना चाहिए।

जोतिषशास्त्रके मुख्य दो अङ्ग हैं। १—गणित २—फलित। इससे यह तो निर्विवाद स्पष्ट है कि फल जोतिष गणितकी शुद्धता पर ही निर्भर है, पर इस ओर अभी वस्तुतः ध्यान नहीं हुआ है और पुरातनके यानि १४३८ वर्ष पहिलेके वर्षमान पर गणितकी सुलभताके लिए जो ध्रुवा बना दिये गए हैं उन्हींको मानकर वर्षफलादि निर्माण किये जाते हैं; जिनके फलित न मिलनेसे प्रायः जनताको ज्योतिषशास्त्रके प्रति अविश्वासका भाव उत्पन्न हो रहा है। "चित्रमय जगत्" माहे दिसम्बर १६४३ के "फलज्योतिष खरें कीं खोटें" नामक शीर्षकका लेख पढ़नेसे इसका भास होगा। इतने पर भी यदि पुरातनसे जो ध्रुवा चला आ रहा है उसको छोड़ना स्वीकार न हो तो उसके लिए निम्नलिखित प्रकारसे काम करना चाहिए—

१—ग्रहलाघवीय ध्रुवासे जो इष्ट वर्ष प्रवेशकालका निश्चित हो उस इष्टका स्पष्ट सूर्य करके जो अन्तर जन्मसूर्यके कलाविकलाओंमें आवे उसको निकालने के अनन्तर वर्षकुण्डली बनाई जावे। या—

२—ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्गके पंक्तिस्थ सूर्यको ही धन या ऋण जैसी भी आवश्यकता हो चालन देना चाहिये।

बहुधा जन्मकुण्डलियाँ पञ्चाङ्ग परसे ही बनाई जाती हैं। सूक्ष्मगणित द्वारा जन्मस्थानके अक्षांश रेखांश परसे दिनमान व इष्टशुद्धि बहुत नहीं की जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि जन्मसूर्य व वर्षसूर्यमें कालान्तर व रेखान्तर संस्कार दिया जावे। मेरी अल्प बुद्धिमें इस प्रकार थोड़ा परिश्रम करने से वर्ष कुण्डलियाँ अधिकतर ठीक बनकर फलितका अनुभव मिल सकेगा।

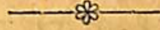
मेरा उद्देश्य केवल इतना ही है कि जनताको जो भी विचार हम ज्योतिषशास्त्रके आधार पर देवें वह शुद्ध गणित द्वारा बनाकर देवें— जिससे उनको शास्त्रकी सत्यताका अनुभव पूर्णतया हो व अविश्वास के भाव न रहें। मुझे पूर्ण आशा है कि इस प्रश्नको सुलझानेके लिए अवश्य प्रयत्न किया जावेगा, जो सर्वमान्य होकर जनताको उसका लाभ हो सके।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

चैत्र शुक्ल	११	मङ्गलवार	ता० ४ अप्रैल	कामदा एकादशी व्रत
	१२	बुधवार	ता० ५ ,,	प्रदोष व्रत हरिदमनोत्सव
	१३	गुरुवार	ता० ६ ,,	अनङ्ग १३ कामेश्वरपूजा
	१५	शनिवार	ता० ८ ,,	सत्यव्रत चैत्री १५ वैशाखस्नानारम्भ, जैन तीर्थङ्कर—
वैशाख कृष्ण	४	बुधवार	ता० १२ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत [श्रीमहावीर जयन्ती
	५	गुरुवार	ता० १३ ,,	मेष संक्रान्ति मु० १५ (वैशाखी) पुण्यकाल मध्याह्न पर्यन्त
	११	बुधवार	ता० १९ ,,	वरूथिनी एकादशी व्रत [मेला वैशाखी
	१२	गुरुवार	ता० २० ,,	प्रदोष व्रत
	३०	शनिवार	ता० २२ ,,	शनैश्चरी अमावस्या
वैशाख शुक्ल	३	मङ्गलवार	ता० २५ ,,	अक्षया ३ श्रीपरशुराम जयन्ती
	४	बुधवार	ता० २६ ,,	भक्तराज श्रीसूरदास जयन्ती
	५	गुरुवार	ता० २७ ,,	अद्वैताचार्य श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती
	७	शनिवार	ता० २९ ,,	श्रीगङ्गा ७
	११	गुरुवार	ता० ४ मई	मोहिनी एकादशी व्रत
	१२	शुक्रवार	ता० ५ ,,	प्रदोषव्रत
	१३	शनिवार	ता० ६ ,,	श्रीनृसिंह १४ व्रत श्रीवेदव्यास जयन्ती
	१४	रविवार	ता० ७ ,,	सत्यव्रत
ज्येष्ठ कृष्ण	३	गुरुवार	ता० ११ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत
	५	शनिवार	ता० १३ ,,	वृषसंक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल दूसरे दिन
	११	गुरुवार	ता० १८ ,,	अपरा (भद्रकाली) एकादशी व्रत
	१२	शुक्रवार	ता० १९ ,,	प्रदोषव्रत
	३०	सोमवार	ता० २२ ,,	सोमवती अमावस्या वटसावित्री ३०
ज्येष्ठ शुक्ल	३	गुरुवार	ता० २५ ,,	हिन्दुआँसूर्य वीरवर महाराणा श्रीप्रताप जयन्ती
	१०	गुरुवार	ता० १ जून	श्रीगङ्गादशहरा
	११	शुक्रवार	ता० २ ,,	निर्जला एकादशी व्रत
	१३	रविवार	ता० ४ ,,	प्रदोष व्रत
	१५	मङ्गलवार	ता० ६ ,,	सत्य व्रत पूर्णिमा
आषाढ़ कृष्ण	३	शुक्रवार	ता० ९ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत
	८	बुधवार	ता० १४ ,,	मिथुन संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल अपराह्णसे सायङ्काल तक
	११	शुक्रवार	ता० १६ ,,	योगिनी एकादशी व्रत
	१३	रविवार	ता० १८ ,,	प्रदोष व्रत
	३०	मङ्गलवार	ता० २० ,,	भौमवती अमावास्या
आषाढ़ शुक्ल	२	गुरुवार	ता० २२ ,,	श्रीजगदीश रथयात्रा, चन्द्रदर्शन
	९	शुक्रवार	ता० ३० ,,	भड्डली ९ काश्मीरमण्डल जन्मदिन

त्रैमासिक व्यापार-चन्द्रिका

[लेखक—गणकभास्कर दैवज्ञमणि ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]



फलित ज्योतिःशास्त्रमें प्राचीनकालसे भविष्य-द्योतक प्रणाली वैदिक-ज्यौतिष द्वारा महर्षियोंने इस प्रकार वर्णन की है—

सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥

भाष्यः—चारों दिशाओंको प्रकाशमान करनेवाले कालात्मा श्री सूर्य द्वारा स्थावर-जङ्गम जगत् चराचर ग्रह जल भचक्रका भेद अर्थात् ज्ञान पर्याप्त है। वेदोक्त नियम ऋतु प्रकरणमें सूर्यका यथोचित होना जगत्का कल्याणकारक और उसमें विकार होना महान् अनिष्ट प्रबोधक होता है। ज्योतिषचक्रमें (अन्यान्य ग्रहयोगोंसे) सूर्यकी प्राकृतिक व्यवस्थाका रूपान्तर होनेसे दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टिः अनावृष्टिः, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवोंसे पूर्ण उत्पात होते हैं और मनुष्योंका जन्म व क्षति, समर्घ महर्घ इत्यादि पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है।

अन्यान्य ग्रहयोग मीमांसाः—

प्रथमः स्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः।
तृतीयस्त्वेकतोदृष्टि स्थित्यैकत्वाच्चतुर्थकः॥
अन्योन्यगौ तथा स्वे-स्वे संयुतावन्यभे स्थितौ।
पूर्णेक्षितौ मिथौ वापि चैकवर्गगतो यदा॥

प्राचीन महर्षियोंने राशिचक्रके ३६० अंश कल्पना किये हैं। इनको क्रमसे १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ का भाग देने पर लब्धि योग-फल सूचक होती है। जैसे अंश ३६० में १ वा ० का भाग देने पर शेष शून्य (०) रह जाती है। इसका द्योतक युतिः होती है। शून्य शेषमें जगत्की उत्पत्ति होती है, इसलिए युति योगोंकी आद्य जननी होती है। अंश ३६० में २ का भाग देने पर लब्धि १८० (प्रतियोग) ३ के भागसे १२० (नवम पंचम) ४ के भागसे ९० (केन्द्रयोग) ५ के भागसे ७२ अंश का दृष्टि-योग। ६ के भागसे ६० अंश (द्विराश्यन्तर) अथवा द्विर्द्वादश। ७ के भागसे ५१-२५, यह योग द्विर्द्वादश-के समान होता है। ८ के भागसे ४५ (सार्धकेन्द्र) ९ के भागसे ४० (युति) के बराबर। १० के भागसे ३६ ।, ११ के भागसे ३२। ४३।३८ और १२ के भागसे ३० एक राश्यन्तर योग तीनों मतसे माना गया है। उपर्युक्त योगोंका सूर्यके साथ शुभाशुभ फल निम्न है-

रवि-मंगल, रवि-गुरु, रवि-शनि, रवि-हर्शल और रवि-नैपच्यूनकी युति शुभ राशिमें शुभ फलकारक, और अशुभ राशिमें अशुभ फल बोधक जानना।

द्विर्द्वादश—द्वितीय अशुभ, द्वादश शुभ।
तृतीयएकादश—तृतीय शुभ, लाभ अशुभ।
केन्द्र—चतुर्थ अशुभ, दशम शुभ।
पंचम नवम—पंचम अशुभ, नवम शुभ।
षडष्टक—षष्ठात् शुभ, अष्टमात् अशुभ।
प्रतियोग—सर्वदा अशुभ फल सूचक है।

इस प्रकार के अन्यान्य ग्रहोंके साथ सूर्य सम्पर्क होने से पृथ्वी पर अनेक प्रकार के चमत्कारिक फल उत्पन्न होते हैं। वर्तमान सन् १९४४ में ता० २७ मार्चसे ३० अप्रेल तक ऋतु-प्रकरणका अतिचार होनेसे सूर्यमें वर्ण-विकार होगा। इसके परिणाम-स्वरूप पृथ्वी पर दिग्दाह, भूकम्प, युद्ध, महामारी, जनक्षय उल्कापात धूमकेतुका पतन अर्थात् बड़े-बड़े ताराओंका पृथ्वी पर गिरना आदि महान् अनिष्ट बोधक उत्पात होंगे।

त्रैमासिक व्यापारिक-फल-प्रदर्शक ग्रहयोग

तारीख	ग्रहयोग	व्यापारिक फल
४ अप्रैल	(चं. ११ श.)	तिलहनके भावोंमें एकदम उछाला आवेगा।
"	(चं. ८ शु.)	चांदी रुई सूतकी तेजी कपूरको साथ लेगी।
५	(चं. १२ श.)	कालीमिरच राई तेल भी आगे बढ़ेंगे।
७	(चं. १० मं.)	सोना गेहूँ तांबाके खरीदने का चांस है।
६	(चं. ६ श.)	चांदी रुई मंदीका चकमा देना चाहती है।
११	(चं. १० गु.)	सोना चांदी अरहर मसूर खरीदनेका चांस है।
१३	(चं. ६ गु.)	गेहूँ चनेकी खरीद आगे फायदे मंद होगी।
१६	(चं. ६ श.)	दुश्मनोंका होलनाक सदमा सहना पड़ेगा।
१७	(चं. ३ शु.)	मारकेट खुलते ही कपास रुई और मूँगफली खरीदना।
२०	(चं. ६ गु.)	बाजारोंमें अचानक तेजी रेडियोके साथ चमकेगी।
२१	(चं. १ शु.)	चांदी मूँगफली खरीदनेके चांस दे रही है।
२२	(चं. ५ गु.)	सोना और तांबा पर मुनाफेका विचार करो।
२४	(चं. १ बु.)	मसूर अरहर चना गेहूंकी खत्ती भरना ही चांस है।
२६	(चं. १२ बु.)	रुइ और सूतके भाव मंदीकी इत्तला दे रहे हैं।
२८	(चं. १० शु.)	चांदो चनाकी ऊंचाई पर ध्यान रखना।
२६	(चं. १२ श.)	से ना चांदी रुईका स्टाक खतम करो।
३०	(चं. १० बु.)	व्यापारके लिए इस योगका असर अच्छा नहीं है।
२ मई	(चं. १२ रा.)	सरसों अलसीकी खरीद चांस दिखला रही है।
५	(चं. ८ बु.)	चांदी रुई सूत तोरिया तारामीराकी नरमाई आवे तो खरीद करना।
६	(चं. ६ मं.)	गेहूँ चावल तिलहनके भाव ऊंचे होंगे।
१३	(चं. ८ गु.)	चांदी सोना तोरिया सुर्ख रंग बदलेंगे।
१५	(चं. ५ श.)	भड़कीले भाव बहुत देर तक न ठहरेंगे।
१६	(चं. ३ बु.)	मुनाफा मिल रहा हो तो चांदी का बेचाण करो।
१६	(चं. २ शु.)	चांदी सोना एक दम गिरनेकी सूचना देते हैं।
२१	(चं. ४ गु.)	तिलहन चांदी गेहूँ चनामें तेजीका उछाला आवेगा।
२३	(चं. १२ बु.)	सूत और रुईके भाव मंदी दिखलायेंगे।
२५	(चं. ११ बु.)	नीचे भावमें रुई और चांदी खरीदनेका चांस है।
२८	(चं. १ गु.)	रुई चांदी सोना तेजी की इन्तजारी में है।
३१	(चं. १० श)	सभी वस्तुओंमें खास तेजीका भड़का रहेगा।
१ जून	(चं. ११ मं.)	तोरिया तारामीरा गेहूँ चावल तिलहनकी मंदी आवेगी।
३	(चं. ८ शु.)	चांदी सोनेकी ऊंचाईमें नफेका विचार करो।
५	(चं. १० गु.)	चांदी सोना अलसी अरहरके खरीदनेके चांस हैं।
६	(चं. ७ शु.)	सूत रुई चावलकी मंदी दिखला रही है।

१०	(चं. ६ श.)	चांदी रुई सोना खरीदनेका चांस है।
१३	(चं. ६ मं.)	चांदी अलसी सूत चमक कर चकमा देना चाहते हैं।
१६	(चं. ३ सू.)	सामूहिक व्यापार तेजीका मुन्तजिर बननेवाला है।
१७	(चं. ४ मं.)	चांदी सूत अरहर गेहूँकी तेजीमें मुनाफा छोड़ना नहीं।
१९	(चं. १ बु.)	चांदी कालीमिरच सूतके खरीदनेका चांस है।
२०	(चं. १ शु.)	अचानक तेजी आवेगी मुनाफा हासिल करो।
२३	(चं. १२ शु.)	सफेद वस्तुकी नरमाई खरीदने का मौका देती है।
२७	(चं. १२ गु.)	मुनाफा मिल रहा है तो चांदीका स्टाक कम करो।
३०	(चं. १० रा.)	राई अलसी सरसोंमें तेजी खास आवेगी।
१ जुलाई	(चं. ६ बु.)	चांदीकी तेजी सोनेको साथ लेगी।
२	(चं. ६ शु.)	मुनाफा मिल रहा है तो स्टाक सर्व वस्तु खतम करो।

त्रैमासिक व्यापारका सारांश

आशा रखो अप्रैलकी मंदा रहे व्यापार।
सुख शान्ति व्यापी रहे चंगा रहे रुजगार॥
मई मास आशा नई तेजीकी भनकार।
सनातनी सावों बड़ो घर-घर मंगल चार॥
जून जोरावर जङ्गसे जागृत हो संसार।
व्यापरां तेजी चले महिमें हा-हा कार॥

भारत वर्षमें अपना चमत्कार दिखानेवाला योग

यदाऽर्क सौरिः दैत्यराज मंत्री यदैकराशौ समसप्तके वा।
साकेत लंकापुर मध्यदेशे दुर्भिक्षभयं शस्त्रभयं करोति॥

इसका भावार्थ यह है कि ऊपरका योग ता० ५-६ जुलाईको बनता है; इस योगके द्वारा अयोध्यासे दक्षिण और लंकासे उत्तरके देशोंमें शस्त्रभय एवं दुष्कालका भय होना सूचित होता है। तथा व्यापारिक वस्तुओंकी भारी तेजी-मंदीका द्योतक है। इस योगका फल अगस्तके अन्त तक रहेगा। व्यापारियोंको तेजीके समूहमें अच्छा लाभ उठाना चाहिये।

चैत्र सुदी १० से १५ तकका सारांश

इस समयमें धान्य तेज, प्रजामें पीड़ा, घृत गुड़ खांड तैलका भाव तेज हो। सोने चांदीमें मंदी आकर चांदीमें ४) सोनेमें १॥) की तेजीका उछाला आवेगा।

वैशाख कृष्ण (बदी) पक्षमें

इस पक्षमें मार्गी गुरु, मेषे सूर्यः, बुध वक्री होनेसे गेहूँ अलसी चना सरसों अरहरमें मंदी आवेगी। स्टाक खरीदना चाहिये। चांदी ७) सोना ३) घृत ४) अलसी २) सरसों १॥) मन तेजीमें उतरेंगे।

वैशाख शुक्ल (सुदी) पक्ष

मिथुनका शनिः, चन्द्र दर्शन मु० ३०; इसका फल धान्यका रुख मंदा हो कर तेज। तिलहनमें खास तेजी आवे। चांदी १०) सोनेमें ५) रुई १०) सूत १) तेजीका द्योतक है। विशेष "नेष्टश्चास्तंगतो मुनेः" इस पक्षमें अगस्तका अस्त संसारमें भयका द्योतक है। शु० १० से धान्य धातु इत्यादिमें चमकीले भाव देखनेमें आवेंगे।

कृष्ण पक्षकी तिथि घटे शुक्लपक्ष बढ़ जाय।
एक चीज तो क्या बढ़े सभी चीज बढ़ जाय॥

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

इस मासमें पांच मंगलवार नेष्ट हैं। प्रजामें रोग पीड़ा हो, धूप अधिक पड़े, हैजेका प्रकोप हो। वृषभका सूर्य शुक्र होनेसे बदी दूजसे चांदीमें ८) सोनेमें ३) सरसों अलसीमें २) गेहूँ चनामें १॥) तिली तैलमें १॥) तोरियामें १॥) तेजी आवे। अमावस्या सोमवारी होनेसे अन्तमें बाजार रुख मंदा होवे।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

इस पक्षमें रोहिणीमें शुक्रास्त तथा कृत्तिकामें शनि अस्त होनेसे बम्बई बराड़ बंगालादि देशोंमें अग्निका उपद्रव होगा। धान्य गेहूँ २) चना १।।) अलसी १।।) अरहर १) मसूर १) रुई जरीला ३०) चांदी १५) सोना ६) सुदी ४ से तेजीमें जावें। इस मासका व्यापार पर्याप्त लाभकारक रहेगा।

आषाढ़ मासका सारांश

इस मासमें ५ बुध और गुरुवार हैं, तथा सिंहस्थगुरु आनेसे व्यापारकी काया पलट होगी। इस मासमें व्यापारी नुकसानीसे बचनेके लिए हर वस्तुका स्टाक खतम करनेके लिए स्पेशल राय प्राप्त करें। इस मासकी मंदी व्यापार हाजिरमें भारी चकमा देगी। बदी ४ से १२ तक इकजाई लाईन पहिले रंग तेजीका दिखलाकर अचानक भारी मंदीका द्योतक है। तिलहन ३) रु० गेहूं चना अलसी सरसों ३।।) चांदी २०) सोना १०) रुई १००) सूत २) बारदाना १०) रंग सुर्ख डोल २) रत्तल मंदीमें उतर जावेंगे, सोच समझकर व्यापार करना चाहिये।

नोट—'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंसे निवेदन है कि व्यापारिक फल-प्रदर्शक ग्रहयोगोंके फलितका और मास पक्षके सारांश फलका संयुक्त मिलान करके चांस सही करलेवें जो बात समझमें न आवे वह लेखकसे पूछ सकते हैं। चांदी १००) भर पर, सोना १ तोला पर, धान्य १ मन पर और रुई एक खण्डी पर तेजीमंदी दिखलाई गई है।

तेजीमंदी विचार

[लेखक—श्री पं० मोहनलालजी शर्मा ज्योतिर्विद्]

रुई, कपास, कपड़ा, सण, सोना, चांदी, अनाज आदिकी तेजीमंदी पश्चात्त्य-पद्धतिके अनुसार परिश्रम-पूर्वक यहाँ लिखी जाती है। पाठक अनुभव करें।

ता० ३ से ८ अप्रैल तक उपरोक्त वस्तुओंके भाव समान रहते हुए बढ़ते दिखाई देवेंगे। ता० ६, १० का दिन देखना चाहिए। फिर ता० ११ से १८ अप्रैल तक घटा-बढ़ी चलती रहेंगी। १६-२० को बाजारमें तेजी हो कर अन्तमें भाव गिरें। ता० २१ से २६ तक साधारण स्थिति व घटा-बढ़ीसे समय पूरा होगा। ता० १-२ मई बाजार बना रहे, यहाँ खरीदना चाहिए, आगे अच्छी तेजी होगी। ता० ३ को बहुत अच्छी तेजी होगी। फिर ता० ४ से १० मई तक बाजार धीरे-धीरे बढ़ता रहेगा। फिर ता० ११ से १५ मई तक समान बाजार रह कर १६-१७ को तेज रहेगा। ता० २२ से ३१ मई तक मोटी घट-बढ़ होगी। केवल २५-२६ को मंदी रहेगी। ता० १-२ जून मंदी रहे, ३ को बाजार बना रहे। फिर ता० ५ से १० जून तक अच्छी घट-बढ़ होवे, अन्त में यदि बाजार मंदा रहे तो खरीदना चाहिये, आगे अच्छी तेजी होगी। ता० १२ जूनसे सन् १६४४ के अन्त तक गौमूत्रिका गतिसे खरीद बेच करनेवाले व्यापारी अच्छा लाभ उठायेंगे। सोना, चांदी, लोहा, कालीमिरच यह वस्तुयें मंदी हों और रुई, कपास, धान्य, सण धीरे-धीरे बढ़ते रहेंगे इसका व्यापारी लोग पूरा ध्यान रखें। ता० १३ से १७ जून तक बाजार समान रहता हुआ अच्छा बढ़ेगा। ता० २० को रुई सण गेहूँ तेज और सोना चांदी मंदा रहे। इसके अनुसार व्यापारी-वर्ग लाभ उठावें।

लाइनें इस प्रकार हैं—

(१) ता० १५ अप्रैलसे २० अप्रैल तक। (२) ३ मईसे १३ मई तक होगी। (३) १८ मईसे ३० मई तक चलेगी। (४) १० से १४ जून तक रहेगी। यह लाइनें एक तर्फा तेजी करेंगी, वा घटा-बढ़ीसे तेजी करेंगी।

व्यापारिक तेजीमंदी और ज्योतिष

[लेखक—श्री प्रो० बी० सी० महता म्यूनिस्पल कमिश्नर]

यह विचार करके कि आजकल मुख्यतया दो वस्तुओंका ही विशेष व्यापार होता है, अतः इस लेखमें केवल उन्हीं दो वस्तुओंकी तेजी-मन्दीका समावेश किया जायगा। उन दो वस्तुओंसे मेरा तात्पर्य "रुई और चांदी" है और इनकी घटाबढ़ीका आधार बम्बईका बाजार होगा, सो पाठक ध्यान रखें।

घटाबढ़ीके विचारसे यह अप्रैल मास इस सन् ४४ के वर्षका एक महत्त्वशाली महीना है, क्योंकि इस मासमें ग्रहयोग कुछ ऐसे बने हैं कि जिससे यह आशा की जा सकती है कि इस मासमें रुई और चांदीमें विशेष तेजी-मन्दी चलेगी; इसलिये पाठकोंको विशेष सावधान होकर व्यापार करना चाहिये।

अप्रैलके प्रारम्भमें ऐसी परिस्थिति होती जँचती है कि जिससे व्यापारियोंके दिमागमें चांदी और रुईमें विशेष मन्दी घुस जायगी और चारों ओर लोग मन्दी ही मन्दी देखेंगे। किन्तु ता० ५ अप्रैलके बाद ही एक ऐसा योग बन रहा है कि उनकी यह धारणा गलत दिखाई देगी। क्योंकि ता० ५ को शुक्र मीन राशिमें प्रवेश होता है जो उसकी उच्चकी राशि है और बृहस्पति पहलेसे ही अपनी उच्च राशिमें चल रहा है, इस प्रकार दो मुख्य शुभ ग्रह (Benefic planets) अपनी अपनी उच्च राशियोंमें स्थित होकर आपसमें ट्राईन योग बनाते हैं। ऐसे योग बहुत कम बनते हैं। इस योगका प्रभाव रुई और चांदीमें पर्याप्त तेजीका होगा, इस लिये पाठकोंको चाहिये कि ५ अप्रैलसे तेजीका व्यापार प्रारम्भ करें।

यह तेजी ता० १२ को समाप्त होगी और उस दिन शुक्र नेपच्यून प्रतियोगसे कुछ मन्दीका रिएक्शन आवेगा, परन्तु यह मन्दी विशेष टिकाऊ नहीं रहेगी। ता० १५ को फिर तेजी आजावेगी। ता० २० को फिर मन्दीका रिएक्शन आवेगा। ता० २४ को यह ट्राईन-योग पूर्णतया बनेगा और इस दिन अच्छी तेजी आनेकी सम्भावना है। ता० ३० को शुक्र अपनी उच्च राशि छोड़ता है तथा शनिके साथ स्क्वायर (Square) योग बनाता है जो पर्याप्त मन्दीका कारण है।

मई मासमें विशेष घट-बढ़ नजर नहीं आती। इस मासमें मन्दीकी ही विशेषता रहेगी; क्योंकि इस महीनेमें कर्क राशिमें राहु बृहस्पति और मंगल एकत्र हुए हैं जो पर्याप्त मन्दीका योग है। ता० २३ मईके बाद चांदीमें विशेष मन्दीके भाव नजर आते हैं।

जून मासमें भी घटाबढ़ीके साथ मन्दीकी ही सम्भावना है, चांदीमें तो मन्दी आवेगी ही।

किन्तु यह प्रायः देखा गया है कि काफी मन्दीके बाद एक बार कुछ तेजी अवश्य आती है। इसी कारण एक योग पर विशेष दृष्टि पड़ती है, क्योंकि शनिका अस्त होना भी कभी कभी काफी तेजी ले आता है। ता० ४ जूनको शनि अस्त होता है, सो थोड़ी तेजी आ सकती है, जो ७ तक समाप्त होगी।

ता० ७ जूनसे जनरल मन्दीकी लाइन बनती नजर आती है, जो शनै २ बढ़ सकती है। इस लिए इस मासमें मन्दीका व्यापार करना हमारी सलाहमें लाभप्रद होगा, आगे ईश्वरेच्छा।

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श (तेजी मंदी)

[लेखक—श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ]

[अनुभवी विद्वान् लेखकका यह लेख इस बार हमें बहुत विलम्बसे मिला और साप्ताहिक अर्धसाप्ताहिक तेजी मन्दीका सूक्ष्म विचार बहुत लम्बा था, अतः स्थानाभावके कारण उसे हम प्रकाशित न कर सके इसका हमें खेद है। व्यापारी वर्गके लाभार्थ उक्त लेखमेंसे तीन मासका सारांशमात्र हम यहां दे रहे हैं। —सम्पादक]

सौर वैशाख मास

१३ अप्रैलसे १३ मई १९४४ तक

सूर्यका १५ मुहूर्तमें संक्रमण, गुरु मार्गी, बुध वक्री होते पश्चिममें अस्त होना, कृष्णपक्षमें तिथि क्षय, शनिका मिथुनराशिमें आना, मंगलका कर्क पर आगमन, गुरु-शनिका द्विर्द्वादश, शनि-मंगलका द्विर्द्वादश आदि आदि योगोंसे विदित होता है कि बाजार में प्रत्येक वस्तुके भाव अधिकतर महंगाईमें चले। बीच बीचमें भले ही साधारण मन्दीका प्रभाव प्रतीत हो। अतः इस महीनेमें रुई, पाट (हैसियन) काली मिर्च मूंगफली, अरैंडा १५) २०) टके, चांदी, बिनौला ४) ५) और अलसी, सोना, गेहूँ १॥) २) टकों की तादादमें तेजीकी ओर रहेंगे।

व्यापार— वस्तुको खरीद करनेकी स्कीम रखते, प्रत्येक उछालेमें बेचाण करके—नफासे सौदा सुधारते जायें। अथवा जिस वस्तुके तेजी-मन्दी (नजराणा) के सौदे चालू हों उस वस्तुके ड्यू-डेटका ख्याल रखते तेजी लगा सौदा करना ठीक है।

सौर ज्येष्ठ मास

(तारीख १४ मईसे १३ जून तक)

सूर्यका अकरेवारको ३० मुहूर्तमें संक्रान्ति परिवर्तित करना, षष्ठी तिथि क्षय होते बुधका पूर्वमें उदयमान होते मार्गी होना, सोमवती अमावस्या, चन्द्रोदय क्रूरवारको दक्षिण शृंगमें होना, शुक्र पूर्वमें अस्त हुआ, मंगल-गुरु-राहुकी राशियुति चलना, शनि पश्चिममें अस्त हुआ।

फल— राजनैतिक परिस्थिति बड़ी भयानक होगी, इसका व्यापार पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ेगा।

व्यवसाय—वस्तुके भावमें बड़ी घटाबढ़ी चलते रुई ३०) ४०) पाट (हैसीयन) कालीमिर्च एरंडा मूंगफली १५) २०) और चांदी, बिनौला, अलसी ३) ४) टके, सोना, गेहूँ १॥) २) टकेकी तादादमें रद्दोबदल होना पाया जाता है। भावकी गतिविधि रहेगी तेजीमें, परन्तु बीच बीचमें मंदीके हिचके आते रहेंगे। व्यापार करनेका ध्येय वस्तु लेकर बेचने का रखें। जिस वस्तुमें तेजी-मंदी लगा कर सौदे होते हों उसका नजराणा लगाते — पेटेमें ले — बेचका सुधारा करते रहें।

सौर आषाढ़ मास

(तारीख १४ जूनसे १४ जुलाई तक)

कृष्ण पक्षकी तिथि क्षय, मिथुन राशिमें शनि-शुक्रकी युति (दोनों अस्त हैं) गुरुदेवका सिंहराशिमें पदार्पण, बुध पूर्वमें अस्त होते शीघ्र गतिमें चलना, चन्द्रोदय उत्तर शृंगमें होना, सू० बु० शु० श० चार ग्रहोंका मिथुनमें इकट्ठा होना, सिंहराशिका मंगल-गुरु, शुक्लपक्षमें तिथि बढ़ी, कृष्णपक्षमें घटी, शनिका पूर्वमें और बुधका पश्चिममें उदय होना।

फल— चीन व अमेरिका देशोंसे कुछ खास विस्मयकारक व भयोत्पादक खबरें मिलेंगी। विशेषकर जलप्रलय, अग्निकांड और झगड़ेकी जड़ हिलने लगे। अगुआओंकी दौड़-धूप खूब रहे।

व्यवसाय— प्रत्येक वस्तुके भावमें जबर फेरफारी चले। एक तर्फ तेजीका बवंडर दूसरी ओर मन्दीका आवेगा। अतः रुई ४०) ५०) चांदी बिनौला ३) ४) टके, सोना अलसी गेहूँ १) १॥) टकेकी दो-तीन उछाल लेंगे। इस मौके पर प्रत्येक सौदागरको चाहिये कि बहुत होशियारीसे सौदा करें। जिस वस्तु का नजराणेका व्यापार चालू हो, उसीकी तेजीमन्दी लगा व्यापार करना ठीक है।

वसन्त-वर्णन

[कवयिता—श्री पं० योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री साहित्याचार्य]

[यह 'वसन्त-वर्णन' रचयिताके एक अप्रकाशित काव्यमें से है। रचना स्वभावसे सरल तथा सुन्दर है। हिन्दी-साहित्यमें संस्कृत-साहित्यकी भांति वृत्त रचना बहुत थोड़ी पाई जाती है। इस ओर प्रस्तुत कविताओंके सुयोग्य कवयिता महोदयने ध्यान दिया है इससे हिन्दी साहित्यका महान् उपकार होगा। इसके लिए हम उन्हें विशेष धन्यवाद देते हैं। सं०]

भूभृतको[1] निरख उपास्यमान नित्य
सद्विद्या शुभ गृह-राज-लक्ष्मियोंसे[2]।
सेवामें नव गढ़-भूपकी[3] खुशीसे
आई थी सपरिजना वसन्तलक्ष्मी॥ १॥
साड़ीको पहिन हरी हरे दलोंकी
सर्सोंकी सुममय ओढ़ ओढ़नीको।
फूलोंसे अरुणललाम किंशुकोंके
चोली थी ललित विराजती स्तनों पे॥ २॥
पत्तों पे पतित तुषार बिन्दुओंकी
सन्मुक्ता विशद लड़ी पड़ी हुई थी।
फूलोंसे विविध प्रकारके बनाई
अङ्गों पे अगणित भूषणावली थी॥ ३॥
बेंदी दे विशद ललाट केसरिया[4]
शोभा थी झलक रही तदाऽद्वितीया।
ठोड़ी पे अलि-तिल सांवला सुहाता
जीको जो जगभरके रहा लुभाता॥ ४॥
लक्ष्मीके सह बदरीश[5] दर्शनोंको
आई थी मलय-समीर भी त्रिभांती[6]।
पैरोंको परस नरेशके कृतार्था
क्रीड़ायें वह करने लगी अनेकों॥ ५॥
रसालको मञ्जुल डालमें स्थिता
कुहू-कुहू कोयल थी सुना रही।
वियोगियोंको वह थी जता रही
वसन्तमें है बस अन्त आपका॥ ६॥

सुगन्धिता मञ्जरि—राजि—राजिता
रसाल वृक्षावलिको विलोकके।
नहीं ठिकाने पर चित्त था रहा
अहो यहां धीरजशालि वीरका॥ ७॥
सखीजनोंसे बहुवार वारिता
अशोककी प्रोषित-भर्तृका मुदा।
निहारके भी न अशोक थी हुई
सशोक ही थी व्यथिता तदाऽधिका॥ ८॥
द्विरेफ थे सुन्दर मन्द मन्द ही
मरन्द पीते अरविन्द—वृन्दका।
रसालकी मञ्जुल मञ्जरी कहीं
बुला रही थी अभिलाषसे उन्हें॥ ९॥
विलोकते थे वकुलावली कहीं
रमे कभी माधविका—निकुञ्जमें।
न कामियोंके सम चित्त एकमें
कहीं उन्होंका मन था लगा कभी॥ १०॥
वनस्थली शोभित हो रही भली
वनस्पती थीं जिसमें सभी खिलीं।
मुदा उन्होंमें अलि-आली गुंजती
सुना रही क्या कल कीर्ति कीर्तिकी[7]॥ ११॥
नरेन्द्रके स्वागतहेतु मानलो
सजी धजी थी शुभ काननस्थली।
विहंगमोंके कलनादसे मुदा
सुना रही स्वागत—गान—तान थी॥ १२॥
हिलीं हवासे वनवृक्ष—डालियाँ
गिरा रही थीं मृदुला सुमावली।
प्रसन्नतासे नरराजके लिये
चढ़ा रही थी उपहार—अञ्जली॥ १३॥
प्रसून—आभूषण—वृन्दसे सजीं
मधुव्रतोंके कल—गीत गानसे।
प्रकम्पिता मारुत—मन्द—वेगसे
दिखा रही थी नव नृत्य वल्लरी॥ १४॥

---

१ भूभृत—राजा अर्थात् स्वर्गीय महाराजा सर कीर्तिशाह जी
२ गृहराज लक्ष्मियोंसे—गृहलक्ष्मी और राजलक्ष्मीसे।
३ नवगढ़भूप—गढ़देशके नये राजा महाराजा सर कीर्तिशाहजी।
४ केसरिया—केसरकी।
५ बदरीश—बदरीश मूर्ति महाराजा कीर्तिशाह।
६ त्रिभांती—त्रिप्रकार शीतल, मन्द, सुगन्ध।
७ कीर्तिकी—श्री कीर्तिशाहजीकी।

वसन्त

(श्री तिवारी 'सुमन')

वर्षमें चैत्र और वैशाख, मास दो कहलाते रसवन्त।
किन्तु है इनके बीच छिपा, विलसता रहता नित्य वसन्त ।।
अन्त है जिसका उसका आदि, आदि है जिसका उसका अन्त ।
नियतिका नियम आदिसे अन्त, आप क्यों कहते उसे वसन्त ।।
क्षेमको दिया हेमने दाव, नियति ने भूला हरिका पन्थ।
हँसे हरि हुआ हेमका अन्त, लोग क्यों कहते उसे वसन्त ।।
जगतिका मिटा शोक सन्ताप, नियतिको बना दिव्य छविवन्त ।
भक्ति है दिगदिगन्त में व्याप्त, भूल कर कहते जिसे वसन्त ।।
फूल फल पत्तोंका परिधान, छिपा है जिसमें अन्त अनन्त ।
नियतिका अलबेला शृङ्गार, लोग क्यों कहते इसे वसन्त ।।
सुमनसे हो समीर सम्पन्न, सृष्टिमें सुधा स्नेह सरसन्त ।
नियतिकी कली-कली विलसन्त, लोग कह उठते उसे वसन्त ।।
फूल फल पत्तोंका उत्कोंच, जगतिके आकर्षणका तन्त ।
सघन-वन उपवनमें देखा, कहा जाता है जिसे वसन्त ।।
रात दिन बिना लिये विश्राम, दिखाते सबको हरिका पन्थ ।
सत्यमें उनका तप विख्यात, आप हम कहते जिसे वसन्त ।।
जगतिमें छा जाता आलोक, मोह-मद-ममताका अत्यन्त ।
निरख कर नियति-नटी उद्भ्रान्त, भूमती कैसा कहाँ वसन्त ।।
फूलता फलता है साक्षात, पंचतत्वोंका तत्व ज्वलन्त ।
रूप रस गंध स्निग्ध अवकाश, आप क्यों कहते इसे वसन्त ।।
प्रेमियोंका प्रेम प्रतीक, फूलता फलता चतुर्दिगन्त ।
प्रकृतिका पावन परमानन्द, आप क्यों कहते इसे वसन्त ।।
देखने दुनियाँ के दुख दर्द, खुलें जब द्रुम-दृग-दिव्य दिगन्त ।
तभी हो उठता है आलोक, लोक कह देते उसे वसन्त ।।
निरख कर नवनिसर्गका रूप, नैन कह उठते जिसे तुरन्त ।
नियतिका नैसर्गिक लावण्य, जगति कह देती उसे वसन्त ।।
सतत कर सुरभित सब संसार, समझता सफल हुआ बस-अन्त ।
सुमनका यह अनुपम उत्सर्ग, आप क्यों कहते इसे वसन्त ।।

वसन्त महिमा

[लेखक— श्री पं० गोपाल जी शर्मा]

"ऋतूनां कुसुमाकरः"

उपर्युक्त वाक्य आनन्दकन्द पूर्णब्रह्म भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रका है। इस बातमें बड़ा महत्त्व भरा हुआ है। किंकर्तव्य विमूढ़ अर्जुनको भगवान्ने कर्त्तव्यके लिए प्रेरित किया था। धर्म रक्षार्थ अन्यायी को दण्ड देने के लिए भगवान् श्रीकृष्णने वसन्तका रूप धारण किया था। ऋतुराज भी तो यही करता है। हेमन्त और शिशिरके अन्यायसे पीड़ित प्रकृतिको केवल आश्वासन ही नहीं देता, किन्तु उसकी शुष्कता और कठोरताको दूर कर नया जीवन सञ्चार करता है। चारों ओर वृक्षादि पुष्पित और पल्लवित हो रहे हैं। कोकिला कूजने लगी। दिशाएं प्रसन्न हो गईं। त्रिविध शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलने लगा। इसे केवल वसन्तऋतु ही न समझो। इसको सरसोंके पुष्पों का पीताम्बर धारण किये, कोकिलकण्ठकी वंशी बजाने वाले वही वृन्दावनविहारी श्रीकृष्ण भगवान् समझो, जो अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार साधुओंके परित्राण और दुष्टोंके विनाशके लिए प्रतिवर्ष आते हैं। आइये, हम सब मिलकर आज उस श्रीकृष्ण स्वरूप वसन्तका अभिनन्दन करें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

उक्त प्रार्थना सर्वतो भावेन समीचीन भी है, क्योंकि वसन्तऋतु जितना सुखदायी है, उतना ही इसमें रोगादिका प्रकोप भी हुआ करता है। महर्षि चरक लिखते हैं—

वसन्ते निश्चित श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः।
कायाग्निं वाधते रोगां स्ततः प्रकुरुते बहून्॥
तस्माद् वसन्ते कर्माणि वमनादीनिकारयेत्।
गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्॥
वसन्तेऽनुभवेत् स्त्रीणां काननानाञ्च यौवनम्॥ इत्यादि

हेमन्त शिशिरमें सञ्चित हुआ कफ, वसन्तऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे तरल प्रबल होकर जठराग्निको मन्द करके शरीरको रोगोंका शिकार बना देता है। इसलिए वसन्तमें वमन विरेचनसे शुद्ध होकर गरिष्ठ, खट्टा, अति-चिकना, मधुर-भोजन और दिनमें सोना, इत्यादि छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार ऋतुचर्या पर ध्यान देकर जो नियमानुसार आहार विहार करते हैं, उनके लिए यह वसन्तऋतु निश्चय ही सुखदायक होता है। खासकर इस ऋतुमें व्यायाम, खेलकूद, भ्रमण, आमोद-प्रमोद और सङ्गीतादिका विशेष विधान है। सङ्गीतशास्त्रमें वसन्त नामकी अलग ही रागिनी है, तथा होरी काफी इत्यादि भी विशेष कर इसी ऋतुमें गाई जाती और प्यारी लगती है, इस लिए प्राचीन कालमें इस ऋतुके आरम्भमें वसन्तोत्सव मनानेका रिवाज था और अब भी फाल्गुनमें होलीका आमोद प्रमोद उसी वसन्तोत्सवका विकृत रूप है।

यद्यपि 'मधुमाधवौ वसन्तः' के अनुसार चैत्र वैशाख ही वसन्तमें माने गए हैं, किन्तु ज्योतिषशास्त्र के हिसाबसे सूर्य संक्रान्ति तथा अयनमें १६ अंशोंसे अधिक अन्तर पड़ जानेसे मध्यम मानसे फाल्गुनके कृष्णपक्षमें ही वसन्त संपात हो जाता है, जो वैशाख कृष्णपक्ष तक रहता है। माघ शुक्ल पञ्चमीका वसन्त पञ्चमी नाम इसलिए पड़ा है कि जब किसी बड़े अधिकारीका आगमन होता है तथा कोई सुखदायी प्रसङ्ग आने वाला होता है तब महीनों पहिले ही स्वागत समारोहकी तैयारियाँ होने लगती हैं, इसी प्रकार प्रकृतिके श्रृङ्गार ऋतुराजके आगमनसे पहिले ही स्थावर, जङ्गम, जड़, चेतनादि सभी समुदाय स्वागत के लिए तैयार हो जायें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। क्योंकि ऋतु महाराजके आगमनका प्रभाव महीनों पहले ही इस जड़ चेतनमय जगत पर पड़ जाता है। इस लिए माघ शुक्ल पञ्चमीके दिन रति-कन्दर्पकी पूजाके द्वारा वसन्तागमनकी सुखप्रद सूचना सबको पहुँचाई जानेके कारण इसका नाम वसन्तपञ्चमी सर्वथा उपयुक्त है।

प्रतिवर्ष वसन्त आता है प्रकृतिके जीर्ण शीर्ण मलिन वस्त्रोंको उतारकर नूतन वस्त्राभरण दे जाता है। लता-वृक्ष, मनुष्य-पशु-पक्षी आदि सबमें नया जीवन सञ्चार हो जाता है। वर्षाऋतुमें भी अनेक लता-वृक्ष द्रुमोंकी उत्पत्ति होती है। नई सृष्टि करना कोई महत्त्वकी बात नहीं, किन्तु मरते हुएको जीवित कर देना तथा जरावस्थासे जर्जरीभूतको नवजीवन प्रदान कर शोभायुक्त कर देना वसन्तका ही काम है। वसन्तके द्वारा प्राणीवर्गको यही सन्देश मिल रहा है। यदि निरस हो गए हो, सूख गए हो, कान्तिहीन हो गए हो, तब भी कोई चिन्ता नहीं; हतोत्साह मत बनो। फिरसे नया जीवन धारण करो। मलिन-वेष उतार फेंको। वसन्ती बाना धारण करो और अपने कर्तव्य पथमें जुट जाओ। देखो, हिमसे पीड़ित वनस्थलीने आज कितना मनमोहक सुकुमार रूप धारण किया है। जरा ऋतु-संहारमें रसराज कालिदास की वसन्त-वर्णन छटा तो देखिए।

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामा पवनः सुगन्धिः।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः सर्वं प्रिये ! चारुतरं वसन्ते ॥

केवल कवि-कल्पनामें ही नहीं, किन्तु वास्तवमें ही वसन्तकी मधुर-मोहन-महिमासे प्रकृति देवीमें परम-रमणीयता प्रकट हो जाती है। ऐसा कोई जनप्राणी नहीं, जो वसन्तके माधुरी-प्रवाहमें गोते न खाता हो। युवक-युवतियोंकी तो बात ही क्या है, वासन्ती प्रकृतिके उत्पन्न होने पर बड़े-बूढ़े व्यक्तियोंका चित्त भी चञ्चल हो उठता है। कवि राघवाचार्यके वसन्त-विवाहके चित्रणका भी पाठक रसास्वादन कर लें।

जगौ विवाहावसरे वनस्थली वसन्तयोः काम हुताश साक्षिणी॥
पिक-द्विजः प्रीतमना मनोरमं मुहुर्मुहुर्मङ्गल मन्त्रमादरात्॥

अहा ! कितना रमणीय रूपक है। कितना अनुपम माधुर्य्यभाव है। श्लोक पढ़ते ही विवाह संस्कारका मङ्गलमल दृश्य सामने आजाता है। कविने वनस्थलीको वधू और वसन्तको वर बनाया है तथा मीनकेतु कामको ही अग्नि रूपसे साक्षी किया है और नवरसाल वन-विहरण शीला कोकिलाको ही वैवाहिक मन्त्रोच्चारण करने वाला द्विज बनाया है। शाबाश ! कविने कमाल कर दिया है। अहो वसन्त ! तुम धन्य हो। और धन्यतर है तुम्हारी यह असाधारण महिमा, जिसके द्वारा तुमने समस्त जगत्को अपना बना लिया। हे कुसुमाकर ! तुम्हारे वैभवका अन्त नहीं है। भगवान्ने यही समझकर तुम्हें अपना स्वरूप माना है, तुम्हारी सदा जय हो।

पाठक ! अब जरा राष्ट्रभाषा-हिन्दीके सुकवियों की सुन्दर रचनाका आस्वादन भी करें।

[कवित्त]

तरु पतझारनमें किसलित डारनमें,
रचित पहारनमें दुनिमें दिगन्त है।
त्रिविध समीरनमें यमुनाके तीरनमें,
उड़त अबीरनमें झुला झुलकन्त है।
छाय रह्यो गुञ्जनमें अलि पुञ्ज-कुञ्जनमें,
गानमें गोपाल ऐसो रूप दरसन्त है।
फूलमें दुकूलमें तड़ागनमें बागनमें,
डगरमें बगरमें बगरो बसन्त है।

❀ ❀ ❀

बाग वन डब्बे फब्बे फबनि अनेकन सों,
सरसों प्रसून पुखराज दरसायो है,
मोतिये सु मोतिये हैं, सेवती सरस हीरे,
ठौर ठौर बौर भौर पन्नको लायो है।
ग्वाल कवि कहत कुसुम मञ्जु मानिक हैं,
सौरभ पसार पुञ्ज पानिप सुहायो है।
शोभा सिरताज ब्रजराज महाराज आजु,
ऋतुराज जौहरी जवाहिर ले आयो है॥

[सवैया]

फूल रही सरसों चहुँ ओर
ज्यों सोनेकी वेश बिछायत सांचे,
चीर सजे नर-नारिन पीत
बड़ी रसरीत वरङ्गना नांचे।
त्यों कवि ग्वाल रसालके बोरन
भौंरन भौंरन ऊधम नांचे,
काम गुरु भयो फाग शुरु भयो
खेलिए आज वसन्तकी पांचे॥

स्वास्थ्य सौन्दर्य

आम और उसके गुण

[लेखक—श्री पं० यमुनालाल जी शर्मा वैद्य]

—:※※※:—

आम संसारमें प्रसिद्ध फल है, इसके समान और कोई दूसरा फल नहीं है। आमके वनके वन देखनेमें आते हैं और बगीचोंमें भी एकसे एक उत्तम वृक्ष छांट-छांट कर लगाये जाते हैं, इसके वृक्ष बहुत बड़े-बड़े होते हैं। कोई-कोई बगीचे ऐसे सघन हैं कि वन भी उनको देखकर मनमें संकुचित होता है, ऐसे बगीचे अंधेरिया बगीचोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। इस देश में कोई ग्राम या नगर नहीं जहाँ दस-बीस आम के वृक्ष न हों। धन्य है उस परमात्माको जिसने ऐसा हमारा शोभायमान देश बनाया। आमके पत्ते एक बालिश्त लम्बे और दो अंगुल चौड़े होते हैं। वसन्त-ऋतु और वर्षा-ऋतुमें लाल-लाल कोमल पत्ते निकलते और फिर हरे हो जाते हैं। फूलके स्थानमें मोर डाली-डाली पर छा जाता है, फल गोल और कुछ लम्बे, कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर पीले और हरे ही रहते हैं। आमका रस अत्यन्त मीठा और चित्तको प्रसन्न करने वाला होता है।

आमके संस्कृत नाम

आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामांग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, अम्र, फलश्रेष्ठ, मृषालक, पिकप्रिय, स्त्रीप्रिय, गन्धबन्धु, कामवल्लभ, माधूली, कोकिलोत्सव, नृपप्रिय, प्रियाम्बु, कोकिलावास, भ्रमरप्रिय, शुकप्रिय, आदि।

हिन्दी और बङ्गालमें—आम। मराठीमें—आंबा। गुजरातीमें—आंबो। कनड़ीमें—माविनफल। तेलंगीमें—मामिड़ी। फारसीमें—आंबा। अरबीमें—अंबज। इंगलिशमें—मेंगों।

कच्चा आम

विशेष खट्टा, गरम, कषैला, रुचिकारक, रुधिर और पित्तके रोगोंको उत्पन्न करता है, जिनको अम्ल-पित्तकी शिकायत रहती है या जिनको खानेके अनन्तर जलन उत्पन्न होती है और खटाई जिनको हानि पहुँचाती है, उनको कच्चा आम या (अमचूर) नहीं खाना चाहिए। इसके अतिरिक्त सर्दी, प्रतिश्याय, कास (खांसी), प्रमेह, श्वास, वीर्यकी निर्बलता, आदि रोगोंमें भी कच्चे आमका सेवन करना हानि-कारक है, पर वात और कफको जीतनेवाला है।

उक्त कवितामें कितना सुन्दर भाव है, इसको हिन्दी कविता-प्रेमी रसिक-सज्जन ही अनुभव कर सकेंगे। वसन्त वर्णनमें क्या हिन्दी, क्या संस्कृत, क्या उर्दू, सभी भाषाओंके कवियोंने वर्णन करनेमें कोरकसर नहीं की, किन्तु महात्मा कबीरदासजीने जो वसन्तको एक दूसरे ही सुन्दर ढङ्गसे वर्णन किया है, वह बड़ा ही हृदयग्राही और आध्यात्मिक भावोंसे ओतप्रोत है। वसन्तका ऐसा वर्णन वस्तुतः महात्माओंके अनुरूप ही है।

ऋतु-वसन्त याचक भया, हरषि दिया द्रुम पात।
ताते नव-पल्लव भया, दिया दूर नहिं जात॥

वृक्षोंको उन दिये हुए पुराने पत्तोंके बदले नूतन सुकुमार पत्ते मिल जाते हैं। कबीरदासजीने उक्त दोहेमें वसन्तको याचक बनाकर दानका महत्त्व दर्शाया है। जो श्रद्धा भक्ति प्रेमसे दान करता है, उसका फल उसे निश्चय ही प्राप्त होगा।

ऋतुराज! तेरा स्वागत है। जिस प्रकार तेरे शुभागमनसे भारतकी वहिः-प्रकृति प्रफुल्लित होती है, उसी प्रकार अन्तः-प्रकृति भी प्रफुल्लित हो। यही करबद्ध प्रार्थना है। शम्।

वृक्ष पर पका हुआ आम

कुछ खट्टापन लिए हुए भारी, वातनाशक और पित्त कुपित करनेवाला गरम होता है।

पालमें पकाया हुआ आम

अत्यन्त स्वादिष्ट और मीठा पित्तको शान्त करनेवाला होता है। यह वृक्ष पर पके हुए आमसे विशेष गुणकारी होता है। इसका रस पतला होनेसे शीघ्र ही पच जाता है और शरीरमें किसी प्रकारकी गरमी उत्पन्न नहीं करता। पौष्टिक, चिकना, भारी, बलदायक, शरीरकी कान्तिको बढ़ाने वाला, शीतल, क्षुधावर्द्धक, मांसको पुष्ट करने वाला तथा पित्तको साम्यावस्थामें लाने वाला है।

अमरस

पके आमका रस पौष्टिक, भारी, वातनाशक, पाचक, तृप्तिकारक और कफको बढ़ाने वाला होता है।

चूसकर खाया हुआ आम

शक्ति बढ़ानेवाला, रुचिकारक, वीर्यको बढ़ानेवाला होता है और शीघ्र पच जाता है व वात-पित्तको दूर करता है।

चाकूसे काटा हुआ आम

शक्ति बढ़ानेवाला, देरमें पचनेवाला, शरीरमें बल, रक्त इत्यादि धातुओंको बढ़ाता है और वात-पित्तके रोगोंको नष्ट करता है।

आम्रावर्त

पके आमको कपड़े पर निचोड़ कर धूपमें सुखा लेते हैं, उसे संस्कृतमें आम्रावर्त्त और हिन्दीमें अम्बिष्ट या अमहट कहते हैं। यह प्यासकी अधिकता, वमन और वात-पित्तको दूर करता है। कुछ रेचक, रुचिकारक और धूपमें सुखानेके कारण साधारण आम्र रसकी अपेक्षा अधिक हल्का होता है।

सेवन योग्य आम

निरोग तथा रोगकी दशामें पका और मीठा ही खाना चाहिए, जो पककर भली प्रकार घुल गया हो। पालका पका हुआ, जिसकी गुठली छोटी हो और जिसमें रङ्ग बहुत कम हो, खानेमें खूब मोटा और खुशबूदार हो, ऐसा आम सदा सेवन करने योग्य है।

रोगों पर आम

मधु (शहद) के साथ आम खानेसे यक्ष्मा, प्लीहा, वात और कफके रोगोंको दूर करता है।

घीके साथ पाचन-शक्ति और बलको बढ़ाता है। वात-पित्तके रोगोंको दूर करता है।

दूधके साथ आम खानेसे रक्तको बहुत उत्पन्न करनेवाला, स्वादिष्ट, भारी, रुचिउत्पन्न करनेवाला ठण्डा, वात-पित्तनाशक और शरीरमें फौरन शक्ति उत्पन्न करता है। जो लोग नित्य शक्ति पहुँचाने वाली उत्साह बढ़ाने वाली औषधियोंका सेवन करके शरीरको पुष्ट और शक्तिशाली बनाना चाहते हैं, उनको एक बार इस दूध और आमके फलकी परीक्षा करनी चाहिए, जो लाभ भारी-भारी रसायनोंसे नहीं देखा जाता है, वह गुण केवल दूध और आमसे देखा जाता है। आममें पौष्टिक तथा विष्टम्भी गुण होनेके कारण यह बादी को दूर करता है, इसलिए बादीके रोगोंसे ग्रसित रोगी आमको बेधड़क खा सकते हैं।

मधुमेह

मधुमेहमें सब प्रकारके मीठे रसवाले पदार्थ मूत्र में शक्कर उत्पन्न करते हैं, इसलिये वह मधुमेह प्रमेह रोगोंमें लाभकारी नहीं है, पर आममें यह बात नहीं है। आम खूब ही मीठा और स्वादिष्ट होनेपर भी शकर उत्पन्न नहीं करता, इसलिए मधुमेह-रोगी भी इसे खा सकता है।

कोष्ठबद्धता (कब्जीयत) में

आमको चूसना खूब ही लाभदायी है। आमाशयमें रहने वाली वायु बिगड़कर सख्ती पैदा करके भोजनके व्यर्थ पदार्थको रोक देती है, इस लिये प्रतिदिन ३-४ आम चूसने से यह शिकायत मिट जाती है। आममें मीठा, तरावट व रेचक गुण होनेसे पाखाना साफ होता है।

अजीर्ण, मन्दाग्नि, आमाशयके रोग, अतिसार, संग्रहणी, पेटके दर्द, खूनकी गर्मी आदि रोगोंमें पके आमोंका सेवन किसी प्रकार भी उचित नहीं।

लू लगने पर आम

कच्चे आमको गरम राखमें भुलभुला (बाफ) कर पानीमें इसका रस निकालकर जिस आदमीको लू लग गयी हो तो उसके मुंह और बदन पर छींटे देना चाहिये या कच्चे आमको गरम राखमें बाफ रस निकालकर सेंधा नमक या शकर मिलाकर पिलाने से लूका असर चला जाता है। बैसाख-ज्येष्ठके दिनोंमें कड़ाकेकी धूप पड़ती हो, उस वक्त इस शर्बतको प्रातःकाल पीनेसे सारे दिन कलेजा ठण्डा बना रहता है, क्षुधा खूब लगती है, हैजेमें यह शर्बत अचूक है। जिस समय उल्टी दस्त होते हैं, प्यास और जलनका जोर विशेष हो तो बार-बार यह शर्बत पिलानेसे उलटी दस्त बन्द हो जाते हैं, जलन दूर हो जाती है और रोगी निरोग हो जाता है।

गलेके रोगों पर

आमके पत्तोंको जलाकर गलेके अन्दर धूनी देनी चाहिये इससे गलेके अनेक रोग दूर होते हैं।

अर्श (बवासीर) में

आमकी गुठलीके चूर्णको ४ माशाकी मात्रामें देनेसे पेटके कृमी बाहर निकल जाते हैं तथा बवासीरके दुखते हुए मस्से नष्ट हो जाते हैं।

प्रमेहमें

आमके मौर (फूल) को छायामें सुखाकर कूटपीस कपड़ छानकर, समान भाग मिश्री मिला ले। नित्य ६-६ माशा चूर्ण सेवन करनेसे प्रमेह, दस्तोंका होना, अरोच और कफ, पित्त रोग नाश होते हैं।

फुन्सियों पर

आमकी छाल पानीमें घिसकर लगावें।

रक्त पित्तमें

आमकी अन्तर छाल १ तोला को कूटकर रात्रि में २ छटांक पानीमें भिगो दे, प्रातः मल छान कर १ तोला शहद डालकर पीनेसे रक्तपित्त शान्त होता है। मुखसे खून गिरना दस्तोंमें खून आना शीघ्र ही बन्द हो जाता है।

बिच्छू और ततैयाके विष पर

आमके अमचूरको पानीमें पीसकर काटे हुए स्थान पर लगाये, इससे विष और फफोले आदि शीघ्र ही आराम होते हैं।

जी मिचलाने पर

आमकी गुठली (भीतरकी सफेद मींगी) के ६ माशे चूर्णको खांड अथवा दहीके साथ सेवन करने से जी मचलाना व पेटकी जलन दूर होती है।

आम का मुरब्बा

अधपके आमको छीलकर छिलका दूर कर लेवे, सिरका अंगूरी और अर्क गुलाबके साथ मिसरीकी चासनी कर अमृतबानमें भर दे। आम और अदरककी बारीक कतरीकर चासनीमें डाले, ऊपर पोदीना बारीक इलायची, लौंग, जीरा-सफेद, जीरा-स्याह, काली मिर्च, जायफल, धनिया, दालचीनी इत्यादिका चूर्ण बनाकर चासनीमें छोड़ देवें और ७ दिन तक अमृतबानका मुँह बन्द करके रखदे, बादमें इसमेंसे खाना शुरू करे; बहुत ही जायकेदार पाचक और चित्तको प्रसन्न करता है।

विशूचिका (हैजे) पर आम का शर्बत

कच्चा आम जिनमें गुठलियां पड़ चुकी हों, लेकर गरम राखमें दबा दो, जब आम बफकर तैयार हो जावे तो निकालकर राख साफ कर दो, फिर एक कपड़ेमें रख रस निकाल लो, रससे दुगुनी खांड मिलाकर शर्बत तैयार करलो और हैजेके बीमारको दो-दो घण्टे बाद दो तोला शर्बत १५ तोला पानी में मिलाकर पिलाओ, दो-तीन बारके पिलानेसे ही रोग यदि प्रारम्भ ही हुआ हो तो दूर हो जाता है, इसका लगातार सेवन रोगकी कष्टसाध्य दशामें लाभकारी है, प्रायः ताजे आम समय पर न मिलनेसे कष्टका सामना करना पड़ता है अतः इस शर्बतको अवश्य तैयार रखना चाहिए।

आमका टिंचर

आमके कच्चे फलोंको जिसमें गुठली सख्त न हुई हो, कुचलकर मोटे कपड़ेमें रस निचोड़ ले,

जितना यह रस हो, उसका चौथा भाग मेंथिलिटिड स्प्रिट या देशी शराब खालिश मिलाकर रख छोड़े इसको रुईके साथ दो-तीन बार लगाते रहनेसे पुराने से पुराने फोड़े दूर हो जाते हैं। दाद और नासूर में भी बहुत लाभ करता है। यह घावपर लगती है, इसलिए सावधानीसे लगाना चाहिए।

आमके अजीर्ण पर

अधिक आमोंके खानेसे कभी-कभी अजीर्ण, मन्दाग्नि और शरीर पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ हो जाती हैं, इसलिये सोंठको पानीमें पीसकर थोड़ा काला नमक मिलाकर पीवे अथवा जामुन खावे। यदि शरीर पर फुन्सियाँ हो गई हो तो असली चन्दन (सन्दल) का इत्र पानीमें मिला कर लगावे या चन्दन को या नीमकी छालको पानीमें घिसकर लगावे इस से आमके विकारसे जो फुन्सियाँ हो गयी हों, वे शीघ्र ही दूर हो जाती हैं।

आम्रपाक

उत्तम पके हुए आमोंका रस १०२४ तोलेमें २५६ तोले खांड, ६४ तोले घी, ३२ तोले सोंठ, १६ तोला काली मिर्च, ८ तोले पीपल और २५६ तोला पानी डालकर सबको एक मिट्टीके बरतनमें इकट्ठा करे और मन्द-मन्द अग्निसे पकावे। पकाते समय लकड़ीकी करछीसे चलाता जाय। गाढ़ा होने पर उसको नीचे उतार उसमें धनिया, जीरा, हरड़े, चित्रक, नागरमोथा, दालचीनी, कलौंजी, पीपलामूल, नागकेसर, इलायचीके दाने, लौंग और जायफल इन प्रत्येक पदार्थका चूर्ण ४-४ तोले डाल देवे, जब वह शीतल हो जावे तब इसमें ३२ तोले शहद डाल देवे, तो यह आम्रपाक बन जाता है। अपनी जठराग्निके बलानुसार सेवन करनेसे शरीर बलवान् और रोगरहित रहता है। यह पाक ग्रहणी, क्षय, श्वास, अरुचि, अम्लपित्त, रक्तपित्त, महाश्वास, और पाण्डुता आदि रोगोंको दूर करता है।

—ः असुर ः—

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०]



प्राचीन पुराण आदि ग्रन्थों तथा ब्राह्मण ग्रन्थोंमें असुरों और उनके युद्धोंका वर्णन बहुत आता है। वेदके मन्त्रोंमें भी वृत्र आदि असुरोंके युद्धोंका उल्लेख आता है। निरुक्तकारने तो वैदिक वृत्रासुरको मेघ माना है। उन्होंने तो स्पष्ट कह दिया है कि "तत्र उपमार्थेन युद्धवर्णा भवन्ति"। परन्तु साथ ही उन्होंने ऐतिहासिकोंका मत दिखाते हुए कहा है कि "त्वाष्ट्रो-असुर इत्यैतिहासिकाः"। पुराणोंमें भी इन ऐतिहासिकों के ही असुरोंका वर्णन किया गया है। इस लेखमें भी इन ही असुरोंका थोड़ा सा परिचय दिया जाएगा।

अति प्राचीन कालमें भारतवर्षमें तीन जातियाँ रहतीं थीं। एक तो उत्तरी भारतमें रहती थी। इस जातिको हम आर्यजाति कहते हैं। दूसरी जाति दक्षिण भारतमें रहती थी। इस जाति का नाम द्रविड़ जाति है। ये दोनों जातियाँ सर्वथा सभ्य थीं। इन दो सभ्य जातियोंके मध्यमें मध्यभारतके वनोंमें एक अतीव असभ्य जाति निवास करती थी। इसी जातिके लोगोंको प्रायः राक्षस कहा जाता था। आर्य जातिमें भी कई अवान्तर जातियाँ थीं। इन अवान्तर जातियोंमें दो जातियाँ अति प्रसिद्ध हैं। एक देव और दूसरी असुर। ये दोनों जातियाँ परस्पर अतीव द्वेष करती थीं। इसी कारण इन दोनों जातियोंमें अति भयङ्कर युद्ध हुआ करते थे। इन ही युद्धोंका वर्णन हमारे प्राचीन ग्रन्थोंमें मिलता है। देव अथवा देवता जातिकी सभ्यताका केन्द्र हिमालय पर्वत था। इसी पर्वतकी सुन्दर घाटियोंमें आर्योंके

वैज्ञानिक, तपस्वी और विद्वान् रहते थे। इसी पर्वतके लोग प्रायः देव कहलाते थे। यहींकी सुन्दरियोंको आर्यावर्त्तके लोग अप्सराएं कहते थे। आर्य सभ्यताका आविर्भाव सबसे पहले यहीं हुआ। यहींसे आर्य सभ्यता सारे संसारमें फैली। यहींसे भरत जैसे मुनि नाट्यशास्त्र जैसी कलाओंको लेकर आर्यदेशमें उनका प्रचार करते रहे। अतः इसी पर्वतको लोग देवलोक मानते थे। कालिदासने सर्वथा सच कहा है कि "पितुः प्रदेशास्तव देवभूमयः"। इसी रमणीय देवलोक पर असुर लोग प्रायः आक्रमण किया करते थे। ये असुर भी पहले पहल इसी देवलोकके ही किसी प्रदेशमें रहते थे। परन्तु ये लोग स्वभावसे ही कुटिल थे। अध्यात्मविद्या इनमें बहुत थोड़ी थी। अतः निवृत्तिमार्ग की ओर ये प्रायः जाते ही नहीं थे। प्रवृत्तिमार्गमें ही ये अति-व्यग्र रहते थे। विषयोपभोग ही इनके जीवनका प्रधान लक्ष्य था। ये धर्म भी यदि करते थे तो वह भी कामनाओंकी पूर्ति हीके लिए। देवजातीय ऋषियोंके जैसे विशाल हृदय इनमें थे नहीं। "यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्" के सिद्धान्त पर ही यह प्रायः चलते थे। इसी कारण प्रवृत्तिमार्गमें देवोंसे भी ये अधिक आगे चले और इन्होंने देवोंसे बढ़कर ऐश्वर्यको अनेक बार प्राप्त किया। ऐश्वर्यके कारण इनको प्रायः मद बहुत होता था। काम क्रोधादिसे उन्मत्त होकर ये लोग अधिक-अधिक विषयोपभोगकी प्राप्तिके लिए कभी परस्पर और कभी देवोंके साथ भी लड़ा करते थे। आर्यावर्त्तके निवासी आर्यलोग तथा सभी ऋषि मुनि देवोंका ही पक्ष करते थे। क्योंकि एक तो वे स्वयं धर्म-परायण थे, अतः अधर्मपरायण असुरोंके विरुद्ध देवोंका सहाय करते थे। दूसरे इन लोगोंमें अधिकांश लोग देवोंकेही वंशज थे। अतः देवोंके साथ मिलकर असुरोंसे लड़ते थे। इस प्रकारके अनेकों इतिहास प्राचीन पुस्तकोंमें मिलते हैं।

इन देवासुर संग्रामोंका फल यह हुआ कि असुर लोग देवलोक— अर्थात् हिमालयसे तो सर्वथा निर्वासित किए गए। आर्यावर्त्तके आर्य तो अति शूरवीर होते थे। अतः आर्यदेशमें असुर प्रवेश भी न कर सके। अतः वे सिन्धुनदीके प्रदेशोंकी ओर भाग गए। सिन्धु के उत्तरी प्रदेशोंमें भी देवजातीय आर्य धीरे धीरे फैल गए और वहाँसे भी असुरोंको निकाला गया। कुछ असुर तो फिर राक्षसोंसे मिल गए। कुछ द्रविड़ देशके वनोंकी ओर भाग गए। कुछ अति दूर दक्षिणमें जाकर बस गए। परन्तु अधिकांश असुर पराजित होकर सिन्धुनदीके प्रदेशके दक्षिणी भागमें जा बसे। जिस देशमें आजकल सिन्ध, मुलतान, मुण्टगुमरी आदिके प्रदेश हैं उसी देशमें जाकर असुर लोग बस गए।

मोहंजो दारोके खण्डहर

इस देशमें रहकर असुरोंने फिर बहुत उन्नति की। उन्होंने यहाँ बड़े-बड़े नगर बसाये। इस प्रदेशमें भूमिको खोद कर मोहजोदारो और हड़प्पाके स्थान पर विशाल नगरोंके खण्डहर निकले हैं। ये खण्डहर उन ही आसुरी नगरोंके हैं। इन खण्डहरोंसे बहुत-सी उत्तम वस्तुएं निकली हैं। कई ऐतिहासिक तो इन खण्डहरोंको द्रविड़ सभ्यताके और दूसरे सुमेरियन सभ्यताके नमूने मानते हैं। परन्तु हमें तो यह प्रतीत होता है कि ये आसुरी-आर्य-सभ्यता ही के नमूने हैं। इन खण्डहरोंमें कुछ मोहरें मिली हैं जिन पर महिष अर्थात् भैंसेकी आकृति बनी है और किसी अज्ञात लिपिमें कुछ लिखा भी है। इसका रहस्य हमें यह प्रतीत होता है—जैसे महाभारतके समय प्रत्येक क्षत्रिय वीरकी ध्वजा पर कोई विशेष चिह्न हुआ करता था और जैसे आजकल भी प्रत्येक जातिकी ध्वजा-का अपना-अपना चिह्न होता है, ठीक इसी प्रकार इन असुरोंके झण्डे पर महिषका चिह्न था। इसी कारण महिष-चिह्न इनकी मोहरों पर मिला है। यह अज्ञात लिपि भी कोई आसुरी लिपि ही अवश्य होगी। इस महिषके चिह्न ही के कारण इन आसुरोंके राजाको आर्यावर्त्तके लोग महिषासुर कहा करते थे। जब यहाँ इन असुरोंने बहुत बल पकड़ा तो पुनः देवोंको सताने लगे। इस बार तो एक विचित्र ही घटना हुई। महारानी लक्ष्मीबाई और ताराबाई की तरह कोई आर्य महिला कटिबद्ध हो गई और सेना लेकर उसने

महिषासुर पर आक्रमण किया। बड़ा घोर युद्ध हुआ, महिषासुर भी मारा गया और असुरों तथा उनके राज्यको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। इसी युद्धका वर्णन मार्कण्डेयने पौराणिक ढङ्गसे किया है। तभीके विध्वस्त आसुर नगर अब खोदकर निकले हैं। इस भयङ्कर पराजयके अनन्तर असुर लोग भारतवर्षमें पैर न जमा सके। धीरे-धीरे उनको पूर्णतया निर्वासित किया गया और हिन्दूकुश-पर्वत तक देव जातीय आर्योंके राज्य स्थापित हो गये। असुर लोगोंने फिर फारस देशको अपना निवास-स्थान बनाया। यहाँसे भी इनके युद्ध देवोंके साथ हुआ करते थे। दुष्यन्त आदि आर्य देशके राजा लोग यहाँ भी देवोंके सहायक बनकर देवासुर संग्रामोंमें लड़ते थे। पारसी लोगोंके धर्म-ग्रन्थोंसे ज्ञात होता है कि इन असुरोंके सदा देव शत्रु रहते थे। देव तो वे उसे कहते हैं जिसे हम भूत कहते हैं। माजन्दर देश अर्थात् माहेन्द्र देश (भारतवर्ष) के देवोंसे वे बहुत ही डरते थे। उनके सबसे बड़े देवताका नाम 'अहुरमज्द' अर्थात् असुर मज्द है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये लोग वे ही देवोंके विद्वेषी असुर हैं। 'स' को 'ह' बोलना तो इनका स्वभाव ही था। जैसे वे सिन्धुको हिन्दु, सप्तको हप्त आदि प्रयोग करते थे, वैसे असुरको अहुर कहते थे। इन असुरोंमें फिर एक महात्मा उत्पन्न हुआ। इस महात्माका नाम 'जरथुष्त्र' (Zorostor) था। इस महात्माने इन असुरोंमें भूले हुए आर्य-धर्मका पुनः प्रचार किया। उसीके आदेशानुसार इन्होंने मौंजीबन्धन करना, यज्ञ द्वारा देवताओंको तृप्त करना, वैदिक देवताओंको हवि देना उनकी स्तुति आदि करना आदि धार्मिक काम पुनः आरम्भ किए। इनमें भी आर्यरीतिके अनुसार चातुर्वर्ण्यकी व्यवस्था थी। इनके विवाह आदि संस्कार भी हमारी ही तरह होते थे। निर्वाण ज्ञानकी ये लोग भी कामना करते थे। ये भी तीन बार सन्ध्या करते थे। ये भी गोपालन करते थे। गायको ये भी पवित्र मानते थे। ये भी देवताओंसे गोधन माँगते थे। गोदानको ये भी पुण्य समझते थे। इस प्रकारसे आर्य-धर्मका इन असुरोंमें पुनः प्रचार हुआ। ये सभी बातें इनके अवस्ता आदि धर्म-ग्रन्थोंसे ज्ञात होती हैं। फारस देशमें जब इनकी संख्या बहुत बढ़ गई तो ये लोग पश्चिमकी ओर प्रस्थान करने लगे। धीरे-धीरे इन्होंने रूस और जर्मनीमें अपने राज्य स्थापित किये। वहाँसे ये ग्रीस, टर्की, फ्रांस, इंगलैण्ड, नार्वे आदि देशोंको चले गये। इस प्रकारसे सारे यूरोपमें ये असुर लोग फैल गये। यूरोप पहुँचने तक इन्होंने यज्ञकी प्रक्रिया भूल डाली, परन्तु देवताओंकी उपासना तो करते ही रहे।

आजकल इन्हीं असुरोंके राज्य संसारके अधिकांश देशोंमें हैं। ये सभी यूरोपियन जातियाँ आसुरी शाखाके आर्योंमें से हैं। अपने आर्य-धर्मको तो ये सर्वथा भूल गये हैं। परन्तु अपनी आसुरी-प्रकृति इनको अब भी नहीं छोड़ती। अब भी अनात्मवादमें ये अग्रसर हैं। अब भी प्रवृत्ति-मार्गमें इन्होंने आश्चर्यजनक उन्नति की है। परन्तु अध्यात्म-मार्गमें अब भी पहलेकी तरह अथवा उससे भी अधिक अवनत हैं। भोगैश्वर्यके साधनोंका प्रपंच इन्होंने अब भी बड़ा विस्तृत बना रखा है। अब भी न केवल देवोंको अपितु समस्त जगत्‌को इन्होंने दुःख सागरमें डुबो दिया हुआ है। अपनी आसुरी प्रकृतिका फल इनको सदा यही मिलता रहा है कि सैकड़ों वर्षोंके प्रयत्नोंसे ये लोग ऐश्वर्यमें अत्यन्त उन्नति करते रहे हैं। और उन्नति कर-करके शीघ्र गिरते ही आये हैं। अब भी आधिभौतिक उन्नतिकी तो इन्होंने पराकाष्ठा कर दी है। और इस उन्नतिके विनाशके चिह्न भी प्रकट होने लगे हैं। क्योंकि यह इनके आसुरी-स्वभावका फल है।

असुरोंका यह इतिहास आपको संस्कृत-साहित्यका ऐतिहासिक दृष्टिकोणसे अध्ययन करनेसे अवश्य ज्ञात होगा। कई ऐतिहासिक शङ्का करते हैं कि भारत जैसे समृद्ध देशको छोड़कर दूसरे देशोंको आर्य लोग कभी नहीं जाते यदि वे भारत ही के आदि निवासी होते। अतः वे पश्चिम या उत्तरके देशोंसे ही भारतमें आये हैं। इस बातका उत्तर तो ऊपरके

महायज्ञके कुछ संस्मरण

[लेखक—एक प्रत्यक्षदर्शी]



भारतकी प्राचीन एवं अर्वाचीन राजधानी दिल्लीमें पुण्य-सलिला यमुनाके पवित्र तट पर सुदीर्घ-कालके अनन्तर गत माघ मासमें विश्वकल्याणार्थ शतमुख-कोटिहोम-महायज्ञ सुसम्पन्न हुआ। यह महायज्ञ वसन्तपञ्चमीके सुमुहूर्तसे प्रारम्भ हुआ था। यज्ञमण्डप बहुत सादा आडम्बर रहित घासफूसकी छप्पर बन्दीसे बनाया गया था; जिसमें प्राचीन धर्म-शास्त्रोक्त विधिके अनुसार १०० कुण्ड निर्मित किये गये थे। एक-एक कुण्ड पर १२ विद्वान् ब्राह्मण अनुष्ठान क्रिया सम्पन्न कर रहे थे, जिनमें एक आचार्य, एक ब्रह्मा तथा १० होता (आहुति देनेवाले) थे। साथ ही यज्ञमंडपके चारों दिशाओंके क्रमसे चारों वेदों तथा पुराण उपनिषद् रामायण महाभारत गीता आदिके पाठ करनेवाले विद्वान् विराजमान थे। इस प्रकार इस महदनुष्ठानमें भारतके विभिन्न प्रान्तोंसे निमंत्रित किये गये लगभग १५०० विद्वानोंने भाग लिया। इस महायज्ञके प्रधानाचार्य नासिक-निवासी श्रीधर अण्णा शास्त्री वारे महोदय थे। ब्रह्मा काशीके याज्ञिकप्रवर श्री अमरनाथजी शास्त्री थे और यजमान थे नरवरके तपोमूर्त्ति वयोवृद्ध श्री ब्रह्मचारी जीवनदत्तजी महाराज। यज्ञ प्रातः ६ से १२ तथा अपराह्नमें ३ से ६ तक होता था। दश दिनमें सब मिलाकर एक कोटि श्रीगायत्री मंत्रकी आहुतियाँ दी गईं थीं। सैकड़ों मन शाकल्य (हवन सामग्री) इस महायज्ञमें अग्निनारायणको सौ हवन कुण्डों द्वारा समर्पण की गई। माघ शु० १५ बुधवारको सौ कुण्डों पर १०० मन घृतसे पूर्णाहुति प्रदान की गई। यह महायज्ञ और अनेकों सभा सम्मेलन जहाँ हुए उस स्थानका नाम धर्मनगर रक्खा गया था।

धर्मनगरका दृश्य

यमुना पर सुरम्य बालुकामय विस्तृत प्राङ्गणमें धर्मनगरकी रचना की गई थी। आगत अतिथियों, साधु महात्माओं, विद्वानों, याज्ञिकों, आचार्यों एवं सद्गृहस्थोंके ठहरनेके लिए सहस्रों तम्बू छोलदारियाँ और शामियाने आदि रेतीमें लगाये गये थे। यज्ञमंडप तथा सभामञ्च (पंडाल) बहुत ही विस्तृत एवं आकर्षक रूपसें बनाये गये थे। बिजली पानी टेलिफोन डाक रेडियो और ध्वनिविस्तारक यंत्रों (लाउडस्पीकरों) का समुचित प्रबन्ध था। रेडियो स्टेशनसे गुम होनेवाले स्त्री बच्चोंकी नामावली

लेखसे ही स्पष्ट है कि आर्य लोग अपनी इच्छासे भारतवर्षको छोड़ कर विदेशोंको नहीं गये। वे तो अपने ही भाइयों द्वारा इस देशसे निर्वासित किये गए। अतः विवश हो कर उनको धनाढ्य देशको छोड़ कर दरिद्र देशोंकी ही शरण लेनी पड़ी। दूसरी बात यह है कि यह कोई नियम नहीं कि धनाढ्य देशके लोग कभी विदेश जा कर उपनिवेश नहीं बसाते। एशियाके पूर्वीय प्रदेशोंमें भी तो आर्य रहते हैं। भला वे भारतको छोड़ कर वहाँ क्यों गये? कई आधुनिक विद्वान् तो गवेषणा करके यह सिद्ध करनेका प्रयत्न कर रहे हैं कि आर्यसभ्यता अमेरिकाके मेक्सिको आदि प्रदेशोंमें भी किसी समयमें विद्यमान थी। इस समय भी यदि भारतवर्षको आस्ट्रेलिया जैसा कोई महाद्वीप मिल जाए तो मैं यह समझता हूँ कि करोड़ों की संख्यामें लोग भारवर्षको छोड़ कर वहाँ जाकर बस जाएंगे, तो भला प्राचीन समयमें भारतसे लोग बाहिर क्यों न जाते? अतः यह सिद्ध है कि आर्य भारतवर्ष हीके आदि निवासी हैं। उन्हींकी एक शाखा पश्चिमके समस्त देशोंमें फैल गई। शिवम्।

और परिचय निरन्तर घोषित होते रहते थे। यमुना पार करनेके लिए ३ अस्थाई पुल बनाये गये थे, जिन पर दिन रात लाखों मनुष्योंके जनसमूहका आवागमन बना रहता था। धर्म-संघ तथा विविध संस्थाओंके स्वयंसेवक एवं पुलिसका प्रबन्ध सराहनीय था। भोजनालयका विशाल स्वरूप देख कर तो स्तम्भित रह जाना पड़ता था। विविध प्रकारकी सात्विक भोजन-सामग्रीका भण्डार रात्रिके १२ बजे तक खुला रहता था। प्रतिदिन बीस हजारसे भी अधिक व्यक्ति भोजन करते थे। विशाल भोजनालयके अनन्त भोजन भण्डारका दृश्य देखकर सहसा भारतके प्राचीन वैभवकी सुनहरी छटाका स्मरण हो जाता था।

यों तो सनातन धर्मी जनताके अनेक मेले कुम्भ सूर्यग्रहणादि पर्वों पर हुआ करते हैं, परन्तु धर्मके किसी विशेष आयोजनमें आधुनिक समाचार पत्रोंके समुचित सहयोगके बिना देशके कोने-कोनेसे ऐसे अपार जनसमूहका एकत्रित होना अवश्य ही विशेष महत्त्व रखता है। वसन्त-पञ्चमीसे पूर्णिमा पर्यन्त दिल्लीमें किसी भी हिन्दू सद्गृहस्थका घर ऐसा न होगा जिनके यहाँ यज्ञ दर्शनार्थ आये हुए एक दो सम्बन्धी या अतिथि न ठहरे हों।

धर्मनगरमें सम्मेलन

पण्डालमें व्याख्यानों उपदेशों और कथा कीर्त्तन आदिका विशाल आयोजन था। धर्मनगरमें हुए महत्त्वपूर्ण सम्मेलनोंका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

ता० ५ फरवरीको मध्याह्न १२ बजेसे अ० भा० धर्मसंघका तृतीयवार्षिक महाधिवेशन ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री ११०८ ब्रह्मानन्दजी सरस्वतीके सभापतित्वमें प्रारम्भ हुआ। अन्यान्य आवश्यक आरम्भिक कार्यवाहियों और स्वागताध्यक्ष श्रीमान् सेठ वेणीप्रसादजी जयपुरियाके स्वागतभाषणोपरान्त सभापति महोदयका सारगर्भित पाण्डित्यपूर्ण भाषण हुआ। आपने अपने इस भाषणमें वर्तमान सभी विषम समस्याओंका स्पष्टीकरण करके शारीरिक वीरताके लिए जनताका आह्वान करते हुए बतलाया कि—

"निर्बलता भी मनुष्यका एक अपराध है, उसे अपना स्वत्व एवं न्याय न मिलनेमें निर्बलता ही कारण है। सामान्य रूपसे स्वत्व या न्याय निर्बलको माँगनेसे भी नहीं मिलता। बलवान् होने पर क्या सर्वस्वापहारी, क्या अर्धापहारी सबके सब स्वयं आपका चरणचुम्बन करते हुए आपका स्वत्व आपको अर्पण करके अपने देश चले जायेंगे।"

इसके उपरान्त महायज्ञ और धर्मसंघके सर्वस्व तपोमूर्त्ति वीतराग श्री १०८ स्वामी हरिहरानन्दजी सरस्वती (करपात्री) महाराजका प्रभावशाली भाषण हुआ। आपने अपने भाषणमें बताया कि—

"धर्मसंघ भारतकी पूर्ण स्वाधीनता प्राप्तिके लिए स्थापित हो कर कार्य कर रहा है। भारतवर्ष आर्योंकी भूमि है, विदेशी लोग यहाँ हमारे अभ्यागत (अतिथि) हो कर रह सकते हैं, स्वामी हो कर नहीं। धर्मसंघ कांग्रेस, हिन्दूमहासभा, मुसलमान, ब्रिटिश और संसारके अन्य राष्ट्रोंका भी शुभ चिन्तक है। वह संसारके किसी भी राष्ट्र या वर्गका शत्रु नहीं।" आगे चलकर आपने कहा कि—"जब विदेशी शक्ति किसी राष्ट्र पर शासन करती है तब शोषण करनेके लिए वह उसके शारीरिक मानसिक एवं सांस्कृतिक बलको पीस डाला करती है।" आधुनिक शिक्षा-प्रणालीकी निन्दा करते हुए आपने कहा कि—"ऐसी शिक्षाका ही फल है कि पाकिस्तान जैसी माँगे आज हमारे सामने आती हैं। हम भारतका विभाजन कभी नहीं चाहते, भारत सर्वदा अखण्ड ही रहेगा।"

इस प्रकार ४ दिन तक धर्मसंघका महाधिवेशन होता रहा। दूसरे दिन रात्रिमें कार्यकारिणी एवं स्थायी समितिकी बैठक तथा श्रीस्वामी रामदेवजी महाराजके सभापतित्वमें जो सभा हुई थी उसमें रात्रिके एक बज गये थे, फिर भी जनताको समयकी कुछ भी सुध नहीं थी। दर्शकों और श्रोताओंकी भीड़ प्रतिदिन बढ़ती जाती थी। पाँच-छः लाख दर्शक

नित्य धर्मनगरमें दिखाई देते थे। इस महाधिवेशनमें कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। उन सबका विवरण इस छोटेसे लेखमें आना सर्वथा असम्भव है। दो प्रस्ताव तो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं चिरस्मरणीय थे। जिनमें एक था दिल्लीमें संस्कृतका एक महान् विश्वविद्यालय स्थापनाके लिए, जिसमें आर्यसंस्कृति-रक्षाकी दृष्टिसे भारतीय प्राचीन आर्य शैलीके अनुसार शुद्ध संस्कृत तथा वेद वेदाङ्गोंका अध्ययनाध्यापन हो। दूसरे दिन इस प्रस्तावित महाविद्यालयके लिए खुर्जानिवासी श्रीमान् सेठ कन्हैयालालजी गोयनका महोदयकी ओरसे एक लाख रुपया देनेकी घोषणा हुई, इससे उपस्थित जनताको महान् हर्ष हुआ। दूसरा प्रस्ताव था पांच लाख स्थाई निधिकी योजनासे धर्मसंघके हिन्दी अंग्रेजीमें दो दैनिक पत्र निकालनेके लिए। इसके लिए भी दो लाख के शेयर खरीदे जा चुके थे और आशा है प्रस्तावित द्रव्यपूर्ण होते ही एक विश्वस्त लिमिटिड कम्पनीके द्वारा दोनों पत्र भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगे।

इसके अतिरिक्त उन्हीं दिनों धर्मनगरमें जो और सम्मेलन हुए, उनकी केवल नामावली मात्र हम यहाँ दे रहे हैं—

(१) संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन—जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री ११०८ पूज्यपाद श्री स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ जी महाराज गोवर्द्धनपीठाधीश्वर (पुरी) के सभापतित्वमें।

(२) वैदिक सर्वशाखा-सम्मेलन-रामानुज वैष्णव-सम्राट् श्री ११०८ देवनायकाचार्यजी महाराज (बम्बई) के सभापतित्वमें।

(३) विद्वत्सम्मेलन—महामहोपाध्याय श्री पण्डित अनन्तकृष्णजी शास्त्री (कलकत्ता) के सभापतित्वमें।

(४) वर्णाश्रम स्वराज्य-संघ सम्मेलन—जगद्गुरु शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वरके सभापतित्वमें।

(५) स० ध० पत्रकार सम्मेलन—श्री प्रो० जयेन्द्रराय भगवान्लाल दूरकाल एम० ए० (अहमदाबाद) के सभापतित्वमें।

(६) गौ सम्मेलन— श्री १०८ स्वामी करपात्रीजी महाराजके सभापतित्वमें।

(७) साधु-सम्मेलन—जगद्गुरु शंकराचार्य श्री ११०८ स्वामी भारतीकृष्णतीर्थजी महाराजके सभापतित्वमें।

(८) महिला-सम्मेलन—श्री १०८ स्वामी रामदेवजी महाराजके सभापतित्वमें।

इस प्रकार धर्मनगर (दिल्लीमें) दश दिन तक अद्भुत आनन्द उल्लास साधु सत्सङ्ग शास्त्रचर्चा सदुपदेश श्रद्धा और सङ्गठनका शान्तिदायी साम्राज्य दिखाई दिया। यह महायज्ञ श्री १०८ स्वामी करपात्री जी महाराज एवं श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराजके अद्भुत प्रभाव अथक-परिश्रम और सत्प्रेरणासे सुसम्पन्न हुआ। अतः इसका सर्वाधिक श्रेय इन दोनों लंगोटीधारी वीतराग महात्माओंको ही है। सैकड़ों अमेरिकन यूरोपियन राजकर्मचारी एवं उच्चाधिकारी नित्य धर्मनगरमें आते थे और पूछते थे कि "करपात्री कौन है ?" जब उन्हें एक दुबला पतला तपस्वी (जिसके सिर पैर नंगे और तन पर पूरा कपड़ा भी नहीं) दिखाया जाता था तो वे आश्चर्यचकित रह जाते थे। अ० भा० साधुमहासम्मेलनके स्वागताध्यक्ष श्री १०८ पूज्यपाद स्वामी कल्याणदेवजी महाराजने जिस लगन, त्याग और तत्परतासे प्रत्येक विभागका निरीक्षण व सञ्चालन किया उसका उदाहरण मिलना कठिन है। आप प्रत्येक व्यक्तिसे बड़ी सहृदयतासे मिलते और उस की बातको सुनकर सबको सन्तोषजनक उत्तर देते थे। आपकी अद्भुत कार्यकुशलता, त्याग एवं सरल साधुस्वभावके महान् व्यक्तित्वने सबको प्रभावित किया।

पूर्णमासी बुधवारको पूर्णाहुतिके अनन्तर जलूस, नगर परिक्रमा और अवभृतस्नानका दृश्य बड़ा ही अभूतपूर्व

था। सायंकाल ५ बजे ५ लाख दर्शकोंने यमुना नदीमें अवभृत स्नान किया। उसके अनन्तर ६०००० ब्राह्मणों तथा अन्य वर्गोंने यज्ञका प्रसाद लिया। यज्ञकी सफलता पर वीतराग होते हुए भी श्री स्वामी करपात्रीजी महाराज अवभृत-स्नानके अनन्तर अत्यन्त प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। ऐसा महायज्ञ या तो कोई महाराजा कर सकता है या वीतराग योगी, तीसरेसे यह अशक्य है। एक ही अकिञ्चन लंगोटीधारी क्षीणकाय किन्तु तपस्वी भगवदनुरक्त त्यागी व्यक्ति अपने तेज और तपके प्रभावसे क्या कर सकता है इसका यह ऐतिहासिक महदनुष्ठान एक ज्वलन्त उदाहरण है।

इस शतमुख कोटिहोम महायज्ञके स्मारक रूपमें एक अष्टधातु निर्मित स्तम्भ स्थापित होगा। यज्ञशालाके केन्द्रीय हवनकुण्डकी भूमि इसकी स्थापनाके लिए निश्चित की गयी है। यह भी सुना जाता है कि सभी कुण्डोंकी भस्म और यज्ञ विवरणात्मक पुस्तक आदि सामान भी स्तम्भकी नींवमें दिया जायगा।

श्री १०८ पूज्यपाद स्वामी करपात्रीजी महाराजके सत्प्रयत्नसे इसी चैत्रमासके अन्तमें कानपुरमें भी एक ऐसा ही महायज्ञ होने वाला है, उसका आयोजन प्रारम्भ हो गया है। आशा है भगवत्कृपासे वह यज्ञ भी दिल्लीकी भांति ही सफल होगा।

श्रीपरशुराम जयन्ती

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]



तेरह वर्ष पूर्व 'श्रीस्वाध्याय' के स्वनामधन्य संस्थापक सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम पूज्यपाद आचार्यचरण श्री १०८ अमृतवाग्भवजी महाराजने भगवान् श्री परशुरामकी उपासना तथा उनकी जयन्ती प्रतिवर्ष समुचित रूपसे मनानेके लिए श्रीपरशुराम-स्तोत्रका निर्माण करके भारतीय जनताको उद्बोधित किया था कि—अन्याय अत्याचार एवं दुष्टशासनका समूलोन्मूलन करने तथा आततायी अन्यायियोंको सन्मार्ग पर लानेके लिए भगवान् श्रीपरशुरामकी उपासना द्वारा उन्हींका आदर्श भारतीय जीवनमें ढालनेकी भारतको ही नहीं अपितु समस्त संसारको परमावश्यकता है। तदनुसार हम भी प्रतिवर्ष अपने लेखों द्वारा इस पुनीत कार्यके लिए पाठकोंको प्रोत्साहित करते रहे हैं। 'श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार' 'मारवाड़ी ब्राह्मण' 'विश्वबन्धु' आदि कई पत्रोंने भी इस राष्ट्रकल्याणकारी कार्यमें हमें पूर्ण सहयोग दिया, उसीके फलस्वरूप अब भारतके प्रत्येक प्रान्तमें यह जयन्ती सोत्साह मनाई जाने लगी है। पंजाबके अमृतसर मुल्तान रावलपिण्डी आदि कई बड़े-बड़े नगरोंमें तो यह जयन्ती विशेष आयोजन एवं सामूहिकरूपसे प्रतिवर्ष मनाई जाती है और धीरे-धीरे इसका महत्त्व और प्रचार सर्वत्र हो रहा है यह महान् प्रसन्नताकी बात है।

संसारकी वर्तमान विषम परिस्थिति पाठकोंके सम्मुख है। मदोन्मत्त अनार्य राष्ट्रोंमें प्रजातन्त्र और स्वतन्त्रताके नाम पर नररक्तकी नदियाँ बहने लगी हैं। अब विश्व-व्यापी युद्धकी लपटें भारतको भी चारों ओरसे लपेटने लगी हैं। धार्मिक, राजनैतिक, राष्ट्रिय और आत्म-सम्मानकी क्रान्तिका अन्धकार पूर्ण दुःखद-भविष्य भारतको आत्मसात् करना चाहता है। रक्षाके साधनोंसे शून्य भारत अनाथवत् अपनी रक्षाका उपाय ढूंढ रहा है, कुछ करना चाहता है परन्तु परतन्त्रतावश सभी मार्ग बन्द हैं। ऐसी स्थितिमें भगवान् श्रीपरशुरामका आदर्श ही भारतका उद्धार कर सकता है। अतः प्रत्येक भारतीयसे हमारी पुनः प्रार्थना है कि वे आगामी वैशाखकी

अक्षयतृतीयाको (ता० २५ अप्रैलको) भगवान् श्रीपरशुरामकी जयन्ती प्रत्येक नगर और ग्राममें सामूहिक रूपसे मनावें। भगवान् श्रीपरशुरामजीका संक्षिप्त जीवनवृत्त और पूजन विधि इसी अङ्कके पृ० १६-२० में श्रद्धेय विद्वर श्री पं० हनुमान् शर्माजीके 'हिन्दू-पर्व' लेखमें दिया है, वहाँ देखें। इसके अतिरिक्त इस पुण्यजयन्ती पर श्रीमद्भागवतके नवम स्कन्धकी भगवान् श्रीपरशुरामकी कथा जनताको सुनाई जावे और उनकी युद्धवीरता, दानवीरता, मातृपितृभक्ति, राष्ट्रप्रेम, विश्वकल्याण भावना आदि अनीर्वचनीय गुणोंको राष्ट्रविज्ञानकुशल विद्वान् सर्वसाधारण जनताको भली-भांति समझाकर राष्ट्ररक्षाके लिए प्रत्येक भारतीयको उद्‌बुद्ध करके इस अक्षया पर राष्ट्रोद्धाररूपी अक्षय पुण्यके भागी बनें।

'श्रीपरशुराम-स्तोत्र' राष्ट्रभाषानुवाद सहित हमारे यहाँसे विना मूल्य केवल मार्ग व्ययके लिए -) का टिकट आने पर भेजा जाता है। प्रथम वर्षके 'वसन्ताङ्क' में हमने श्रीपरशुराम जयन्तीके प्रत्येक अङ्ग पर पर्याप्त रूपमें प्रकाश डाला था। उसी अङ्कमें श्रीपरशुरामस्तोत्र हिन्दीपद्यानुवाद सहित प्रकाशित हुआ था और द्वितीय वर्षके 'वसन्ताङ्क' में 'श्रीपरशुरामाष्टक' राष्ट्रभाषानुवाद सहित प्रकाशित हुआ है। जो सज्जन लाभ उठाना चाहें वे उक्त अङ्कोंमें देखें। अवतार तथा महापुरुषोंकी जयन्तियाँ इतिहासको जीवित रखने और राष्ट्रको समुन्नत बनानेका प्रधान साधन हैं। अतः हम चाहते हैं कि भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण जयन्तीकी भांति भगवान् श्रीपरशुराम, भगवान् शंकराचार्य, महाराजा विक्रमादित्य, महाकवि कालीदास, वीरवर महाराणा प्रताप, महाराणी लक्ष्मीबाई और छत्रपति शिवाजी आदि महापुरुषोंकी पुण्य जयन्तियाँ भी प्रत्येक ग्राम-ग्राममें मनाई जावें, जिससे हमारे विशाल किन्तु शारीरिक मानसिक एवं आत्मबलसे हीन-राष्ट्रको अपने आत्मस्वरूपका ज्ञान हो कर नवजीवनका सञ्चार हो।

साहित्य-परिचय

ज्योतिषशास्त्र कार्यालय रिवाड़ी (पंजाब) से वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० प्रह्लाददत्तजी ज्योतिर्विद् महोदयने हमारे पास छोटी बड़ी सात पुस्तकें समालोचनार्थ भेजी हैं, स्थानाभावसे इस अङ्कमें उनकी समालोचना न हो सकी, उनका परिचय आगामी अङ्कमें दिया जायगा। इसी प्रकार और भी कई पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। परन्तु जिन प्रकाशकोंने केवल एक-एक प्रति भेजी है उनकी समालोचना न हो सकेगी। समालोचनाके लिए नियमानुसार प्रत्येक पुस्तककी दो-दो प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

'सनातन' 'कल्पवृक्ष' 'आदेश' 'धन्वन्तरि' 'जय-भूमि' 'भारती' 'राष्ट्रभाषा' आदि मासिक पत्रों और 'गोपाल' 'आनन्द' 'सनातनधर्म-प्रचारक' आदि जिन साप्ताहिक पत्रोंने गत माससे अपने पत्र परिवर्तनमें नियमित रूपेण हमारे पास भेजना प्रारम्भ किया है उनका हम हृदयसे स्वागत करते हैं।

चतुर्थवर्षका नववर्षाङ्क (विशेषाङ्क)

इस अङ्क निर्माणकी विशेष आयोजना आरम्भ हो गई है, अतः भारतके विशिष्ट विद्वान् अपनी कलात्मक मौलिक रचनाएं शीघ्र भेजनेकी कृपा करें। यह अङ्क तृतीयवर्षके नववर्षाङ्कसे भी अधिक सुन्दर, रोचक, आकर्षक, उपादेय एवं पृष्ठ संख्यामें भी बड़ा होगा। महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्दजी, प्रो० श्री भगवद्दत्तजी बी० ए०, श्री भूपेन्द्रनाथजी वन्द्योपाध्याय एम० ए०, व्याकरणाचार्य श्री पं० मनोहरलालजी शास्त्री एम० ए०, विद्याभूषण विद्यावागीश श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत और श्री अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालङ्कार आदि सुप्रसिद्ध विद्वानोंके लेख विशेषाङ्क के लिये प्राप्त हो चुके हैं। अपनी विशिष्ट रचनाएं निम्न पते पर रजिस्ट्री द्वारा भेजनी चाहिए।

सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'

सोलन (शिमला)।

श्रीमती गान्धीका निधन

गत मासमें विश्वविख्यात महात्मा गान्धीजीकी सहधर्मिणी श्रीमती कस्तूरबाईका स्वर्गवास हो गया। उनके निधन पर सर्वत्र शोक मनाया जा रहा है। महात्मा श्रीगांधीजी और उनके समस्त परिवारके साथ 'बा' के वियोग पर 'श्रीस्वाध्याय' परिवारकी ओरसे हम हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। भारतके प्रत्येक पत्र-पत्रिकाने 'बा' के गुणोंकी भूरिभूरि प्रशंसा की है। वास्तवमें जितनी प्रशंसा उनकी की गई है उससे भी उनका स्थान कहीं अधिक ऊंचा है। हम तो समझते हैं कि यदि श्रीमहात्मा गांधीजीको ऐसी सुशील आदर्श पतिव्रता नारीका सहयोग न मिलता तो वे राजनैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रमें इतनी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते थे। श्रीमती कस्तूरबाई का आदर्श जीवन एवं पतिभक्ति भारतीय नारियोंके लिए अनुकरणीय है। प्राचीन संस्कृति सभ्यता और कट्टर सनातनधर्मी आस्तिक परिवारके लालन पालन और शिक्षाने ही श्रीमती गांधीको इस योग्य बनाया था। इससे आधुनिक प्रगतिवादी सुधारकों और जो लोग हमारी प्राचीन संस्कृति और शिक्षाको उन्नतिमें बाधक समझते हैं उनकी आंखें खुलनी चाहिए। यदि श्रीमती गांधीका आधुनिक विदेशी सभ्यतामें पालन पोषण हुआ होता तो आज उन्हें यह स्थान कदापि नहीं मिलता। इसका अनुभव स्वयं महात्माजी भी करते होंगे। अपने पुराने संस्कारोंको वे कभी भुला न सकीं, पुरी पहुँचने पर वे भगवान् श्रीजगन्नाथ जीके दर्शनके लिए चली ही गयीं। मृत्युके एक दिन पहले जल तक त्याग दिया था, पर गङ्गाजलका नाम सुनते ही मुँह खोल दिया और उसे पीकर कुछ देर शान्तिका अनुभव किया। ऐसी बातों पर पतिसे मतभेद होने पर भी उन्होंने बड़ी सुन्दरताके साथ पतिव्रत धर्म निबाहा। उसी के फलस्वरूप उनकी मृत्यु भी ऐसी हुई है जिसके लिए लाखों हिन्दूनारियाँ भगवान्से प्रार्थनाएँ किया करती हैं। पति, पुत्र, पौत्रों और परिजनोंको छोड़कर शिवरात्रिके पुण्यपर्व पर महाप्रयाण ही उनके त्याग और तपस्याका प्रबल प्रमाण है। ऐसी आदर्श महिला के लिए जितना भी लिखा जाय थोड़ा है। —सम्पादक।

वर्धापन

भारतके एक मात्र वन्दनीय आचार्यप्रवर श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य वेदवेदान्तप्रवर्तकाचार्य अद्वैतसिद्धान्तसंरक्षक, सनातनधर्मसर्वस्व, श्रीगोवर्द्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री ११०८ शङ्कराचार्य श्रीभारती कृष्णतीर्थ स्वामीजी महाराजने अखिल भारतवर्षीय सनातनधर्म-प्रचारक, प्रसिद्ध कथावाचक एवं सङ्कीर्तनाचार्य दिल्ली निवासी श्री पं० आत्माराम जी 'शोख' को उनकी कलात्मककृति, कथा कीर्तन-गायन एवं सनातनधर्म-प्रचारकी अनूठी प्रणालीसे प्रसन्न होकर "धर्मसेवा-धुरन्धर" "धर्ममनीषि" "कीर्तन-केसरी" की उपाधियोंसे गौरवान्वित एवं सम्मानित करके अपने आशीर्वादसे अनुगृहीत किया है। इसी प्रकार श्रीजगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री ११०८ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराज ज्योतिर्मठाधीश्वर बद्रिकाश्रमने भी आपको "श्रीहरिकथा विशारद" की उपाधिसे सुशोभित किया है।

श्री 'शोख' जी हमारे चिरपरिचित मित्र और 'श्रीस्वाध्याय' के परम हितैषी हैं। इस सम्मान प्राप्ति पर हम आपको हार्दिक वर्धापन (बधाई) देते हैं।

—सम्पादक

जीवनकी समस्या

[श्रीआत्माराम 'शोख']

करें ब्रह्म, जग, जीव, ज्ञान, या बात सुनें मनकी।
मायासे झक—झोर करें या फिक्र करें तनकी॥
करें ईशका ध्यान प्रेमसे या चिन्ता धनकी।
'शोख' न सुलझी कभी समस्या ये ही जीवनकी॥

"श्रीस्वाध्याय" के गतांक

'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक अङ्ककी भारतके गण्य मान्य धुरन्धर विद्वानों एवं सुप्रसिद्ध समाचार पत्रोंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इनमें सभी लेख सारगर्भित मौलिक और ठोस सामग्रीसे परिपूर्ण हैं; साथ ही प्रत्येक अङ्ककी भविष्यवाणियाँ ६५ प्रतिशत ठीक मिली हैं। कई वर्षसे चलने वाले बड़े बड़े पत्रोंने जितनी सफलता और ख्याति प्राप्त नहीं की उतनी सफलता एवं सुख्याति 'श्रीस्वाध्याय' ने दो वर्षके स्वल्पसे समयमें प्राप्त करली; यह इसके सञ्चालकों एवं प्रेमी पाठकोंके लिए गौरवका विषय है और पत्रके लोकोपयोगी होनेका प्रत्यक्ष प्रमाण भी है। अब गताङ्कोंकी बहुत थोड़ी प्रतियाँ शेष हैं। जिन तीन अङ्कोंकी माँग बहुत अधिक है और प्रतियाँ बहुत थोड़ी नाममात्रकी शेष हैं उनका मूल्य तिगुणा कर दिया गया है। इन सब अङ्कोंका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है। इससे नवीन ग्राहकोंको पूरी फाइल या किसी विशेष अङ्कको मंगानेका निर्णय करनेमें सुविधा होगी।

प्रथम वर्षकी फाइल

१—'शरदङ्क' मूल्य १) रु०

इसका विशेष परिचय पृष्ठ ५ पर देखिये।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २) रु०

इस अङ्कमें मोक्षप्राप्तिका मर्म, राष्ट्रभाषा-मीमांसा, ब्रह्मार्पण, जीवन-रहस्य, धर्मको जाननेकी विधि, ग्रहण विवेचन (चन्द्रमा ग्रहण और राहु क्या वस्तु है? इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है? ग्रहणमें दान जपादि का विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है?) राष्ट्रियपर्व होली, हेमन्त, ज्वालामुखीमें वनौषधियाँ, आचार्य श्री अभिनवगुप्तपाद आदि कई लेख अत्यन्त गवेषणापूर्ण मननीय हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १।) रु०

इस अङ्कमें अपमान न करो, मोक्षप्राप्तिका मार्ग, धर्मनिर्णयमें क्योंका स्थान, अहिन्सा, ऊंचा आदर्श, सांसारिक बर्ताव, वसन्त, राष्ट्रियपर्व श्रीपरशुराम जयन्ती इत्यादि लेख अत्यन्त आकर्षक एवं पठनीय हैं। श्रीपरशुरामस्तोत्रका पद्यानुवाद भी इसमें है।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १) रु०

इस अङ्कमें राजाका आदर्श, भारतीयदर्शन और आत्मज्ञान, अनुपम-शान्ति-साधन, क्या कलियुग समाप्त हो रहा है? नागपञ्चमी, उपाकर्म श्रावणी रक्षाबन्धन, श्रीकृष्णजन्माष्टमी और उसका महत्त्व, श्राद्धविवेचन, श्रीदेवीनवरात्र और शक्ति-सञ्चय, विजयादशमी, विनाशकाल, विश्वशान्ति और ग्रह-शान्ति, ग्रीष्म, प्रावृट्, अनुभूत योग, वारोंका क्रम, ज्यौतिष और वेदकी एक वाक्यता, विराटनगर, पौराणिक ऐतिह्य-विवेचन और दुर्गा दुर्गतिनाशिनी इत्यादि कई लेख बड़े मार्मिक खोजपूर्ण एवं महत्त्व-मण्डित हैं। इन लेखोंकी भारतके बड़े बड़े धुरन्धर विद्वानों और पत्र पत्रिकाओंने मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ४।।) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल

१—'शरदङ्क' मूल्य ३) रु०

इस अङ्कमें राष्ट्रपति, आत्माऽनुभवके कुछ अंश, कीर्त्तनकी महत्ता, मानवजीवन एक पहेली है, पितृ-लोकका समय विभाग और श्राद्धरहस्य, दीपमालाका रहस्य, दीपमालिका विज्ञान, भारतीय ज्यौतिषप्रणाली, कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः, स्वाध्यायकी महिमा, शूद्रक-अग्निमित्र-इन्द्राणिगुप्त-विक्रमादित्य प्रथम, पौरा-णिक ऐतिह्यविवेचन, अङ्कूर, और ग्रहयोग प्रतियोग चमत्कार इत्यादि कई लेख अत्यन्त मननीय और उपादेय हैं, जो अध्ययनसे ही सम्बन्ध रखते हैं।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य १।) रु०

इस अङ्कमें भारतकी भारती कौनसी होगी ?, जीवनकी एक झांकी, भगवती श्रीसीता, बृहस्पति और ममता, भारतीय ज्यौतिष प्रणाली, कालाय तस्मै नमः, महायुद्ध शीघ्र समाप्त नहीं होगा, नौवर्ष पहलेकी भविष्यवाणी, श्रीमहाशिवरात्रि, श्रीरामनवमी, शिक्षा का भारतीयीकरण, हेमन्त, वसन्तोत्सव कैसे मनाया जाय ? वासन्ती (आषाढ़ी) नवसस्येष्टि होलिका, आर्य-जातिका जन्मस्थान इत्यादि लेख अत्यन्त उपयोगी और देखने तथा मनन करने योग्य हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १) रु०

इस अङ्कमें स्वत्व, जीवनकी एक झांकी, ब्राह्मण, अक्षयतृतीया, श्रीपरशुरामाष्टक, कालका गाल, आधुनिक क्रयविक्रयविज्ञान, क्या रोगोंका कारण रोगाणु हैं ?, श्रीमहावीरजीका लङ्का निरीक्षण इत्यादि लेख बहुत ही मार्मिक एवं अन्वेषणात्मक हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १) रु०

इस अङ्कमें युद्ध, शान्तिरस्तु, श्रीगणपति पूजन, नागपञ्चमी, श्रावणी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, देवीनवरात्र, भारतीय ज्यौतिषप्रणाली, काल, वर्तमान विश्वव्यापी संग्राम और ज्यौतिष, विषूचिका (हैजा), यास्क और पाणिनिका समय इत्यादि लेख सारगर्भित रोचक एवं अत्यन्त मनन योग्य हैं।

इस द्वितीय वर्षकी पूरी फाइल (चारों अङ्कों) का मूल्य ६) रु० है।

तृतीय वर्षके तीन अङ्क

१—'नववर्षाङ्क' मूल्य ४।।) रु०

यह पिछले सब अङ्कोंसे बड़ा, अत्यन्त उपादेय ठोस सामग्रीसे परिपूर्ण १२० पृष्ठका सचित्र अङ्क है।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य १)

इसमें युद्धका अन्त, वेदस्वरूपनिरूपण, हिन्दूपर्व, निद्राविज्ञान, स्वास्थ्यरक्षा आदि कई महत्वपूर्ण लेख हैं।

३—'वसन्ताङ्क' आपके हाथमें ही है।

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करनेवाला श्रीमहामायाका स्तोत्ररत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्ररत्न संसारमें अद्वितीय है।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्री परशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं ? उस पर किसका अधिकार होता है ? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण प्रकाशित करनेका प्रयत्न हो रहा है। मूल प्रथम संस्करण समाप्त है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह-संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य-जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचलसी मच गई और सैकड़ों प्रतियाँ हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं ? और हमें क्या करना चाहिए ? दर्शन किसे कहते हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहाँ होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली-भांति परिचित हो कर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्यसागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव-कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीव, सुललित स्वभाव-शुद्ध तथा प्रकृति-सिद्ध हो सकता है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछताएँगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें मार्ग-व्यय (दो आने) प्राप्त होने पर "श्रीस्वाध्याय" के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहलीमें छप कर, श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित